एशिया/प्रशांत क्षेत्रीय सहकारी प्रकाशन योजना

आओ, हँसें एक साथ

एशिया और प्रशांत क्षेत्र की
कहानियाँ, पहेलियाँ और कहावतें

अनुवाद
मोहिनी राव

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

यह पुस्तक हास्य-कथा, पहेलियां और कहावतो का संग्रह है, जो एशियाई सहयोगी प्रकाशन के अंतर्गत संयुक्त राष्ट्र शिक्षा संघ, विज्ञान और सांस्कृतिक संस्था (यूनेस्को) के सहयोग से प्रकाशित की जा रही है। इस पुस्तक में 53 हास्य-कथाएं, 54 पहेलियां और 23 कहावतें तथा संदर्भित चित्र प्रस्तुत किये गये हैं। इन्हें 18 देशों के सहयोग से संकलित किया गया है।

एशियाई सांस्कृतिक केन्द्र, यूनेस्को, तोक्यो के सहयोग से नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया द्वारा प्रकाशित।

प्रथम प्रकाशन 1988 (शक 1909)

मूल्यः रु. 15.00

Laughing Together *(Hindi)*

निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, ए-5 ग्रीन पार्क, नयी दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित एवं एलाइड इंटरप्राइसेज, फ्रैंडस इंडस्ट्रियल एरिया, शाहदरा, दिल्ली 110032 द्वारा मुद्रित।

विषय सूची

भाग्यशाली शिकारी

एक था शिकारी। अपने बेटे की सातवीं वर्षगांठ की दावत के लिए उसने सोचा, चलो शिकार करने चलें और कुछ बढ़िया चीज़ लाएं। लेकिन जब वह दीवार पर से बंदूक उतारने लगा तो वह खूंटी से फिसल गई और नीचे रखी पत्थर की ओखली पर गिरी। और अफसोस, उसकी नली ऐसे मुड़ गई—जैसे अंग्रेज़ी का अक्षर—'एल'

लड़का चीखा, "बापू, यह तो अपशकुन है। आज शिकार पर मत जाओ।"

"तुम पागल हो", बापू ने कहा। "यह तो अच्छा शकुन है। बंदूक ने ओखली को मारा, इसका मतलब है कि यह शिकार को भी मारेगी।"

शिकारी चल कर एक पहाड़ी झील के किनारे पहुंचा। अभी सवेरा ही था। जानते हो उसने क्या देखा? जंगली बत्तखें—पूरी तेरह! बारह पानी में छपाके लगा रहीं थीं और तेरहवीं पानी के किनारे चट्टान की बगल में मज़े से सो रही थी। "वाह, क्या किस्मत है!" शिकारी ने सोचा, और उसने अपनी टेढ़ी बंदूक से एक बत्तख की ओर निशाना साधा।

"धाँय!" बंदूक छूटी। क्योंकि उसकी नली टेढ़ी थी, इसलिए गोली टेढ़ी-मेढ़ी जाती हुई पानी में छपाके लगाती बारहों बत्तखों को जा लगी। फिर उस चट्टान पर लगी जिसके किनारे तेरहवीं बत्तख सोई पड़ी थी। चट्टान से लगकर जो वह उछली तो तेरहवीं बत्तख को लगी। वह सिर्फ घायल हो गई।

घायल बत्तख पानी में गिर गई और ज़ोर-ज़ोर से अपने पंख फड़फड़ाने लगी। शिकारी उसको पकड़ने के लिए पानी में उतरा और उसकी ओर जाने लगा। वह बत्तख तक मुश्किल से पहुंच पाया क्योंकि वह ढीला-ढाला सूती पतलून पहने था और घास के जूते। आखिरकार जब बत्तख के पास पहुंच कर उसने उसकी गर्दन पकड़ी तो उसने आखिरी बार ज़ोर से अपने पंख फड़फड़ाए। इतने में, छपाक! पानी से कोई चीज़ निकली और कूद कर किनारे झाड़ियों के पास जा गिरी। सोचो तो वह क्या चीज़ थी? वह एक बड़ी-सी शफरी (कार्प) मछली थी! इतनी बड़ी और इतनी स्वादिष्ट लगनेवाली शफरी

मछली शिकारी ने पहले कभी नहीं देखी थी।

"इसको तो पकड़ना ही होगा।" शिकारी ने सोचा और पानी से निकलने के लिए उसने पास के पेड़ की जड़ को सहारे के लिए पकड़ा। लेकिन उसने जिसे जड़ समझा था वह एक बहुत बड़े-से जंगली खरगोश की पिछली टांगें थीं। अपने को शिकारी के पंजों से छुड़ाने की कोशिश मे खरगोश ने अपने अगले पंजों से जमीन को खोद डाला। और उसके नीचे से निकले पच्चीस रतालू!

शिकारी झाड़ियों में घुसा मछली को उठाने लगा, तो क्या देखता है कि मछली चेड़ पक्षी (फेजेंट) के घोसले पर जा गिरी है। चिड़िया मरी पड़ी थी—मछली के गिरने से उसकी गर्दन टूट गई थी। शिकारी ने मरी हुई चिड़िया को उठाया तो उसके नीचे तेरह अंडे दबे मिले। एक भी टूटा नहीं था। शिकारी ने अंडों को निकालने के लिए संभाल कर सूखे पत्ते खिसकाए तो पत्तों के नीचे से ढेरों कुकुरमुत्ते निकले।

शिकारी ने खरगोश और चिड़िया को अपने दायें कंधे पर रखा और मछली और रतालुओं को बायें कंधे पर। बत्तखों को अपनी कमर के चारों ओर बांध लिया, अंडों को कमीज के अंदर और कुकुरमुत्तों को थैली में। फिर वह अपनी टेढ़ी बंदूक लेकर घर चला।

घर पहुंचते ही उसने अपने बूट और पैंट उतार दिए क्योंकि वे गीले थे और उनसे परेशानी हो रही थी। एक और आश्चर्य! उसके बूटों से झींगियां निकलीं इतनी कि उन्हें गिना नहीं जा सकता था। और उसकी सूती पतलून से तैंतीस जिंदा कूशियन मछलियां निकलीं! वे सारी जमीन पर फैल गई—नाचती कूदती।

अब तुम कल्पना कर सकते हो कि शिकारी के बेटे के सातवें जन्मदिन की दावत कितनी शानदार रही होगी! सभी अड़ोसी-पड़ोसी बुलाए गए और सब लोगों ने इतना खाया, इतना खाया कि पेट फटने की नौबत आ गई।

—जापान
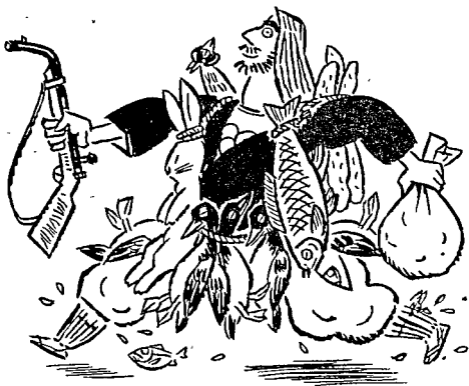
शेखचिल्ली

बहुत समय हुए एक सीधा-सादा बुद्धू आदमी था। नाम था शेखचिल्ली। उसके बेवकूफी से भरे लेकिन भोले कामों के कारण उसके दोस्त उसको पसंद करते थे। उसकी संगत उनको अच्छी लगती थी।

एक दिन जमींदार ने उसको बुलवा भेजा। यह जमींदार बेईमानी के लिए मशहूर था। जमींदार ने उससे कहा, "जाओ और गांव के सारे घरों की गिनती करो।" उसने बीस पैसे फ़ी घर देने का वायदा किया।

बेचारा शेखचिल्ली घंटों सड़कों और गलियों के चक्कर लगाता रहा और मकानों की गिनती करता रहा। बड़ी मेहनत की उसने। शाम को उसने जमींदार को मकानों की कुल संख्या बता दी और उसको पैसे दे दिए गए।

बाद में जब शेखचिल्ली के कुछ दोस्तों को उसका पता चला तो वह उसके पास आए। एक ने कहा, "बेवकूफ, तुमने जमींदार से हामी भरने के पहले हम लोगों से बात क्यों नहीं कर ली? जानते नहीं वह कितना बेईमान है?"

एक दूसरे दोस्त ने कहा, "उसने ज़रूर बेईमानी की होगी।" शेखचिल्ली ने बड़े विश्वास से कहा, "अरे नहीं, इस बार नहीं।" "बेईमानी नहीं की? तुमको कैसे पता?" एक दोस्त ने पूछा। "मुझको मालूम है, क्योंकि इस बार मैंने उसको बेवकूफ़ बनाया।" शेखचिल्ली अपने आप से बहुत खुश लग रहा था।

"सो कैसे?" उसके दोस्तों ने आश्चर्य से पूछा।

"मैनें उसको जितने मकान थे, उससे कम बताए।" शेखचिल्ली ने बड़े गर्व से कहा। "सच पूछो तो मैंने जितने गिने थे उसके आधे ही उसको बताए!"

—पाकिस्तान

नौ या दस

एक बार एक रेगिस्तान में एक आदमी दस ऊंटों को तालाब में पानी पिलाने ले जा रहा था। कुछ मील चल कर वह एक ऊंट पर बैठ गया और बाकी ऊँटों को गिनने लगा। पूरे नौ थे। वह घबरा कर उतर गया और दसवें ऊँट की खोज में वापस गया। जब ऊंट का कोई नामोनिशान नहीं दिखायी दिया तो उसने सोचा कि वह खो गया। ढूंढना बंद कर वह हैरान और दुखी वापस लौटा तो क्या देखता है कि पूरे के पूरे दस ऊंट खड़े हैं। उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। खुशी-खुशी वह एक ऊंट पर चढ़कर आगे बढ़ा। कुछ ही दूर जाने पर उसने सोचा कि चलो, एक बार फिर ऊटों की गिनती कर ली जाए। फिर नौ निकले! वह हैरान था कि माजरा क्या है! वह फिर खोए हुए ऊंट को ढूंढ़ने निकला। लेकिन वह नहीं मिला। मिलता कहां से? वह जल्दी-जल्दी वापस आया और जब फिर गिनती की तो उसको यह देखकर बड़ा ताज्जुब हुआ कि उसके दसों ऊंट मजे से धीरे-धीरे चले जा रहे हैं। उसने सोचा रेगिस्तान की गर्मी की वजह से कुछ गड़बड़ी हो रही है और सबसे पीछे वाले ऊंट पर सवार हो गया। फिर उसने अपने ऊंटों को तीसरी बार गिना। उसको समझ मे नहीं आया कि एक अभी भी क्यों कम है।

इसे शैतान की करामात समझ, उसे कोसता हुआ वह नीचे उतरा और फिर एक बार ऊंटों की गिनती की तो पूरे दस के दस थे!

उसने बुड़बुड़ा कर कहा, "अच्छा, दुष्ट शैतान। लो, मैं पैदल ही चलता हूं, जिससे मेरे सारे ऊंट सलामत रहें। ऊंट पर सवारी करके मै अपना एक ऊंट को क्यों खोऊं। लो, मैं पैदल ही चला।"

—ईरान

उन्होंने घर तो बदला, लेकिन...

एक वज़ीर के घर की दायीं ओर एक लोहार रहता था और बायीं ओर एक बढ़ई। दोनों दिन रात खटर-पटर करते रहते और वज़ीर की शांति भंग करते। जब उससे और बर्दाश्त नहीं हुआ तो वज़ीर ने दोनों को बुलाया और उनको घर बदलने को कहा।

एक दिन लोहार आया और बोला, "हुजूर, आप की आज्ञा के अनुसार मैं आज अपना घर बदल रहा हूं।"

कुछ देर बाद बढ़ई आया। उसने भी कहा, "हुजूर, मै भी अपना घर बदल रहा हूं।"

वज़ीर ने मन ही मन चैन की सांस ली। लेकिन ऊपर से इस बात पर बनावटी दुख प्रकट किया कि इतने अच्छे पड़ोसी चले जाएंगे। उसने उनको बढ़िया खाना खिलाकर विदा किया।

लेकिन हथौड़े और आरी चलाने की आवाज अभी भी बंद नहीं हुई। वज़ीर को आश्चर्य भी हुआ और गुस्सा भी आया। उसने अपने नौकरों को बुलाकर कहा, "पता लगाओ क्या बात है।"

नौकर यह समाचार लेकर लौटे कि बढ़ई और लोहार ने घर बदला ज़रूर था, लेकिन बढ़ई लोहार के घर में चला गया था और लोहार बढ़ई के घर मे! और दोनों मजे मे रात-दिन अपने हथौड़े और आरे चलाते रहे!

—कोरिया गणतंत्र

भोंदू राम ने अपने घर की मरम्मत की

एक छोटे-से गांव में एक पति-पत्नी रहते थे। पति को लोग पुकारते थे भोंदू राम। वह और लोगों से दूर, लकड़ी के एक छोटे-से घर में सुख से रहते थे। उनके घर की छत में बहुत से छेद हो गए थे और दीवारें सड़ रही थीं। भोंदू की पत्नी ने मकान की मरम्मत करने की सोची।

एक दिन उसने भोंदू राम से कहा, "आओ, हम घर की मरम्मत करें। ज़रा छत को देखो। चूती है। और दीवारें—उनमें छेद है।"

"बड़ा अच्छा विचार है।" भोंदू राम ने तुरंत कहा।

"मेरा ख्याल है तुम मरम्मत का काम करो।" स्त्री ने कहा।

"मैं? तुमने क्या कहा? मैं करूं?"

भोंदू को मानो सांप डस गया। वह घर की मरम्मत नहीं करना चाहता था। उसने तरह-तरह के बहाने बनाए। पहले तो उसने कहा कि उसके पास बहुत काम है। फिर कहा कि वह बहुत थका है। फिर तबियत खराब होने का बहाना बनाया।

'स्त्री ने कहा, "यह हमारा घर है न? तो फिर मरम्मत भी हमको ही करनी चाहिए न?"

तब उसके पति ने कहा, "असल में मैं करना नहीं चाहता, और मुझको यह काम आता भी नहीं।"

स्त्री ने अपना सिर हिलाया। उसने सोचा, "इसको कैसे मनाऊं? अगर यह राज़ी हो जाए तो हमारे कुछ पैसे बचेंगे।"

अचानक उसको एक तरकीब सूझी। उसने एक घुमावदार सड़क खोदी जो उसके बाग से शुरू होती थी और झाड़ियों में से होती हुई टेढ़े-मेढ़े घूमती उसके बाग तक लौट आती थी।

कुछ दिनों बाद भोंदू की स्त्री ने अपने पति से कहा, "हमारे पास खाने को बहुत कम बचा है। तुम जाकर कोई काम क्यों नहीं ढूंढते? तुम काम करोगे तो घर में कुछ पैसे

आएंगें। पैसे होंगे तो हम अपनी ज़रूरत की चीजें खरीद सकेंगे।"

भोंदूराम ने कहा, "काम कहां मिलेगा?" स्त्री ने कहा, "मैंने सुना है कि इस सड़क के दूसरे छोर पर जो मकान है उसके मालिक काम के लिए किसी की तलाश कर रहे हैं। वहां जा कर पूछो। किस्मत होगी तो काम मिल जाएगा।"

भोंदूराम उस सडक की दूसरी छोर वाला मकान ढूंढने चला। उस घुमावदार रास्ते पर झाड़ियों में से होता हुआ, कुछ दूर चल कर वह सड़क के दूसरे छोर पर पहुंचा। वहां उसने छोटा-सा लकड़ी का घर देखा।

"कोई है?" उसने आवाज़ दी।

एक औरत बाहर आई।

"क्या चाहिए?" उसने पूछा।

भोंदूराम को अपनी आंखों पर यकीन नहीं हुआ। उसने सोचा, "यह औरत तो मेरी पत्नी से बहुत मिलती-जुलती है। घर भी मेरे घर जैसा लगता है। नहीं... नहीं मेरी भूल होगी।"

औरत ने उससे पूछा कि उसे क्या चाहिए। भोंदू ने बताया कि उसको काम की तलाश है। औरत ने पूछा, "मेरे घर की मरम्मत करोगे? छत बदलनी होगी। दीवारें भी। घर के मालिक सारा सामान देंगे। तुम बढ़ई होगे।"

भोंदू उस घर में काम करने को राज़ी हो गया जो बिल्कुल उसके घर जैसा लगता था। दूसरे दिन उसने घर की मरम्मत शुरू कर दी। उसने सड़ी दीवारें गिरायीं। छेदोंवाली छत भी गिरा दी। नई दीवारें लगाई और नई छत भी। काम करते समय उसकी खूब अच्छी देखभाल होती थी। जो औरत उसकी पत्नी जैसी लगती थी, वह उसके खाने-पीने का पूरा ख्याल रखती थी। शाम को भोंदूराम घर गया। यह रोज़ होता था। हफ़्ते के बाद काम खत्म हो गया। उसने उस औरत के घर की पूरी मरम्मत कर दी थी जो रास्ते के उस छोर पर रहती थी। पुरानी छत की जगह नई छत डाल दी थी। सड़ी हुई दीवारों को भी बदल डाला था। औरत ने काफी पैसे दिए उसको। भोंदूराम पैसे लेकर, अपने घर गया। वह बहुत खुश था। झाड़ियों में से गुजरती हुई घुमावदार सड़क पर वह गीत गुनगुनाता जा रहा था। लेकिन अपने घर के सामने पहुंचा तो ठिठक कर रुक गया। "सुनो, कहां हो?" उसने पत्नी को पुकारा।

उसकी पत्नी बाहर आई तो खुशी से उसका चेहरा चमक रहा था। अपने पति से उसने

पैसे ले लिए।

उसने खुश-खुश कहा, "धन्यवाद, मेरे प्रिय पति। अब हम खाने की अच्छी-अच्छी चीज़े खरीद सकेंगे।"

भोंदू चकराया हुआ था। वह आंखें फाड़े अपने घर को घूर रहा था। उसने आश्चर्य से पूछा, "हमारे घर की मरम्मत हो गई?"

उसकी पत्नी ने मुस्कराते हुए कहा, "हां, हां।"

भोंदू ने पूछा, "किसने किया?"

पत्नी ने हंसते-हंसते कहा, "कौन था वह...? हां-हां... उसका नाम भोंदूराम है।"

भोंदू ने कहा, "नहीं, नहीं, यह असंभव है। मैंने तो सड़क के उस छोर वाले मकान की मरम्मत की थी।"

तब पत्नी ने उसको सच्चा किस्सा सुनाया।

अब भोंदू अपने माथे पर हाथ मार कर बोला, "ओह तो मैं सारे वक्त अपने ही मकान की मरम्मत कर रहा था?"

—मलेशिया

आलसी जुआन

इमली के घने पेड़ के नीचे आलसी जुआन लेटा था। चेहरे के उपर हैट खींच कर वह सारा दिन सोता रहा था। अचानक उसको मां की आवाज़ सुनाई दी।

"जुआन, कहां हो? फिर सो गए? तुम्हारे बराबर आलसी लड़का मैंने नहीं देखा। तुम सारा दिन सोते हो जबकि बेचारा तुम्हारा बाप खेत में कड़ी मेहनत करता है। क्या करूं मैं तुम्हारा?"

जम्हाइयां लेता हुआ जुआन उठा, आंखें मलीं, और आलसभरी अंगड़ाई ली। मां दरवाजे पर मिली। उसने कहा, "बाजार जा कर नमक और पांच जिंदा केकड़े खरीद लाओ। खबरदार, रास्ते में खेलने मत लगना। और जल्दी घर लौटना।"

पैसे लेकर जुआन चला। बाजार में उसने एक बूढ़ी औरत को केकड़े बेचते देखा। वह एक लंबी छड़ी लेकर केकड़ों को चुभोने लगा।

औरत चिल्लायी, "ऐ लड़के, मेरे केकड़ों को क्या कर रहा है?"

"मैं देख रहा था कि वे जिंदा हैं या नहीं। बड़े-बड़े-रेंगनेवाले पांच केकड़े दे दो।" जुआन बोला।

केकड़ों को बंधवा कर वह नमक वाले के पास पहुंचा। "तुम्हारा नमक सचमुच नमकीन है भाई?" उसने पूछा। "अगर सचमुच नमकीन है तो पचास सेंटावो* का दे दो।"

केकड़े और नमक का थैला लेकर जुआन घर चला। सीटी बजाता हुआ वह नदी किनारे पहुंचा तो किसी ने उसको पुकारा, "जुआन, आओ खेलो हमारे साथ। कितना सुहावना दिन है। आओ मज़े करें।"

जुआन ने केकड़े और नमक का थैला दिखा कर कहा, "मां को इनकी जरूरत है।... लेकिन, ठहरो.. हां, एक तरकीब है।" केकड़ों का बंधन खोल कर उसने उनसे कहा, "मां तुम्हारा इंतजार कर रही है, घर जाओ। इस सड़क पर सीधे चलते जाओ, इमली के

* फिलिपीन्स का सिक्का
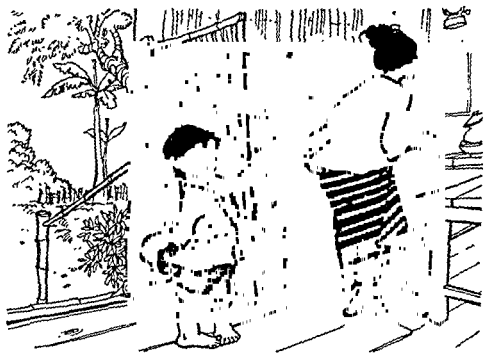
पेड़ से बायें मुड़ जाना। सामने रसोईघर का दरवाजा खुला दिखाई देगा। बस वहीं मां होगी। जाओ, जाओ।" फिर नमक के लिए किसी सुरक्षित जगह के लिए उसने चारों ओर देखा। अंत में उसने नमक के थैले को नदी में रख दिया जहां पानी बहुत कम था। "बस यह ठीक है। यहां से कोई नहीं ले जा सकता।" उसने खुश होकर सोचा।

देखते ही देखते जुआन लड़कों में जा मिला। वह जी भर कर खेलता रहा और शोर मचाता रहा। जब सूरज डूबने लगा तो उसको घर लौटने की याद आई।

जुआन की मां इमली के पेड़ के नीचे खड़ी अपने आलसी बेटे का इंतजार कर रही थी। जुआन को देखकर उसने चिल्लाकर पूछा, "क्या जवाब है तुम्हारे पास?"

जुआन ने कहा, "नमक कोई चुरा ले गया!"

गुस्से से मां फिर चिल्लाई, "चुरा लिया? क्या मतलब?"

"मैंने तो उसको बहुत सुरक्षित जगह रखा था, पानी के अंदर। जब मैं उसको लेने गया तो वह वहां नहीं था।"

"और केकड़े?"

"वह घर नहीं आए? मैंने घर का रास्ता उनको साफ-साफ समझा दिया था। और वे काफी अकलमंद लगते थे। और हां, जिंदा थे, तो चल तो सकते ही थे।" जुआन ने सफाई दी।

जुआन की मां गुस्से से कांप रही थी। उसके मुंह से एक शब्द भी नहीं निकला। वह मुड़कर जल्दी-जल्दी रसोई में चली गई और जोर से दरवाजा बंद कर लिया।

जुआन बाहर खड़ा सोचता रहा कि उससे गलती क्या हुई?

—फिलीपीन्स

टिप टिपवा

एक शेर शिकार की खोज में भटकता-भटकता एक खेत में आ निकला और बारिश तूफान में फंस गया। वह बारिश से बचाव के लिए नैनी बुढ़िया की झोपड़ी की ओट में दुबक गया। नैनी एक बदमिज़ाज बुढ़िया थी जो गांव के बाहर रहती थी। आज तो उसका मिज़ाज बहुत खराब था क्योंकि उसकी छत टपक रही थी।

वह अपने टीन के बक्से और खाट को कभी इधर सरकाती, कभी उधर। "परेशान कर दिया इस टिप टिपवा ने।" उसने बुड़बुड़ा कर कहा। "क्या इससे कोई बचाव नहीं है ?" उसने टीन का बक्सा ज़ोर से खिसकाया तो वह खाट से टकराया। फिर उसने लकड़ी का एक छोटा-सा बक्स निकाला और उसे खींच कर दीवार के साथ लगा दिया। दीवार हिल गई।

शेर बाहर दीवार के साथ दुबका हुआ था। दीवार का हिलना और नैनी का चिल्लाना !

"यह टिप-टिप मार डालेगा मुझको !"

वह घबरा गया, और हैरान भी हुआ। "यह कोई भयानक जीव होगा, यह टिपटिपवा ! आवाज़ कितनी अजीब है ! कौन है यह टिप टिपवा ?"

उसी वक्त भोला कुम्हार उधर से आ निकला। उसका भी मिज़ाज बिगड़ा हुआ था, क्योंकि उसका गधा कहीं भाग गया था। अचानक उसने किसी जानवर को झोपड़ी से सटा बैठा देखा।

"यह रहा !" वह चिल्लाया और शेर के पास जाकर उसको एक लात मारी। फिर उसने उसके कान खींच कर कहा, "चुपचाप चल, नहीं तो तेरी हड्डियां तोड़ दूंगा।"

शेर बहुत डर गया। उसने सोचा, "यह होगा वह भयंकर टिप टिपवा।" वह गुर्राया तक नहीं। चुपचाप भोला के पीछे हो लिया। अपनी झोपड़ी तक पहुंच कर भोला ने शेर को बाहर ही मोटी रस्सी से बांध दिया और झपट कर बोला, "अब सारी रात बारिश में बैठा रह।"

दूसरे दिन तड़के ही सुबह भोला की स्त्री उठी। झोपड़ी से बाहर निकल कर उसने शेर को देखा तो चीख पड़ी। भोला दौड़ा आया। शेर को देखकर उसे काठ मार गया। फिर मुड़ कर भागा। उसकी स्त्री भी चीखती-चिल्लाती उसके पीछे भागी। उन्होंने अपनी झोपड़ी का दरवाज़ा बंद कर दिया और बक्से और चारपाइयां उसके साथ लगा दीं।

तब तक गांव के और लोग भी उठ गए थे। उन्होंने गुर्राते शेर को भोलानाथ की झोपड़ी के बाहर बंधा देखा तो हैरान होकर औरों को बताने भागे।

सहमे हुए शेर ने धीरे-धीरे रस्सी चबा डाली, और छुड़ाकर जंगल में भाग गया।

कुछ देर बाद भोला ने दीवार के एक छेद से झांक कर देखा। उसने फुसफुसा कर अपनी स्त्री से कहा, "शेर चला गया!" उसकी जान में जान आई। कांपते हुए उसने दरवाज़ा खोला।

उस दिन बहुत से लोग भोलानाथ से मिलने आए।

"तुमने सचमुच उसके लात मारी थी?" बढ़ई ने पूछा।

अब तक भोला का डर दूर हो चुका था। हंस कर उसने डींग मारी, "अरे, मैंने उसको सिर्फ लात ही नहीं लगायी, तमाचा मारा और उसके कान भी खींचे।"

सारे गांव में खबर फैल गई। फैलते-फैलते राजा के कानों तक पहुंची। उसने कुम्हार को बुलावा भेजा। बोला, "मैंने ऐसी बहादुरी कभी नहीं सुनी। तुम्हारे जैसे आदमियों की फौज में ज़रूरत है।"

एक शाम भरे दरबार में एक सिपाही दौड़ा आया। बोला, "पड़ौसी राजा ने हमला कर दिया है। वह अस्सी हज़ार सिपाहियों को लेकर हमारी सीमा पर पहुंच गया है।"

राजा ने भोलानाथ को बुलाया। "अब तुम्हारी बहादुरी साबित करने का मौका आ गया है। तुमको मैं सेनापति नियुक्त करता हूं।"

भोलानाथ की तो सिट्टी-पिट्टी गुम! हकलाता हुआ बोला, "मैं पूरी कोशिश करूंगा, अन्नदाता!"

रात को चिंता से अधमरे भोलानाथ ने स्त्री से कहा, "मैं तो घोड़े पर चढ़ना भी नहीं जानता। अब क्या करूं?"

स्त्री ने कहा, "चिंता मत करो। मैं तुमको घोड़े से बांध दूंगी। उसके बाद क्या होता है यह ईश्वर की इच्छा।"

दूसरे दिन सुबह एक दूत आया बहुत शानदार काले घोड़े के साथ। उसने कहा, "यह

घोड़ा खुद महाराज का है। उन्होंने आपके लिए भेजा है लड़ाई में जाने के लिए।"

भोलानाथ मुंह लटकाए अपनी स्त्री के साथ घर से बाहर निकला। चार नौकरों ने उसको घोड़े पर बिठाया। फिर उसकी बीवी ने उसको घोड़े के साथ कस कर बांध दिया। रस्सी का एक सिरा उसने घोड़े की पूंछ के साथ बांध दिया।

घोड़े को अपने बदन पर रस्सी अच्छी नहीं लगी। वह अचानक पिछली टांगों पर खड़ा हो गया फिर छलांग लगाकर हवा की तरह सरपट दौड़ा। भोलानाथ अपनी जान मुट्ठी में लिए उसकी पीठ से चिपका बैठा रहा।

अचानक भोलानाथ ने देखा कि घोड़ा दुश्मनों के खेमों की तरफ भाग रहा है।

"नहीं, नहीं।" भोला चिल्लाया। उसने बरगद का एक पेड़ देखा जिसकी जड़े नीचे लटक रही थीं। घोड़ा उसके नीचे पहुंचा ही था कि भोलानाथ ने लपक कर एक जड़ थाम ली। उसने सोचा था कि इस तरह वह अपने को खींचकर छुड़ा लेगा, लेकिन घोड़ा इतनी तेज दौड़ रहा था कि जड़ टूट कर भोला के हाथों में आ गई। घोड़ा दौड़ता रहा और जड़

उसके हाथ में ही फड़फड़ाती रही।

"मदद ! मदद करो !" भोला चिल्लाया और लोगों का ध्यान अपनी ओर खींचने के लिए जड़ को हिलाने लगा।

घोड़ा दौड़ता-दौड़ता सीधे वहां पहुंचा, जहां शत्रुओं का डेरा था। शत्रु के सिपाहियों ने देखा कि एक जंगली-सा आदमी, बाल और कपड़े फड़फड़ाता, चारों ओर रस्सियां बांधे, भयंकर काले जंगी घोड़े पर सवार, जड़ें हिलाता, चिल्लाता, तूफान की तरह बढ़ा आ रहा है।

एक सिपाही चिल्लाया, "यह हरावल (सेना का आगे चलने वाला दस्ता) का सिपाही है।" "इस राजा के पास राक्षसों की सेना है," दूसरा चिल्लाया। तीसरे ने कहा, "भागो-भागो !" औरों ने भी कहा, "भागो-भागो" और सारी सेना जान बचा कर भाग खड़ी हुई।

भोलानाथ का घोड़ा दुश्मनों के डेरे के बीचोंबीच पहुंच गया। वह रस्सी खुल गई थी जिससे वह बंधा था, और वह घोड़े से नीचे गिर पड़ा। वह देखकर हैरान रह गया कि शत्रुओं का पूरा डेरा खाली पड़ा है। वह धीरे-धीरे कराहते हुए उठा और घोड़े को वापस घर की ओर ले चला।

इतने में राजा की सेना भी चल पड़ी थी। उसने रास्ते में अपने सेनापति को थकी-थकी चाल से घोड़े के साथ आते देखा।

भोला ने बताया, "दुश्मन चले गए।" सिपाही अपनी आंखों से देखने दुश्मनों के खेमों में पहुंचे तो उसे बिल्कुल खाली पाया। विजयी सेना शहर वापस गई और राजा को सब-कुछ बताया।

"अकेले ही सारी फौज को भगा दिया?" खुशी से उछल कर राजा ने कहा। "कमाल का आदमी है!"

और आज भी लोग उस बहादुर कुम्हार की कहानी सुनाते हैं जिसने शेर को पकड़ कर बांध रखा था, और शत्रुओं की पूरी फौज को अकेले ही उखाड़ दिया था।

—भारत

फैलाव और सिकुड़ाव

"फैलाव और सिकुड़न का सिद्धांत समझाओ", शिक्षक ने एक विद्यार्थी से पूछा।

"कोई चीज़ गरमी से फैलती है और ठंडी होने पर सिकुड़ती है।"

"अच्छा, तभी गर्मियों में छुट्टी लम्बी होती हैं और जाड़े में छोटी।" एक दूसरे विद्यार्थी ने कहा।

—चीन
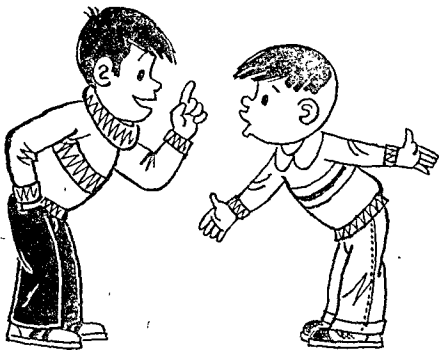
ज्यादा चालाक कौन था?

क्ले और पिआ मंदिर में रहनेवाले लड़के थे। एक दिन क्ले की मां उससे मिलने आई और उसको जेब खर्च के लिए पांच भाट* दे गई। क्ले ने बहुत सोचा कि उसे कहां रखा जाए। अंत में उसने उसे जमीन में गाड़ देने की सोची। उसने पैसे गाड़ दिए और उस जगह पर निशानी के लिए एक नोटिस लिख कर लगा दिया, "यह वह जगह नहीं है जहां पांच भाट गड़े हुए हैं।"

* थाइलैंड का सिक्का

काम से निबट कर वह सैर करने निकला। इतने में पिआ उधर से निकला तो उसको नोटिस देखकर आश्चर्य हुआ। उसने जमीन खोदकर पैसे निकाले और लेकर चलता बना। लेकिन क्योंकि वह दिखाना था कि उसको भी लिखना आता है, उसने चलने के पहले क्ले की नोटिस पर जो लिखा था उसे मिटा कर लिख दिया, "पैसे पिआ ने नहीं लिए।"

कुछ देर सैर करने के बाद क्ले को अपने पैसे की चिंता हुई। वह उस जगह वापस गया जहां पैसे गाड़े थे। जमीन खोदी, लेकिन पैसा नदारद! परेशान क्ले रोता हुआ पुजारी के पास गया और उसको बताया। पुजारी ने पूछा, "तुमने पैसे गाड़ने के बाद वहां कोई निशान बनाया था?" क्ले ने बताया कि उसने पैसे गाड़ने के बाद वहां एक नोटिस लगा दिया था जिसमें लिखा था, 'यह वह जगह नहीं है जहां पांच भाट गड़े हैं।' किसी ने पैसे निकाल लिए और उस नोटिस में जो लिखा था उसको मिटा कर लिख दिया है, 'पिआ ने पैसे नहीं निकाले।'

पुजारी को हंसी आई। वह तुरंत जान गए कि पैसे किसने निकाले हैं। उन्होंने पिआ को बुलाकर उससे फौरन क्ले को पैसे वापस करने को कहा। फिर बोले, "तुम सिर्फ चोर नहीं हो, बेवकूफ चोर हो।"

—थाइलैंड

गुरुत्वाकर्षण

एक शराबखाने में उसके दो पुराने सदस्य सबसे ठंडी जगह के बारे में बात कर रहे थे।

एक ने कहा, "मैंने सब से ठंडी जगह जो देखी वह मनारो पर थी। हम बाहर गोदाम की मरम्मत कर रहे थे। बाहर घना कोहरा था। काम खत्म कर के गोदाम की दीवार पर बैठकर हम सिगरेट पीने लगे। तुम यकीन नहीं करोगे यह बिल्कुल सच है कोहरा
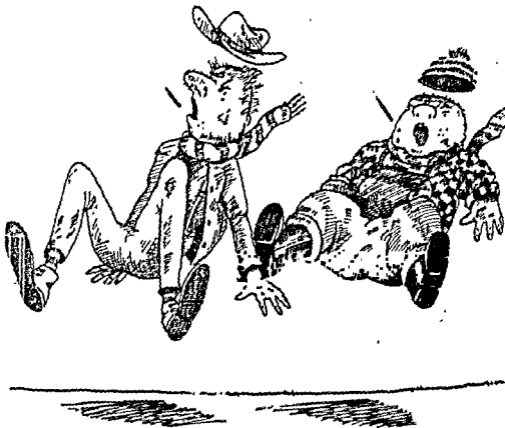
अचानक छूट गया। इतने अचानक कि हम पीठ के बल पीछे गिर पड़े। वह दीवार जिस पर हम थे, कोहरे की दीवार थी।"

उसके साथी ने कहा, "मैं बताता हूँ कि ओलिम्पो के उस पार क्या हुआ। मैं पहाड़ी के एक ओर भेड़ों के झुंड को लिए जा रहा था कि अचानक एक भेड़ फिसल कर बर्फ से ढकी एक चट्टान पर गिर पड़ी और हवा में उड़ती नीचे खाई की तरफ बढ़ी। मैंने नीचे की ओर देखा तो अपनी आँखों पर विश्वास नहीं कर सका भेड़ नीचे नहीं गिरी। ठंड से बीच में ही जम गई। इतनी ज्यादा ठंड थी।"

दूसरे ने कहा, "इस पर तो मैं विश्वास नहीं कर सकता। गुरुत्वाकर्षण शक्ति ने उस भेड़ को नीचे धरती की ओर खींचा होगा।"

उसके साथी ने कहा, "कहाँ की गुरुत्वाकर्षण शक्ति। ठंड में वह भी जम गई थी।"

—आस्ट्रेलिया

पहेलियां

(उत्तर पृष्ठ 38 पर)

1. एक चतुर कारीगर
   बनाता बिना ईंटों के घर
   बिना खिड़की की सफेद दीवारें
   उनको तोड़ दो तो बन जाएं कपड़े।

—चीन

2. क्या है वह निगलें उसको तो जिंदा रह पायें
   लेकिन वह हमें निगल ले, तो हम मर जाएं।

—थाइलैंड

3. पेड़ बहुत नीचा है, उस पर चढ़ा नहीं जा सकता।
   उसमें तलवार हैं, लेकिन वह काट नहीं सकती
   उसकी सौ नाकें हैं, लेकिन वह सूंघ नहीं सकती
   उसके पास बल्ला है, जिससे खेला नहीं जा सकता।

—मलेशिया

4. बड़े जीव उसमें घुस सकते हैं
   लेकिन छोटे जीव कभी नहीं।

—जापान

5. वह क्या है जो, ज्यों-ज्यों अंधेरा बढ़ता है,
   ज्यादा अच्छा दिखाई देता है।

—कोरिया गणतंत्र

6. जब वह छोटी थी तो लहंगा पहनती थी,
   बड़ी हुई तो नंगी हो गई।

—फ़िलीपीन्स

7. मील के पत्थर नहीं है
सिर्फ बारह गांवों की कतार है
दो आदमी हैं—एक दुबला, एक मोटा
वे दोनों चक्कर काटते रहते हैं।
जब दुबला आदमी बारह पर पहुंचता है
तो मोटा आदमी एक मील पूरा कर लेता है।
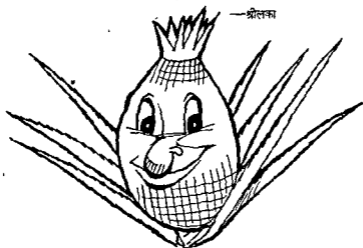
—श्रीलंका

8. जो फूल पहाड़ के ऊपर खिलता है,
जो फूल हमारे सो जाने के बाद खिलता है।

—श्रीलंका

9. वह कौन-सी वस्तु है जो, सूखे
कपड़े उतार कर गीला पहनती है?

—कोरिया

10. सात समुद्र के पानी के नीचे वह जन्मा।
उसके सिर नहीं हैं, सिर्फ धड़ है
आंखें ऊपर हैं, लेकिन धरती पर खाना
देख सकता है।

—श्रीलंका

11. योकोमो ने तकिए के नीचे शक्कर क्यों रखी?

—पापुआ न्यू गिनी

होशियार

"सड़क पर गाड़ियों से होशियार रहना!
नाले में गिर मत जाना!"

"ओह, मां मैं तो सिर्फ दूकान तक जा रहा हूं तुम्हारे लिए डबलरोटी खरीदने। तुम तो ऐसे कह रही हो कि पड़ोसी समझेंगे मैं लंदन जा रहा हूं। तुम तो जानती हो, हमारे मोहल्ले की सड़कों पर बहुत कम गाड़ियां चलती हैं, और नाले इतने बड़े नहीं हैं कि मैं उसमें गिर जाऊं।"

शेन की मां ने ठंडी सांस ली और हाथ हिला कर उसको विदा किया। जब वह साइकिल पर फाटक से बाहर निकला तो उसने फिर पुकारा, "मोटरों से संभल कर! होशियार रहना!"

सिर हिलाकर शेन घरों की कतारों के सामने से निकला, बाईं तरफ पीछेवाली गली में मुड़ा, और फिर दायें हाथ को मोहल्ले के तंदूर वाले की तरफ। उसने पहले तंदूर वाले लड़के से बहस की कि रोटी तो दिन पर दिन छोटी होती जा रही है, जबकि वह दाम दस सेंट ज्यादा मांग रहा है। उसके बाद उसने एक डबलरोटी खरीदी।

शेन दूकान से बाहर निकला तो बहुत नाराज़ था। वह इतना नाराज था कि उसने यह भी नहीं देखा कि एक वैन आकर रोटीवाली दूकान के सामने रुकी। दो आदमी उसमें से उतरे और उन्होंने उसको धक्का देकर वापस दूकान के अंदर कर दिया। एक ने पिस्तौल दिखाई।

उसने गुर्राकर कहा, "अगर अपने सिर के आर-पार छेद नहीं चाहते तो मुंह बंद रखो।"

दूसरा आदमी दौड़कर दूकान के अंदर गया और तंदूरवाले लड़के की ठोड़ी के नीचे पिस्तौल रख दी। डर से लड़के का चेहरा उस रोटी के टुकड़े की तरह सफेद हो गया जिसे वह काट रहा था। उसके घुटने कांपने लगे, उसके दांत किटकिटाने लगे।

(पृष्ठ 36-37 के उत्तर)
1. रेशम का कीड़ा 2. पानी 3. अमलतास 4 मसहरी 5. ताला 6. बैंगन 7. घड़ी 8. चन्द्रमा, 9. कपड़े सुखाने की रस्सी 10 केकड़ा, 11. क्योंकि वह मीठे सपने देखना चाहता था।
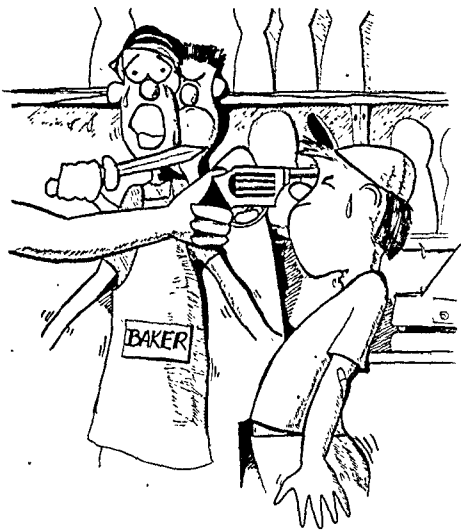
"तिजौरी की चाबी दो, वर्ना इस कान से उस कान तक तुम्हारा गला चीर कर रख दूंगा।"

तंदूरवाला लड़का चाबी निकालने की कोशिश कर रहा था तो दूसरे आदमी ने शेन को धक्का देकर दूकान के काउंटर के साथ लगा कर खड़ा कर दिया। लड़के का हाथ इतना कांप रहा था कि चाबी उसके हाथ से छूट कर शेन के पैरों के पास गिर गई।

इतने में तंदूरवाला चिल्लाया, "ये ! यह क्या हो रहा है ! कौन हो तुम लोग ?" वह अभी-अभी पीछे वाले कमरे से दूकान में आया था।

धांय ! बंदूक चली ! उस आदमी ने बंदूक के घोड़े को दबा दिया था ! गोली शेन के पांव के पास गिरी।

शेन और तंदूरवाला लड़का डर से उछल पड़े।

तंदूरवाला पीछे वाले कमरे में भाग गया और ज़ोर से दरवाजा बंद कर लिया।

तंदूरवाला और उसका साथी दूकान के बाहर भागे, वैन में कूदे, शेन की साइकिल को टक्कर मारकर उसे गिराया, और बिजली की तेजी से हवा हो गए।

शेन मुंह फाड़े देखता रहा। उसने देखा कि वैन सड़क पर भागा जा रहा है और मोड़ पर जाकर आंखों से ओझल हो गया। शेन ने झुककर अपनी डबलरोटी उठाई, मुड़ा और दुकान से बाहर हो गया। अब वह एक मिनट भी और ज्यादा वहां रुकने को तैयार नहीं था। ऐसा उसके साथ पहले कभी नहीं हुआ था। उसकी मां ने गाड़ियों से और नाली से बचने को सावधान किया था, उसने कहा था साइकिल से गिर मत पड़ना। लेकिन यह तो कुछ और ही था !

वह अपनी साइकिल तक दौड़ा और जब उसका पिचका टायर देखा तो गुस्से से चीख पड़ा। वैन उसके ऊपर से निकल गया था। अब वह अपनी मां को क्या बताएगा ? उसको साइकिल उठाकर ले आते देखेगी तो उसकी जान निकल जाएगी।

पांच सेकेंड तो उसकी मां के मुंह से आवाज़ ही नहीं निकली। तब वह घबराई आवाज में बोली, "ओह, शेन ! तुम किसी गाड़ी से टकरा गए ! तुम साइकिल से गिर पड़े ! तुम नाली मे गिर पड़े। तुम...।"

"मां... चुप भी रहो, मां... मुझको समझाने दो !... नहीं... नहीं... कुछ मत बोलो। मैं बहुत सावधान था। मोटरों से संभल कर गया, अपना बहुत बचाव किया.... लेकिन आखिर में तंदूरवाली दूकान में फंस गया।"

उसकी मां रोने लगी, "हाय मेरा बेटा, मेरा बेचारा शेन, हाय...।"

गंभीर चेहरे से शेन ने रोटी वाला हाथ बढ़ाया।

मां ने रोटी ले ली। उसकी एक उंगली रोटी में बने एक छेद में घुस गई। "अरे यह क्या है ?" उसने चौंककर पूछा और रोटी की ओर घूरकर देखा। बंदूक की गोली से बना छेद ! जब बंदूक गलती से छूट गई तो गोली रोटी में लग गई थी।

"यह बंदूक की गोली का छेद है। बंदूक वाला आदमी...।"

लेकिन इसके पहले कि शेन अपनी बात खत्म करता, उसकी मां बेहोश हो गई।

"मां... मां... तुमने मेरी पूरी बात नहीं सुनी।" वह एकदम रुक गया और अपनी बेहोश मां को आंखें फाड़े देखता रहा।

"ओह, भगवान! अब मैं क्या करूं?" शेन घबराया।

शेन ने मां के हाथों से डबलरोटी निकाल कर उसके सिर के नीचे तकिए की तरह रख दिया। फिर अपनी नानी को बुलाने दौड़ा। उनको मालूम होगा कि इस हालत में क्या करना चाहिए।

शेन फाटक की तरफ भागा। इतने में कुछ पड़ोसिनें आ गई।

"क्या हुआ, शेन?"

"तुम्हारी मां को क्या हुआ?"
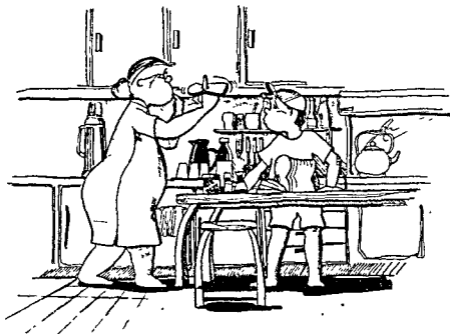
एक औरत ने मां को घर से बाहर बरसाती में पड़े देखा तो घबरा कर पूछा।

"ओह... बीवी सलीमा... कृपा कर के मां के पास थोड़ी देर रहिए। मैं अपनी नानी को बुलाने जा रहा हूं। अपनी मौसियों को भी बुला लाऊंगा।"

"हां, हां, ठीक है, बेटे। लेकिन हुआ क्या?"

"बंदूक की गोली लग गई है। छेद हो गया है। बंदूक छूट गई। बंदूकवाला आदमी भाग गया। उसकी गाड़ी मेरी साईकिल के ऊपर से निकल गई। कृपा कर के मां के पास रहिए। मैं जाता हूं अपनी मौसियों को बुलाने।"

दोनों पड़ोसिनें एक दूसरे की ओर देखती रह गई। दूसरे पड़ोसी भी आ गए। एक पड़ोसिन ने बढ़ती भीड़ को देखा और डरी हुई आवाज में बोल पड़ी, "उसकी मां के सिर में गोली लगी है, छेद हो गया है।"

औरतें चौंक पड़ीं!

मैडम सलीमा ने रोती-सी आवाज में कहा, "बंदूक लिए एक आदमी आया, उसने गोली चला दी।" "उसने शेन की साइकिल ही कुचल दी।" दूसरी पड़ोसिन ने रोते हुए कहा।

पड़ोसिन बाला ने चिंता भरे स्वर में पूछा, "अब हमें क्या करना चाहिए?"

"पुलिस को बुलाओ। एम्बुलेंस के लिए फोन करो। शेन के पिता को फोन करो।" शेन की मां बोल पड़ी।

कई आवाज़ें आईं, "क्या हुआ..." "मैं कहां हूं?..." शेन की मां बोल पड़ी।

पहले तो पड़ोसी चौंक पड़े। फिर शेन की मां के ऊपर झुक गए।

"हिलना मत! बिल्कुल नहीं। तुम्हारे सिर में गोली लगी है— छेद हो गया है।" किसी ने कहा।

"श्रीमती लिन पुलिस को फोन करने गई है।"

"एमबुलेंस आ रही है।"

"संभल कर! बिल्कुल बिना हिले-डुले लेटी रहो।" पड़ोसियों ने सलाह दी।

"पुलिस की कोई जरूरत नहीं है। एमबुलेंस नहीं चाहिए मुझको! गोली मेरे सिर में नहीं लगी, डबलरोटी में लगी है। छेद डबलरोटी में है।" शेन की मां ने जोर से कहा।

उसने उन हाथों को झटक दिया जो उसको थामे हुए थे और खड़ी हो गई। श्रीमती चेन, बीवी सलीमा, बाला, श्रीमती लिन और सारे पड़ोसी भौचक्के रह गए। एक ने रोटी

उठाकर देखा। सचमुच, उसके ठीक बीच में गोली का छेद था—आर-पार। सचमुच की गोली!

"लेकिन डबलरोटी को किसने गोली मारी?"

"डबलरोटी को क्यों गोली मारी?"

इतने में शेन आ पहुंचा! "ओह मां... ठीक हो तुम? नानी तो घर में है नहीं! सारा घर बंद पड़ा है।"

"हुआ क्या था, शेन? क्या था," उसकी मां ने पूछा।

"तुम बैठ जाओ, मां। बैठ जाओ, मैं बताता हूं।"

शेन ने सारा किस्सा सुनाया। उसकी मां ने और दूसरी स्त्रियों ने कई बार आश्चर्य और डर से सांस अंदर खींची।

लोग लगातार सवाल पूछते जा रहे थे। शेन जवाब दे रहा था। ऊंची आवाजें हवा में गूंज रही थीं। आखिरकार पुलिस आ गई। एमबुलेंस भी आ गयी।

शेन ने सारा किस्सा फिर से सुनाया। उसने एमबुलेंस वालों को रोटी में हुआ छेद भी दिखाया। सिर हिलाकर वे चले गए। लोगों के दल यहां-वहां डबलरोटी को लगी गोली की चर्चा कर रहे थे। फिर सब लोग पुलिस वालों के पीछे-पीछे तंदूरवाले की दूकान पर गए जहां उन्होंने जाँच-पड़ताल शुरू की।

तंदूरवाले लड़के ने अपनी कहानी सुनाई, तंदूरवाले ने अपना और शेन का किस्सा फिर से सुनाया। अब तक उसका डर दूर हो चुका था और उसको लग रहा था कि छापामारों के साथ उसकी मुठभेड़ उसकी छोटी-सी ज़िंदगी की सबसे रोमांचक घटना थी। सब से दिलचस्प घटना!

डबलरोटी अपने साथ लेकर पुलिस चली गई तो वहां इकट्ठी हुई भीड़ ने तीन बार और उसकी कहानी सुनी। जब उनका सारा कौतूहल शांत हो गया तो एक-एक करके सब चले गए।

शेन ने ठंडी सांस भरी, एक दूसरी डबलरोटी ली और अपनी मां के साथ घर चला। अंधेरा हो चला था। अब पिताजी भी घर आते होंगे। हां, अब वह उनको अपनी कहानी सुनाएगा। फिर नानी को, मौसियों को। वह भी तो सुनना चाहेंगी। "तुम अब ठीक हो न, मां?" शेन ने पूछा। मां ने सिर हिला दिया। उसने उसके कंधों को अपने हाथ से घेर लिया! "ईश्वर का धन्यवाद कि तुम सकुशल हो।"

शेन ने मुस्करा कर मां का गाल चूमा। वह हमेशा उसका कृतज्ञ रहेगा। अगर वह यह न कहती, "होशियार रहना" तो यह मज़ेदार रोमांचक घटना न घटती!

—सिंगापुर

खुदा का नेक काम

एक किसान अपने गधे को हंकाता एक तरबूज़ के खेत में पहुंचा। वह थका भी था और प्यासा भी। पास ही अखरोट के एक छायादार पेड़ के नीचे सुस्ताने लगा। तरबूज के लम्बे-चौड़े खेत के दृश्य का आनंद लेते हुए उसने ऊपर देखा। बहुत ऊंचे पेड़ की ऊंची शाखाओं मे दो-चार अखरोट लटक रहे थे। खुदा का काम उसको समझ में नहीं आया। उसने सोचा, इतने बड़े पेड़ पर इतने छोटे-छोटे अखरोट और इतने भारी तरबूज़ इतनी सपाट, नाज़ुक बेल में क्यों लगते हैं? वह अभी सोच में डूबा ही था कि एक अखरोट नीचे गिरा और उसके सिर में लगा। उसने हाथ ऊपर उठाकर खुदा का धन्यवाद करते हुए कहा, "हे खुदावंद, तू भी बड़ा चतुर है जो बड़े तरबूजों को बड़े पेड़ पर नहीं लगाया!"

—ईरान

प्रार्थना में कितनी शक्ति है।

जिम अपनी मॉडल टी फ़ोर्ड मोटर में शहर जा रहा था। वह अभी अपनी मंज़िल से पांच मील दूर था कि उसकी छकड़ा मोटर रुक गई और किसी भी तरह टस से मस नहीं हुई।

जिमी कूद कर नीचे उतरा और इंजन का बॉनिट खोलकर पता लगाने की कोशिश करने लगा कि गड़बड़ी कहां है। लेकिन सफलता नहीं मिली। उसको गर्मी लगने लगी—कमीज के कॉलर के नीचे पसीना आ गया। उसने गाड़ी बनानेवाले को गालियां देकर अपना गुस्सा उतारा।

उसका गुस्सा सीमा पर था जब उसने एक कोमल आवाज सुनी। कोई पूछ रहा था, "क्या गड़बड़ी है, भाई?" जिम ने मुड़कर देखा तो पादरी खड़ा है।

उसको शर्म आई यह सोचकर कि पादरी ने उसको गालियां देते हुए सुन लिया होगा। उसने शरमाते हुए कहा, "गाड़ी स्टॉर्ट ही नहीं हो रही है।"

"तो गालियां देने से क्या फायदा?" पादरी ने कहा, "तुमने ईश्वर से मदद के लिए प्रार्थना की?"

"जी नहीं, वह तो नहीं किया।" जिम ने स्वीकार किया।

"तो प्रार्थना करो और देखो क्या होता है।" पादरी ने सुझाया।

जिम ने थोड़ा आश्चर्य से पादरी को देखा। फिर मन ही मन कहा, "चलो, और सब कुछ तो कर लिया है, यह भी कर देखता हूं—इनको खुश करने के लिए।"

जिम ने आंखें बंद कर के प्रार्थना की। फिर हैंडल उठाकर इंजन को चालू करने की कोशिश की, और वह सचमुच चल पड़ी।

जिम ने आंखें फाड़ कर हैरानी से अपनी गाड़ी को देखा फिर पादरी को देखा। उसकी हैरानी और भी बढ़ गई जब उसने उसको कहते सुना, "कमबख्त, चल ही पड़ी।"

—ऑस्ट्रेलिया

संतोष की गारंटी

एक आदमी ने अपने नौकर को सेब के बगीचे में जाकर कुछ सेब खरीद लाने को कहा। उसने कहा, "मीठे सेब खरीदना। मीठे न हो तो मत खरीदना।" बगीचे के मालिक ने नौकर से कहा, "मेरे सभी सेब मीठे है। एक चखकर देखो।"

"लेकिन एक ही चख कर पता कैसे चलेगा कि सभी सेब मीठे हैं? हर एक को चखना होगा।" फिर उसने हर एक सेब को चख कर लिया।

मालिक ने सेबों को देखा तो गुस्से के मारे आपे से बाहर हो गया। उसने पूछा, "किसने काटा इनको?"

"मालिक, आपने मीठे सेब लाने को कहा था न? हर एक सेब को चखे बिना पता कैसे चलता कि मीठा है या नहीं?" नौकर ने जवाब दिया।

—चीन

एक पत्र

एक आदमी घर से कहीं चला गया था। एक दिन उसने अपने परिवार को एक
लिखा। लेकिन उस पत्र को ले जाने वाला कोई भी नहीं मिला।

निराश होकर उसने स्वय ही पत्र ले जाने का फैसला किया। अपने शहर पहुंच
वह अपने घर गया और दरवाज़ा खटखटाया। किसी ने दरवाज़ा खोला। लेकिन
आदमी घर के अंदर गए बिना बोला, "मैं ठहरूंगा नहीं। मैं सिर्फ यह पत्र देने आ
था।" और वह चला गया।

भूसी खानेवाला राजा

एक राजा था जो हर रात भेष बदल कर अपनी राजधानी में घूमा करता था। इस
उसको अपनी प्रजा के हालचाल का पता चलता था और वह यह भी सुनता था कि
उसके बारे में क्या कहते हैं। वह अपने साथ अपने विश्वासपात्र नौकर को ले जाया क
था।

एक दिन घूमते-घूमते उसे बड़ी अच्छी खुशबू आई। कोई नई-सी खुशबू थी। र
ने नौकर को पता लगाने के लिए भेजा कि किस चीज की खुशबू है। नौकर ने लौट क
बताया कि पास की किसी झोपड़ी में एक औरत धान कूट रही है। यह खुशबू धान क
भूसी की है। राजा ने दुनिया की सारी स्वादिष्ट चीजे खाई थीं, लेकिन उनमें यह सो
खुशबू बिल्कुल नई थी। राजा का बड़ा जी चाहा उस चीज को चखने का जिसकी व
खुशबू थी। वह भूसी खाना चाहता था। उसने नौकर को कहा लाने को। नौकर दंग र
गया। उसने राजा को हाथ जोड़कर समझाया कि ज़िस चीज को खाने के लिए वह
व्याकुल हो रहे हैं वह इंसान नहीं खाते, वह सिर्फ सुअरों और गायों को खिलाई जाती है।
लेकिन राजा अपनी हठ पर अड़ा रहा।

भूसी लाई गई। राजा ने खाई और उसको बहुत अच्छी लगी। उसने नौकर को चेतावनी दी, "खबरदार जो इसके बारे में तुम्हारे मुंह से एक शब्द भी निकला। अगर निकला तो तुमको अपना सर गंवाना पड़ेगा।"

नौकर को बड़ी परेशानी थी। इतने दिलचस्प रहस्य को किसी से कहे बिना उससे रहा नहीं जाता था। बात को पेट में रखे-रखे, पेट फूल गया। वह न खा सकता था, न सो सकता था। उसने बहुत कोशिश की कि सारी बात को भुला दे, लेकिन भूलने की वह जितनी कोशिश करता, उसकी बेचैनी उतनी ही बढ़ती जाती। उसने सोचा, "अगर मैं ऐसी जगह जाकर कह डालूं जहां कोई सुन न रहा हो, तो मुझे चैन पड़ जाए।" उसने नदी से कहने की सोची, लेकिन फिर मछुए सुन लेते। उसने कब्रिस्तान की सोची, लेकिन फिर कब्र खोदनेवाले सुन लेते। तकलीफ में कुछ दिन उसने और काटे। फिर एक दिन घने जंगल में चला गया। वहां उसने एक पेड़ देखा जिसके तने में एक बड़ा-सा छेद था। नौकर ने सोचा, "इससे बढ़िया जगह और कहां मिलेगी?" छेद में सिर घुसा कर वह फुसफुसाया, "राजा भूसी खाता है! राजा भूसी खाता है!"

अब उसका पेट हल्का हो गया। उसकी तबियत सुधर गई। अब वह और लोगों की तरह खाने लगा, सोने लगा।

कई महीने बीत गए। बड़ा त्यौहार आने वाला था। महल में तैयारियां शुरू हो गई थीं। नगाड़े वाले चाहते थे कि पुराने नगाड़े को हटा कर नया लाया जाए। नगाड़ा बनाने वालों को हुक्म दे दिया गया। वे जंगल में गए उसके लायक लकड़ी काट कर लाने। संयोग की बात, उन्होंने वहीं पेड़ चुना जिसके तने में बड़ा छेद था। जिसमें उस नौकर ने अपना रहस्य उगला था।

पेड़ काटा गया। खूब बढ़िया, नया नगाड़ा बनाया गया। राजा ने देखा और पसंद किया। सैकड़ों आदमियों के सामने, बड़े धूम-धड़ाके से नए बड़े नगाड़े को उसकी जगह पर रखा गया। जलसे के अंत में नगाड़े वालों ने नगाड़ा बजाया। हमेशा जो बूम-बूम की आवाज़ आती थी, वह नहीं आई। उसके बदले नगाड़े ने चिल्लाकर कहा, "राजा भूसी खाता है! राजा भूसी खाता है!"

राजा गुस्से के मारे आपे से बाहर हो गया। उसने फौरन हुक्म दिया कि नगाड़े को नदी में फेंक दिया जाए और उसे कभी, कभी वापस न लाया जाए।

राजा ने उस नौकर को बुलाकर उससे पूछताछ की। "नगाड़े को मेरे रहस्य का पता कैसे लगा? तुम्हारे सिवा और कोई भी इंसान उसके बारे में नहीं जानता था। सच बोलो।" उसने गरज कर कहा।

नौकर डर के मारे कांप रहा था। वह कल्पना में अपने सर कटे शरीर को जमीन पर लोटता देख रहा था। उसने सच बात कह सुनाई। उसने बता दिया कि उसने राजा का रहस्य उस पेड़ को बताया था।

उसको क्षमा कर दिया गया। लेकिन राजा उसे फिर कभी अपने साथ नहीं ले गया। कौन जाने, राजा के और भी तो रहस्य हो सकते थे!

—बर्मी

कावायान और जादुई चिड़िया

पश्चिमी जावा द्वीप की लोक-कथाओं में कावायान एक प्रसिद्ध पात्र है। कावायान आलसी है। वह किसी भी मिनट सो सकता है। नींद उसको सदा घेरे ही रहती है। उसकी इस आदत से उसकी पत्नी को भी चिढ़ है और उसके मां-बाप को भी। लेकिन है वह ईमानदार, भला और मज़ेदार। इसलिए सभी उसको प्यार करते हैं। कावायान चतुर और हाज़िर जवाब भी है और कोई भी समस्या सुलझा सकता है।

एक दिन कावायान सोच में पड़ा एक कुर्सी पर बैठा था। उसकी स्त्री ने सुबह पीने के लिए जो दिया था उसको उसने अब तक छुआ भी नहीं था। यह देख कर कावायान की स्त्री को हैरानी हुई। "सुबह-सुबह तुम्हें भी औरों की तरह धान के खेत में काम करना चाहिए। तुम किस सोच में पड़े हो? सचमुच, तुम्हारा व्यवहार बड़ा अजीब है।" उसकी पत्नी ने कहा।

जम्हाई लेकर कावायान ने बेपरवाही से जवाब दिया, "मैं मुसीबत में हूं। इसीलिए सोच में पड़ा हूं।"

"किस चीज़ की चिंता है? ग़रीबी की? तकलीफ़ में दिन गुजारने की आदत नहीं पड़ गई?" पत्नी ने पूछा।

"मैं गरीबी की बात नहीं सोच रहा हूं।" कावायान ने कहा, "मैं वान आवूकोमार के बारे में सोच रहा हूं। याद नहीं, हमने उससे सात हजार रुपए लिए थे और अब तक वापस नहीं किये? वान आवू दो बार आ चुका है रुपयों के लिए। आज वह फिर आएगा। पिछली बार उसने कहा था, अगली बार रुपए नहीं दिए तो तुम्हें कचहरी ले जाऊंगा।"

कचहरी का नाम सुनकर कावायान की पत्नी डर गई। उसको रोना आ गया। "क्या कहा? तुमको कचहरी में ले जाएगा? तुमको सज़ा हो गई तो मेरा क्या होगा? कचहरी मत जाना, हाथ जोड़ती हूं।"

"इसी कारण तो मैं इस समय इतना दुखी हूं।"

"लेकिन चिंता करने से कर्ज़ तो नहीं चुका पाओगे। अच्छा होगा कि जाकर रुपयों का कुछ इंतज़ाम करो।" स्त्री ने कहा।

"लेकिन कहां मिलेगा रुपया? तुम्हारे कंजूस मां-बाप से? वे तो देने से रहे। मुझे सोचने दो। परेशान मत करो। मैं कर्ज़ चुकाने की कोई तरकीब सोच रहा हूं। तुम रसोई में जाओ। तुम यहां खड़ी रहोगी तो, मेरे सोचने में बाधा होगी।"

काबायान की पत्नी रसोई में वापस चली गई, और काबायान फिर सोचने लगा। थोड़ी देर बाद वह ज़ोर से चिल्लाया और अपनी पत्नी को ढूंढ़ने रसोई मे पहुंचा। वह बिल्कुल पागलों जैसा व्यवहार कर रहा था।

"सुनो! मैंने बहुत बढ़िया तरकीब सोची है। खुशी मनाओ! अब और चिंता म करो। हम आज ही अपना कर्ज़ चुका सकते हैं।" काबायान ने कहा।

"क्या करोगे!" स्त्री ने पूछा।

"सवाल मत पूछो। शकरकंद के आटे से ढेर सारी लेई बनाओ।"

"क्या? लेई बनाऊं?"

"हां, हां। लेई! जल्दी। वान आबू के आने से पहले।"

काबायान की पत्नी उबलते पानी मे शकरकंद का आटा मिलाकर लेई बनाने लगी इस बीच काबायान ने अपना एक तकिया खोल डाला और उसमें भरे चिड़िया के पंख को ज़मीन पर बिखेर दिया।

"लो, लेई तैयार है। अब इसका क्या करूं?" पत्नी ने आवाज़ दी।

काबायान ने हुक्म दिया, "ठंडी होने दो। ठंडी हो जाए तो मेरे सारे बदन, सिर से पांव तक लेई चुपड़ दो।"

उसकी स्त्री ने वैसा ही किया, यद्यपि उसको समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था। लेई ठंडी हो गई तो उसने उसे काबायान के पूरे बदन पर चुपड़ दिया—उसके बालों की जड़ से लेकर पावों के नाखूनों तक। कोई भी हिस्सा बाकी नहीं रहा।

उसके बाद काबायान ज़मीन पर बिखरे चिड़िया के परों पर लोटने लगा। अब उसके सारे शरीर पर पंख चिपक गए। उसका चेहरा तक ढ़क गया। उसने पत्नी से कहा, "अब मैं चकरी के बाड़े में जाता हूं। जब वान आबू आए तो उससे कहना कि मैं राजा के पास जादुई चिड़िया बेचने गया हूं।"

स्त्री ने सिर हिला दिया। काबायान बकरी के बाड़े मे घुस गया।
थोड़ी देर बाद ही वान आबू आ गया।
"सलाम आलेकुम", वान आबू ने कहा।
"सलाम वालेकुम", उसकी स्त्री ने जवाब दिया।
वान आबू ने पूछा, "काबायान कहां है? इस हफ्ते में मै यह तीसरी बार आया हू अपने रुपयों के लिए। आज आखिरी दिन है। अगर काबायान ने कर्ज नहीं चुकाया तो मेरे पास कचहरी जाने के अलावा और कोई चारा नहीं।"
"लेकिन, वान आबू, वह तो घर मे है नहीं।" काबायान की स्त्री ने कहा।
"तो वह घर में नहीं है? गया कहां?" वान आबू ने पूछा।
"वह जादू की चिड़िया के बारे में राजा से बात करने गए है।"
"क्या कहा? जादू की चिड़िया?"
"हां, काबायान के पास जादू की चिड़िया है। उसे राजा खरीदना चाहते है।"
वान आबू सिर हिलाकर मुस्कराया।
"अच्छा, अगर यह बात है तो मै भी उस चिड़िया को देखना चाहूंगा। उसका पिंजड़ा कहां है?"
"वह पिंजड़े में है। लेकिन उसको मत देखना। कहीं उड़ गई तो मुझ पर दोष लगाया जाएगा।" स्त्री ने कहा।
उसको मना कर दिया गया तो आबू चिडिया को देखने की और भी ज़िद करने लगा।
"मुझको क्यों नहीं देखने दे रही हो? अगर पिंजड़े का दरवाज़ा बंद है तो चिडिया कैसे उड़ जाएगी? चलो, दिखाओ जादू की चिड़िया। मैं सचमुच देखना चाहता हूं।" आबू ने खुशामद की।
"नहीं, नहीं वान, मत देखना। काबायान मुझसे बहुत नाराज होगा।"
लेकिन वान आबू और ज्यादा इंतज़ार नहीं कर सका। बाहर निकल कर इधर-उधर देखने लगा कि चिड़िया कहां है। वह बकरी के बाड़े की तरफ से गुज़रा तो एक विचित्र जीव को देखकर चौंक पड़ा। उसने जल्दी से आगे बढ़कर बाड़े का दरवाजा खोल दिया। परों से ढका काबायान जल्दी से बाहर निकला और गायब हो गया। काबायान की स्त्री लगी ज़ोर-जोर से रोने और चिल्लाने, "अरे, कोई मदद करो। जादू की चिड़िया भाग गई। काबायान की चिड़िया गायब हो गई। हाय, मै क्या करूं? वान आबू, यह तुमने

क्या किया? मैंने तुमसे कहा था कि चिड़िया को मत देखो। अब वह निकल गयी। हाय!"

"रोओ मत, रोओ मत, चुप हो जाओ।" काबायन उसको चुप कराने की कोशिश करने लगा। लेकिन स्त्री रोती ही जा रही थी।

"सर्वनाश! अब राजा नाराज़ हो जाएगा। खैर... मैं राजा को बता दूंगी कि वान

आबू ने चिड़िया को छोड़ दिया।" काबायान की स्त्री बच्चों की तरह जोर-जोर से रोते हुए बोली।

राजा का नाम सुनते ही वान आबू घबरा गया। बोला, "राजा से मत कहना कि मैंने चिड़िया को बाहर निकाल दिया था। मैं माफी मांगता हूं मैंने गलती की जो चिड़िया को बाहर निकलने दिया। हरजाने की तौर पर, मैं समझूंगा कि काबायान का कर्ज़ चुक गया है। लेकिन, ईश्वर के लिए, राजा से मत कहना कि चिड़िया को मैंने आज़ाद किया।" वान आबू गिड़गिड़ाया।

"राजा को मैं बता दूंगी। वह दस हज़ार रुपये में चिड़िया खरीदना चाहते थे। काफी ऊंचे दाम हैं ये।" काबायान की स्त्री ने कहा।

वान आबू ने फौरन कहा, "अच्छी बात है। मैं तीन हज़ार और जोड़ दूगा। काबायान से मुझको सात हजार मिलने थे न? तीन और मिलाकर पूरे दस हजार हो गए न? उतना ही हुआ जितना राजा तुमको चिड़िया के लिए देते।"

फिर वान आबू ने काबायान की स्त्री को तीन हज़ार रुपए दिए। रुपए लेकर उसने रोना बंद कर दिया। वान आबू घर वापस चला गया।

काबायान बाग में पेड़ों के झुरमुट मे छिपा बैठा था। वान आबू के जाते ही वह बाहर निकला और घर के अंदर वापस आया।

उसकी स्त्री ने खुश-खुश कहा, "हमारा कर्ज चुक गया। ऊपर से तीन हजार रुपये का मुनाफा हुआ।" काबायान जी खोल कर हंसा।

"मैं कितना भाग्यशाली हूं कि मेरी बीवी इतनी चतुर है। तुम और मैं मिलकर सारी दुनिया को बेवकूफ बना सकते हैं।"

—इंडोनेशिया

शेख़ चिल्ली और कुत्ते

शेख चिल्ली सिर्फ़ दो चीजों से डरता था अपनी बीवी से और कुत्तों से। घर में वह कभी अपनी पत्नी से बहस नहीं करता था और सदा उसकी आज्ञा का पालन करता था। जब घर से बाहर होता तो हमेशा कुत्तों से दूर रहने की कोशिश करता। उसने सुन रखा था

कि भौंकने वाले कुत्ते काटते नहीं, लेकिन उसको शक था कि कुत्तों को यह नही मालूम। सो वह कभी खतरा नहीं लेता था।

गांव के कुत्ते भी उससे दूर रहते थे। उनको यह दुबला, नाटा अजीब-सा लगनेवाला आदमी, जिसका चश्मा उसकी नाक पर टिका रहता था, पसद नहीं था।

एक दिन शेख चिल्ली को अपने चाचा से मिलने पड़ोस के गांव में जाना पड़ा। उस गांव के कुत्तों ने इतना अजीब दीखनेवाला आदमी पहले कभी नही देखा था। शेख चिल्ली को देखते ही वे ज़ोर-ज़ोर से भौंकने लगे। वे उसके पीछे लग गए। जहा भी वह जाता वे उसका पीछा करते।

शेख चिल्ली को पता लगा कि कुत्ते उसका पीछा कर रहे है तो वह ज्यादा तेज चलने लगा। लेकिन वह जितना तेज़ चलता कुत्ते उतनी ही ज़ोर से भौंकते।

आखिर, शेख चिल्ली में अब और धैर्य नहीं रहा। उसने सोचा, रुक कर शैतान कुत्तों को भगाने की कोशिश करनी चाहिए। उसने किसी किस्म का हथियार पाने की उम्मीद से इधर-उधर देखा। एक ईट पड़ी देख वह उसे उठाने लगा। लेकिन वह हिली भी नही। वह जमीन में गड़ी थी। सारी ताकत लगा देने पर भी शेख चिल्ली उसको नहीं उठा पाया। नाराज होकर वह गांव वालोंको जोर-जोर से गालियां देने लगा।

एक आदमी उधर से जा रहा था। उसने आकर शेख चिल्ली से उसके गुस्से का कारण पूछा।

"तुम्हारा गांव अजीब है।" शेख चिल्ली ने शिकायत की। "तुम लोग कुत्तों को तो खुला रखते हो और ईटों को बांध कर रखते हो।"

—पाकिस्तान

चूहे से भैंस बड़ी है

वह बहुत ईमानदार अफ़सर था। कभी रिश्वत नहीं लेता था। जब उसने नौकरी से अवकाश लिया तो कृतज्ञ लोगों ने उसके गुणों का आदर करने के लिए उसको एक बढ़िया उपहार देने की सोची।

सीधे उसके पास जाने की किसी को हिम्मत नहीं हुई। सो लोग यह जानने के लिए कि वह क्या पसंद करेगा, उसकी पत्नी से मिलने गए।

उसकी पत्नी ने कहा, "आप लोगों की इतनी इच्छा है उपहार देने की तो कला की कोई चीज़ दीजिए।"

"बड़ा अच्छा विचार है!" लोगों ने कहा।

"श्रीमती जी, कृपया यह बताएंगी कि आपके पति का जन्म किस महीने में हुआ था?"

"चूहे के वर्ष में। क्यों?"

"हमारा विचार है हम उन्हें चांदी का चूहा भेंट करें—इतना बड़ा जितना सचमुच का चूहा होता है।"

अफसर की पत्नी ने अपने पति को बिना बताए उपहार स्वीकार कर लिया।

कुछ सालों बाद अफ़सर के बुरे दिन आए। बड़ी मुश्किल से गुजारा होता था। अफसर की पत्नी ने चांदी के चूहे के टुकड़े-टुकड़े कर दिए और उन्हें बेच-बेच कर घर की जरूरतें पूरा करने लगी। जब अफ़सर को पता चला तो उसने अपनी पत्नी से पूछा कि चांदी का चूहा कहां से आया। डर से कांपते हुए उसने सच्ची बात बता दी। उसने सोचा था कि पति गुस्से से बरस पड़ेंगे। लेकिन उसने केवल एक ठंडी सांस भर कर कहा, "बेचारी! तुमको उन लोगों से कहना चाहिए था कि मैं भैंस के महीने में पैदा हुआ था।"

—वियतनाम

दो अच्छे दोस्त

बहुत दिन गुजरे, दो दोस्त थे। वे दोनों बहुत ही पक्के दोस्त थे लेकिन एक दूसरे के साथ मजाक में तरह-तरह की चाल चलने की कोशिश में रहते थे।

एक दिन उन्होंने सूअर को फंसाने के लिए गड्ढा खोदने का निश्चय किया। यह तय हुआ कि दोनों एक-एक गड्ढा खोदें लेकिन उन्होंने एक-दूसरे को नहीं बताया कि कहां और कब खोदेंगे।

एक दिन एक दोस्त ने गड्ढा खोदने का फैसला किया और एक झाड़ी के पीछे जाकर खोदना शुरू किया। उसने यह नहीं देखा कि उसका दोस्त झाड़ी के पीछे छिपा उसको देख रहा है। दूसरा आदमी उसको देखता रहा जब तक वह आंखों से ओझल नहीं हो गया। फिर वह उस जगह से निकल कर सोचने लगा कि कौन-सी चाल चली जाए अपने दोस्त को बेवकूफ बनाने के लिए। उसको एक चाल सूझी। वह "टैरो" का एक खूब बड़ा पत्ता ले आया और उसमें एक बड़ा छेद और कई छोटे-छोटे छेद बना दिए। उसने उस पत्ते को गड्ढे के ऊपर रख दिया। उसका दोस्त गड्ढा खोदे जा रहा था, गहरा, और गहरा। आखिरकार वह थक गया। वह थोड़ा आराम करने के लिए रुका और जो सिर उठा कर ऊपर देखा तो उसने गड्ढे के ऊपर रखे पत्ते में बने छेदों में से आती रोशनी देखी। उसने समझा कि रात हो गई है और आकाश में चांद-तारे निकल आए है। उसने आंखे बंद कर ली, और उसको तुरंत नींद आ गई। उसके दोस्त ने चुपके से गड्ढे के ऊपर से पत्ता हटा लिया।

जो आदमी खुदाई कर रहा था उसने सिर उठाकर देखा तो खूब धूप चमक रही थी। वह समझ गया कि उसके दोस्त ने कोई चाल चली है। अब उसको अपना बदला लेना था। वह सोचने लगा।

दूसरे दिन दूसरा आदमी गड्ढा खोदने चला। उसका दोस्त चुपके-चपके उसके पीछे हो लिया। पहला वाला आदमी, जिसे गड्ढा खोदना था, एक स्थान पर पहुंचा और उसने खुदाई शुरू की। वह खोदता गया जब तक कि थककर चूर नहीं हो गया। उससे अब
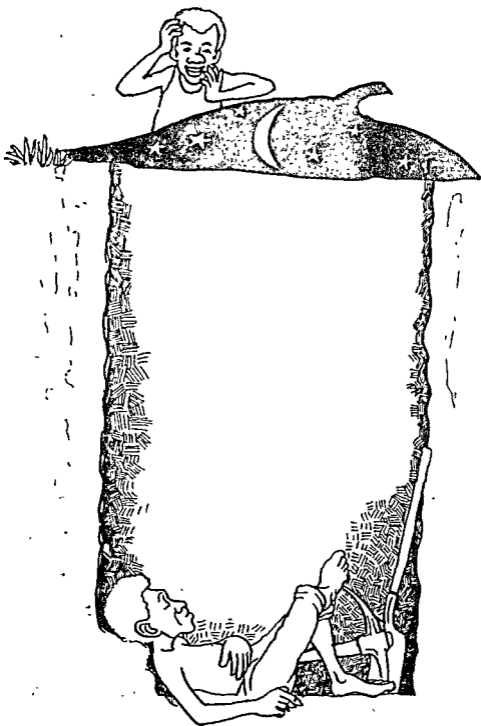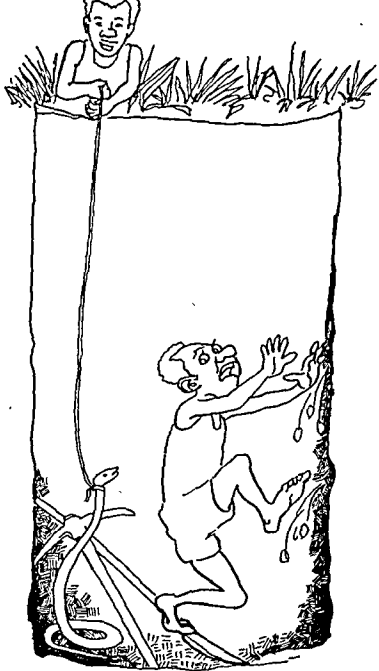
और खुदाई नहीं की जा रही थी।

थोड़ा-सा आराम करने के बाद उसने फिर खोदना शुरू किया। उसका दोस्त कहीं से एक सांप लाया। उसके चारों ओर डोरी बांध कर उसको गड्ढे मे नीचे तक लटका दिया। जो आदमी खोद रहा था उसने सांप को देखा तो डर के मारे चीख पडा और मदद के लिए लोगों को पुकारने लगा। फिर उसको एक उपाय सूझा। गड्ढे की दीवारो से मिट्टी खोद कर उसने गड्ढे को भरना शुरू किया। उसका दोस्त बाहर छिप कर खडा था और उस डोरी को हिलाता जा रहा था जिसमें सांप बंधा था। और वह बेचारा जिसने गड्ढा खोदा था, इतनी मेहनत से खोदे गड्ढे को भरता जा रहा था, जब तक गड्ढा इतना ऊंचा नहीं हो गया कि वह आसानी से बाहर निकल सकता। उसका दोस्त तब तक वहां से चम्पत हो गया था। उसने वह रस्सी देखी जिससे सांप को बांधा गया था और वह समझ गया कि उसको बेवकूफ बनाया गया।

यह मजाक था इसलिए किसी ने बुरा नहीं माना। दोनों ने एक-दूसरे को सब-कुछ बता दिया और उन्होंने यह भी अनुभव किया कि इस तरह समय की और मेहनत की कितनी बर्बादी हुई।

कहां तो सुअर पकड़ने के दो गड्ढे होते, और कहां एक भी नहीं था।

—पपुआ न्यू गिनी

उंगलियों का खेल

तीन आदमियों को एक सरकारी इम्तहान में बैठना था। वे एक ज्योतिषी के पास गए। ज्योतिषी ने उनके सवालों का कोई जवाब नहीं दिया। जब वे तीनों बोल चुके तो उसने एक उंगली उठा दी।

जब इम्तहान का नतीजा निकला तो उन तीनों में से सिर्फ एक पास हो गया था। ज्योतिषी का नाम हो गया।

एक शिष्य ने ज्योतिषी से पूछा कि उसकी सफलता का रहस्य क्या है?

"मेरा रहस्य यही है कि मैं कुछ बोलता नहीं।" जवाब उस नौजवान को समझ में नहीं आया।

ज्योतिषी ने समझाया, "तुमने देखा था कि मैंने एक उंगली उठाई थी। इसका मतलब यह हो सकता था कि सिर्फ एक पास होगा। ऐसा ही हुआ और मेरी भविष्यवाणी सही निकली। अगर दो पास होते तब भी मेरी भविष्यवाणी ठीक निकलती, क्योंकि तब इसका अर्थ होता कि केवल एक फेल होगा, और दो पास होंगे। अगर तीनों पास होते तो इसका अर्थ यों लगाया जा सकता था कि तीनों एक समूह के रुप में पास होंगे। इसका उल्टा भी सही होता।"

—चीन

पहेलियाँ

(उत्तर पृष्ठ 72 पर)

1. सारी ज़िंदगी कड़ी मेहनत करके
सुंदर फूलों को अपना घर बना कर,
वह बेशकीमत चीज़ बनाती है, जो
मिस्री से भी ज्यादा मीठी है।

—चीन

2. वह कौन-सी चीज है
जो पानी पीते ही
मर जाती है।

—कोरिया गणतंत्र

3. वह मुट्ठी में बंद नहीं किया जा सकता
पकड़ा नहीं जा सकता
लेकिन शरीर को तरोताजा बनाता है।

—इंडोनेशिया

4. एक टांग वाला गोरा आदमी।

—श्रीलंका

5. पेड़ पर फल
फल पर पेड़।

—श्रीलंका

6. तुम उस तरफ जाओ, मैं इस तरफ
हम जल्दी ही एक जगह मिलेंगे।

—जापान

7. भरा हो तो झुका होता है,
खाली हो तो सीधा।

—इंडोनेशिया
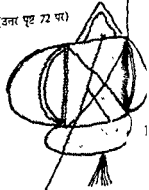
8. ऊपर गणित, नीचे झूला।

—जापान

9. छोटी-सी छोकरी लाल बाई नाम है
पहने है घाघरा, एक पैसा दाम है
सब के मुंह में आग लगाए, आता है रुलाना

—भारत

10. आओ सुनो एक कहानी बेटे
बिन पर-पंखों उड़ती है
धागा एक गले में बाँधे।

—पाकिस्तान

11. छिलका भूसी के पास,
भूसी खोल के पास,
खोल मोती के पास,
मोती पानी के पास।

—फिलीपीन्स

12. दो आदमियों ने नदी में गोता लगाया
बाहर निकले तो एक के बाल गीले थे, दूसरे के सूखे।
यह कैसे हुआ?

—पपुआ न्यू गिनी

13. सात छेदोंवाला डिब्बा?

—बर्मा
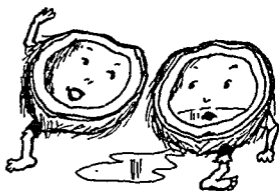
केवुन अप्पू का दुपट्टा

केवुन श्रीलंका के सिंहली लोगों की प्रिय मिठाई है। वह मैदा और गुड़ से बनाई जाती है और तेल में तली जाती है।

एक बार एक आदमी था जो हमेशा केवुन खाता रहता था। उसका नाम ही पड़ गया केवुन अप्पू। गुंडा की चाय की दूकान में ताजे बने केवुन शीशे की अलमारी में रखे रहते थे। गुंडा की पत्नी उन्हें बनाती थी। पूरे गांव में सिर्फ यही एक चाय की दूकान थी। इसीलिए वह खूब चलती थी। गुंडा खुद एक वर्तन में चाय बनाता। फिर ज़ोर-ज़ोर से चम्मच खनखनाता हुआ उसमें दूध और चीनी मिलाता। फिर एक बर्तन से दूसरे मे डालता जब तक उसमे झाग न उठ जाए। बड़ी स्वादिष्ट चाय बनाता था वह।

केवुन अप्पू अपने कंधे पर हमेशा एक दुपट्टा डाले रहता था। यह गांववालों की आम आदत थी। कंधे पर एक छोटा दुपट्टा डाल लेते जिसके एक कोने में चाबियों का गुच्छा बंधा होता। लेकिन केवुन अप्पू के दुपट्टे में चाबी का गुच्छा नहीं बंधा होता था।

लोग जब से उसको केवुन अप्पू पुकारने लगे थे, उसको सब के सामने केवुन खाने में बड़ी शरम आती। लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि उसने खाना छोड़ दिया। उसकी जितनी इच्छा होती खाता, और जब जी चाहे खाता। जब वह खाता तो दुपट्टे के एक कोने से मुंह ढ़क लेता। इसीलए केवुन खाने के लिए दुपट्टे का होना बहुत जरूरी हो गया।

एक दिन केवुन अप्पू घूमते-घामते चाय की दूकान में पहुंचा। एक बेंच पर बैठकर उसने केवुन मांगे। फिर उसने कंधे पर दुपट्टे को टटोला। लेकिन वह वहां नहीं था। उसने इधर उधर देखा। दूसरी बेंच पर बिंदू बैठा था। वह तश्तरी से चाय पी रहा था। कादिरा सिगार पी रहा था और हवा में धुएं के छल्ले उड़ा रहा था, और बुट्टा अखबार पढ़ कर सब को सुना रहा था। सिर्फ़ सोका केवुन खा रहा था, और लग रहा था कि उसको बहुत मज़ा आ रहा था।

(उत्तर पृष्ठ 70-71 का)

[illegible] 2 आग 3 पत्नी 4 [illegible] 5 अनानास 6 [illegible] 7 धान का पौधा 8 घड़ी 9 लाल मिर्च 10 [illegible] 12. उनमें से एक गेंडा था 13 [illegible]।

केवुन अप्पू के मुंह में पानी भर आया। लेकिन मुंह ढ़के बिना वह खा कैसे सकता था? उसको दुपट्टे की सख्त ज़रूरत थी। वह उठ गया।

उसने सोचा, "मैं शायद घर में भूल आया। नहीं, मैंने ऐसा नहीं किया होगा। मुझको चिढ़ाने के लिए पत्नी ने ले लिया होगा।" सोचता-सोचता वह घर पहुंचा।

उसकी पत्नी दरवाज़े पर बैठी चावल चुन रही थी। केवुन अप्पू ने गुस्से से कहा, "अभी निकालो मेरा दुपट्टा!" पत्नी ने आश्चर्य से केवुन अप्पू की ओर देखा। फिर मुस्करा कर वह अपना काम करने लगी।

"तो तुम भी मेरे साथ मज़ाक कर रही हो, क्यों ?" उसी तरह गुस्से से उसने कहा फिर दुपट्टा ढूंढने के लिए सारा घर उलट-पुलट डाला। लेकिन वह नहीं मिला। फिर शेर की तरह गरज कर वह तीर की तरह घर से बाहर निकल गया और सड़क के किनारे खड़ा-खड़ा सोचने लगा कि अब क्या करूं।

सड़क पर कुछ लड़के कंचा खेल रहे थे। केवुन अप्पू उनके पास गया। उसने उनसे पूछा, "थोड़ी देर पहले जब मैं इधर से गुजर रहा था तो तुमने मेरा दुपट्टा चुरा लिया था। है न?"

लड़कों ने उसको देखा और मुस्करा दिए। "वापस करो मेरा दुपट्टा, वर्ना..." उसने उन्हें धमकाया। लड़कों ने एक दूसरे से फुसफुसाकर कुछ कहा। फिर वे हंसे, और अपने कंचे उठाकर हंसते-हंसते वहां से भाग गए।

केवुन अप्पू हैरान खड़ा रहा। "कौन ले गया होगा मेरा दुपट्टा ? यह तो अच्छा मज़ाक है। मैं चोर को पकड़ कर रहूंगा।" इस प्रकार बुड़बुड़ाता हुआ वह चाय की दूकान में वापस पहुंचा। वह दुकान की तीन सीढ़ियां चढ़ा, फिर चिल्लाने लगा। "यह हंसी की बात नहीं है। मेरी चादर वापस देनी पड़ेगी।"

गुंडा की पत्नी एक और थाली भर गरमागरम केवुन ले आई और उसे शीशे की अलमारी के अंदर रख दिया। बेंच पर जो लोग बैठे थे उन्होंने खुद ही निकाल लिए और खाने लगे।

गुंडा ने कहा, "केवुन खाओ, भाई। सब ठीक हो जाएगा।" लेकिन केवुन अप्पू का गुस्सा बढ़ता जा रहा था। वह रोनी-सी आवाज में बोला, "यह बहुत बुरी बात है। मेरा दुपट्टा वापस क्यों नहीं कर देते ?" वह दोनों हाथों से अपना सिर थाम कर बोला, "मैं पागल हो जाऊंगा।" फिर उसका मुंह पूरा का पूरा खुल गया अक्षर "औ" (O) की

तरह, और उसकी आंखें आकाश की ओर उठ गई। उसका दुपट्टा उसके सिर पर बंधा था।

—श्रीलंका

हाजी बग़लोल

बहुत बहुत दिन हुए पाकिस्तान में एक सीधा-सादा, मोटा, नाटा और बदसूरत देहाती रहता था। उसका नाम था हाजी बग़लोल। उसकी अजीब-सी बकरे जैसी दाढ़ी थी। उसकी वजह से वह बकरे जैसा लगता था। उसने अपनी सारी जिंदगी गांव मे ही बिताई थी।

एक बार वह अपनी मौसी के घर दूसरे गांव गया। उसकी मौसी ने उसको तली हुई कलेजी खाने को दी। हाजी बग़लोल ने पहले कभी तली कलेजी नहीं खाई थी। उसको बहुत ही स्वादिष्ट लगी। उसने अपनी मौसी से बनाने की विधि पूछी। मौसी ने कागज़ पर लिख कर दे दी।

हाजी बग़लोल ने कागज को बहुत संभाल कर अपनी जेब में रख लिया। रास्ते में उसने एक किलो कलेजी खरीदी। उसे हाथ में लिए वह अपने गांव की तरफ जा रहा था कि एक चील ने देखा। चील को कच्चा गोश्त बहुत पसंद है। बस, उसने जोर से झपटा मारा और गोश्त को लेकर उड़ गई।

पहले तो इस आकस्मिक हमले से हाजी बग़लोल घबरा गया। जब उसने चील को ऊपर उड़ते देखा तो ठठाकर हंस पड़ा। कुछ लोगों ने यह सब-कुछ देखा था। उनको यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि हाजी बग़लोल ज़ोर-ज़ोर से हंस रहा है मानों कोई बहुत खुशी की घटना घटी हो।

"तुम हंस क्यों रहे हो?" एक आदमी ने पूछा।

उसने खुशी-खुशी कहा, "मैं तो उस चील की बेवकूफ़ी पर हंस रहा हूं। उसने गोश्त तो छीन लिया मेरे हाथ से, लेकिन उसको बनाने की विधि जो मौसी ने लिख कर दी थी, वह तो मेरी जेब में है! अब वह चील करेगी क्या?"

यह कहकर वह फिर हंसने लगा।

—पाकिस्तान
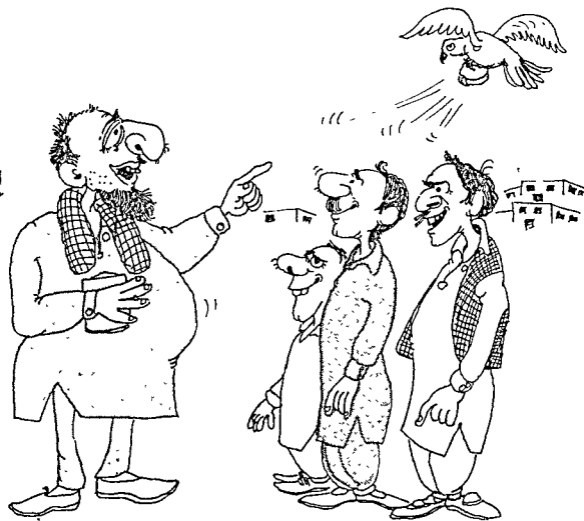
बगुला भैंस के ऊपर क्यों बैठता है?

धान के खेतों में जो चिड़िया अक्सर देखने में आती है, वह है बगुला। यह चिड़िया सफेद रंग की होती है और लंबी-लंबी टांगे होती हैं। वह अक्सर गाय-भैंस की पीठ पर बैठी होती है।

तुमको ताज्जुब होगा कि भैंस अपने लंबे-लंबे सींगों से उसको उड़ा क्यों नहीं देती? बुद्धिमान लोग हमें बताते हैं कि बगुला भैंस की पीठ पर उसके शरीर से मक्खियां उड़ाने के लिए बैठता है जो बेचारी भैंस को काटती रहती है। जानवर घास चर रहे होते हैं तो कीड़े और मेंढ़क डर कर घास में से निकल आते हैं। बगुला इन्हें खा लेता है। भैंस को कीड़ों से छुटकारा मिल जाता है और बगुले को उसका भोजन। इसलिए दोनों को यह इंतजाम पसंद है।

लेकिन इसके बारे में एक पुरानी दिलचस्प कहानी है कि बगुला भैस की पीठ पर क्यों सवार रहता है।

कहानी यह है।

जब दुनिया अभी नई थी, एक बार बगुले और भैंस का झगड़ा हुआ। उन्होंने एक-दूसरे को बहुत बुरा-भला कहा। अंत मे भैंस ने कहा, "चलो हम कोई शर्त लगा कर झगड़े का निपटारा कर लें। नदी में चल कर पानी पिएं—जिससे जितना पिया जाए, पिए। हारनेवाला जीतने वाले का गुलाम होगा।"

"लेकिन पता कैसे चलेगा कि किसने ज्यादा पानी पिया?" बगुले ने पूछा।

"यह मानेंगे कि जो पानी को छिछला कर दे, उसी ने ज्यादा पानी पिया।" भैस ने जवाब दिया।

बगुले ने एक मिनट सोच कर कहा, "तुम्हारा पेट इतना बड़ा है। तुम्हारे लिए जीतना आसान है। फिर भी मैं तुम्हारे साथ पानी पीने की होड़ लगाने को तैयार हूं।"

भैंस ने कहा, "तो चलो नदी पर चलो।"

बगुला बोला, "जल्दबाज़ी मत करो। अभी तो हमने निर्णायक भी तय नहीं किए हैं

जो हमारी हार-जीत का फैसला करेंगे। कल तक ठहर जाओ।"

भैंस चली गई तो बगुला बांस के झुरमुट के पीछे उड़कर नदी के किनारे एक बड़े से पेड़ के पीछे छिप गया। वह बड़ी देर तक पानी को निहारता रहा। फिर वह उड़ गया और आस-पास के खेतों में चिड़ियों को अगले दिन की होड़ देखने और हार-जीत का फैसला करने के लिए आने को कह दिया।

दूसरे दिन पशु और पक्षी नदी किनारे जमा हो गए। भैंस ने खेतों के चौपायों को बुलाया था, और बगुले ने पक्षियों को। निर्णायकों ने नदी किनारे एक लम्बी कतार बना ली।

उन्होंने कहा, "पानी पीने की होड़ शुरू हो।"

भैंस ने बगुले से कहा, "तुम शुरू करो।"

"नहीं, तुम शुरू करो।" बगुले ने कहा।

भैंस ने कहा, "मैं सारा पानी पी जाऊंगी तो तुम्हारे लिए कुछ नहीं बचेगा। तब होड़ कैसे होगी?"

बगुला बोला, "इतनी निश्चिंत मत रहो।" फिर उसने निर्णायकों से पूछा, "माननीय निर्णायकों, हममें से कौन पहले पिए?" इस होड़ का सुझाव भैंस ने दिया था।"

निर्णायकों ने हुक्म दिया, "अगर यह बात है तो भैंस शुरू करे।"

भैंस ने पानी में मुंह डाला और पीना शुरू किया। वह पीती गई, पीती गई। यहां तक कि जानवरों और चिड़ियों ने सोचा कि उसका पीना कभी खत्म ही नहीं होगा।

लेकिन बड़ी अजीब बात यह हो रही थी कि भैस जितना ज्यादा पीती, पानी उतना ही गहरा होता जाता। बगुले के सिवा यह किसी को मालूम नहीं था कि इस वक्त ज्वार उठ रहा था। उसने एक दिन पहले ही नदी को अच्छी तरह परख लिया था। समुद्र से नदी के मुहाने से आता हुआ पानी का प्रवाह नदी के पानी को ज्यादा गहरा कर देता था। इसीलिए भैंस जितना पीती, पानी उतना ही गहरा होता जाता।

होड़ के शुरू होने के पहले भैस जिस स्थान पर खड़ी थी, वहां अब पानी इतना गहरा हो गया था कि वह उसमें तैर सकती थी। निर्णायक पशु-पक्षी उसके ऊपर हंसने लगे। फिर भैंस पानी से निकल कर बोली, "अब बगुला पानी पिए।"

"ठहरो, मै पहले ज़रा अपने पंख ठीक कर लूं।" बगुले ने कहा और बड़ी देर तक अपने पंख संवारता रहा। असल में वह बहाव के पलटने का इंतजार कर रहा था। जब

उसने देखा कि बहाव उल्टी तरफ हो रहा है और पानी वापस समुद्र में जा रहा है तो वह पानी पीने आया। उसने कहा, "अब जितना पी सकता हूं, पीऊंगा।"

पानी में चोंच डुबो कर वह पानी पीने का बहाना करने लगा। जल्दी ही निर्णयकों ने देखा कि पानी कम होता जा रहा है। उनको नदी के बहाव का रहस्य नहीं मालूम था, इसलिए उनको बहुत आश्चर्य हो रहा था। भैंस ने देखा कि पानी कम होता चला जा रहा है तो घबराई। बगुले ने अपनी चोंच उठाकर निर्णयकों से पूछा, "माननीय निर्णयकों, अपना फैसला सुनाइए।"

जानवरों ने कहा, "बगुला जीता।"

चिड़ियों ने कहा, "भैंस हार गई।"

उन सबने कहा, "भैंस को बगुले का गुलाम बनना पड़ेगा।"

इसीलिए तुम बगुले को अपनी गुलाम भैंस की पीठ पर खड़े देखते हो। उसकी आंखें अधमुंदी होती हैं और सिर पीछे की ओर होता है। कहते हैं वह पानी पीने की उस होड़ के बारे में सोचता रहता है।

—फिलिपीन्स

कियाई सेंतार की तीन कहानियां

1. सभी जानते थे कि कियाई सेंतार धार्मिक विद्वान हैं और उसमे कमाल की जादुई ताकत है। लोग कहते थे कि उसकी इस शक्ति ने न जाने कितने चोरों और डाकुओं को वश में कर लिया। एक दिन एक चोर ने उसको किसी लंबे सफर से लौटते देखा। उसकी गाड़ी मे बोरियां, बक्से और तरह-तरह के फलों के डिब्बे भरे हुए थे। चोर ने सोचा, "अब वह अमीर हो गया होगा। और दिन भर के सफर की थकान के बाद रात को ज़रूर गहरी नींद सोएगा।"

उस रात चोर कियाई सेतार के घर गया। उसने पीछे दीवार के ऊपर से झांक कर देख लिया कि अंदर सब लोग सो रहे हैं। जब उसको विश्वास हो गया कि कियाई सेंतार और उसकी पत्नी सो रहे है तो वह घर के अंदर घुसा। खिड़की के रास्ते वह आसानी से घुस गया।

घर में घुसने के बाद उसे वह कमरा दिखायी दिया जिसमें सारे बक्से रखे थे। वह वहीं गया। चोर ने सोचा, "कियाई लम्बे सफर के बाद घर आया है। इन बक्सों में ज़रूर गहने और रुपये भरे होंगे।"

उसने सब से भारी बक्स उठाया और चल दिया। "मैं अब अमीर हो गया। यह बक्स इतना भारी है, ज़रुर इसमें ढेरों माल होगा।" चोर सोच रहा था।

अपने घर पहुंच कर उसने सावधानी से बक्स को खोला। अंधेरे में ही उसका अपना हाथ बक्स में डाला। और वह चीखने लगा। "बचाओ, बचाओ ! अरे, कोई बचाओ !" वह चिल्लाने लगा। अब उसको कियाई सेंतार की जादुई शक्ति में विश्वास हो गया।

उसकी चीखें सुनकर पड़ोसी दौड़े आए। किसी के हाथ में मशाल थी, किसी के डंडा और किसी के तलवार। कियाई सेंतार भी आया। जब उसको समझ में आया कि चिल्लानेवाला चोर है तो उसने कहा, "इस आदमी ने यह बक्स मेरे घर से चुराया है। बेचारे को यह नहीं मालूम था कि बहुत दिनों से इसमें मधुमक्खी का छत्ता बना हुआ है।"

2. एक बार कियाई सेंतार ने शानदार मूंछे रख लीं। एक नौजवान को उसकी मूंछे बहुत पसंद आई। उसने पूछा कि इतनी घनी और बढ़िया मूंछे उसने कैसे उगाई।

कियाई सेंतार ने उत्तर दिया, "अभी तुम्हारी उम्र नहीं हुई है मूछें रखने की। लेकिन मेरे पास मक्का की एक खास औषधि युक्त विधि है। रात में सोने से पहले एक चम्मच शहद और दो उबले खजूर लो। ऊपरी होठ और नाक की बीच में उसको चुपड़ लो। थोड़ी ही देर में घनी मूंछे उग आएंगी।"

नौजवान ने वैसा ही किया जैसा कियाई सेतार ने बताया था। फिर वह गहरी नींद मे सो गया और मीठे सपने देखने लगा। सुवह होने से पहले ही वह उठा। उसने चेहरे पर हाथ लगाया। और सोचा कि वाह, सचमुच घनी मूंछे उग आयीं। लेकिन जब उसने शीशे में अपना चेहरा देखा तो दंग रह गया। मूंछें वो थी नहीं। हां, उस जगह पर चीटियां चिपकी हुई थीं।

3. एक बार कियाई सेंतार को उसके एक दोस्त ने एक गधा भेंट किया। "यह खराब गधा नहीं है, कियाई। तुम सफर पर जाते समय इसे ले जा सकते हो।" उसके दोस्त ने कहा।

कियाई ने दोस्त को धन्यवाद दिया और भगवान की महिमा की प्रशंसा की।

गधे की बड़े प्यार से देखभाल की गई। लेकिन यह पता लगने पर कि गधा बहुत सुस्त और आलसी है, कियाई सेतार को दुख हुआ। उसने सोचा कि आलसी गधे की देखभाल करने का क्या फायदा।

एक दिन वह गधे को लेकर रवाना हुआ। एक जान-पहचान वाले ने देख कर पूछा, "कहां चले कियाई सेंतार ? तुम गधे के साथ इतनी भरी दोपहरी में तो कभी जाते नहीं।"

"मै उधर वाली मस्जिद में शुक्र की नमाज पढ़ने जा रहा हूं।" कियाई सेतार ने जबाब दिया।

उसके दोस्त ने आश्चर्य से कहा, "लेकिन आज तो बृहस्पति है।"

"सो तो ठीक है। लेकिन तुम विश्वास नहीं करोगे कि यह गधा कितना सुस्त है। अभी चल पाऊंगा तो कल दोपहर तक मस्जिद पहुंच पाऊंगा।" कियाई सेतार ने कहा।!

—इंडोनेशिया
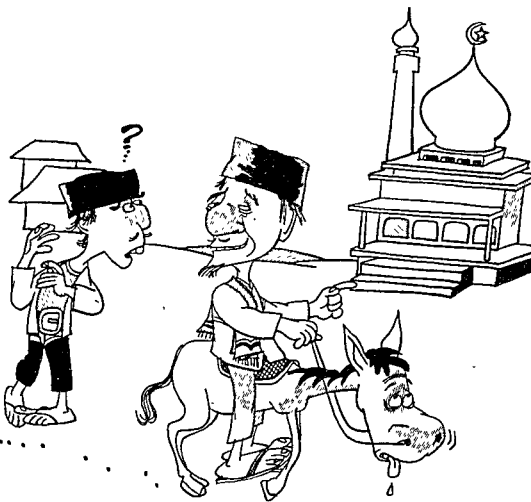
ज़ेगाटुंगज़ार

बर्मा के कई लोकप्रिय पात्रों में सबसे पहला स्थान ज़ेगाटुंगज़ार का है। वह बातचीत में माहिर था, और शब्दों का जादूगर। राजा के सर्वोच्च न्यायालय और मंत्रिमंडल का कार्यालय जिस इमारत में था, उसके एक अफसर की देखभाल का काम उसको सौंपा गया। वह सपरिवार वहां रहता था। उसने शाही क्लर्क से रीति-रिवाज और दरबारी अदब-क़ायदे सीखे और बाहर के काम भी करता था।

एक दिन अफसर की पत्नी ने घर में ताज़ा बिस्कुट बनाए और ज़ेगाटुंगज़ार को भेजा कि मालिक से कह दे कि आकर ताज़ा बिस्कुट खाए। शैतान लड़के ने सीढ़ी के ऊपर से ही चिल्लाना शुरू किया, "मालिक, मालिकन घर बुला रही है ताज़ा... ताज़ा बिस्कुट खाने।" और वह बराबर पुकारता गया जब तक कि वह उनके कमरे में नहीं पहुंच गया। वहां जो लोग बैठे थे वे हंसने लगे। अफसर को बड़ा गुस्सा आया। उसने ज़ेगाटुंगज़ार के सिर में एक चपत लगा कर कहा, "तुमने मुझको सब अफसरों के सामने लज्जित कर दिया। अगली बार कोई संदेश लाओ तो सब के सामने इस तरह गला फाड़ कर मत चिल्लाना। सिर्फ इशारा कर देना, या यों आंख मार देना। मैं समझ जाऊंगा कि तुम घर से संदेश लाए हो।"

एक और दिन की बात है, पड़ोस मे आग लग गई। घर का सामान जल्दी-जल्दी हटाया जाने लगा। घर की मालकिन ने जेगाटुंगज़ार से कहा कि सिर्फ हल्की चीजें हटाओ। हल्की चीज़ों से उसका मतलब था कीमती चीजों से। लेकिन हमारा दोस्त, शैतानों का उस्ताद, मज़ाक करने का शौकीन, घर के नीचे जा कर भूसी की बोरी उठा लाया। अंत मे मालकिन ने उसको मालिक को बुला लाने भेजा।

अफसर एक मीटिंग में था। ज़ेगाटुंगज़ार सब से ऊपर वाली सीढ़ी पर बैठ गया और सारा दिन आंख मारता रहा। आखिर मीटिंग खत्म हुई। मालिक ने आकर पूछा कि वह आंख क्यों मार रहा था। सारी कहानी सुनने के बाद अफसर को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। वह सिर्फ चिल्लाता रहा, "क्या?... क्या?"

"लेकिन मालिक, आपने ही तो कहा था कि चिल्लाना मत, सिर्फ आंख से इशारा करना।" अफसर ने और समय नहीं गंवाया। वह घर भाग गया। भाग्य से आग ज्यादा बड़ी नहीं थी और जल्दी ही बुझा दी गई थी।

मालिक और मालकिन ने ज़ेगाटुंगजार को निकाल दिया। और क्या करते?

—बर्मा

निशाना फिर चूक गया

सेना के कुछ जवानों का निशाने बाजी का अभ्यास चल रहा था। सार्जेण्ट मैक के निर्देशन में जवान अच्छा काम दिखा रहे थे। केवल ब्लू को जिसका निशाना बार-बार लक्ष्य से दूर चला जाता था, सार्जेण्ट डांटता, धमकाता, लेकिन कोई असर नहीं पड़ रहा था। अंत में वह बरस पड़ा। "तुम पूरी सेना में सब से ख़राब निशानेबाज़ हो। तुम दस फुट की दूरी से भूसी की ढेरी पर भी निशाना नहीं लगा सकते।" उसका धैर्य जब बिल्कुल जवाब दे गया तो उसने कहा, "सायबान के पीछे जाकर अपने आपको गोली. क्यों नहीं मार लेते?"

सिपाही ने सलाम किया और मार्च करता सायबान के पीछे चला गया। सार्जेण्ट मुंह बाए देखता रह गया। उसके मुंह से आवाज़ नहीं निकली।

धांय! गोली दगी।

"हे भगवान, यह क्या कर डाला उसने! उसने सचमुच आज्ञा का पालन कर डाला! उसने अपने को गोली मार ली। हे भगवान!"

दूसरे ही क्षण ब्लू चुस्ती से मार्च करता हुआ सार्जेण्ट के सामने आकर खड़ा हो गया। उसने सलाम किया और बोला, "निशाना फिर चूक गया, सार्जेण्ट!"

—आस्ट्रेलिया
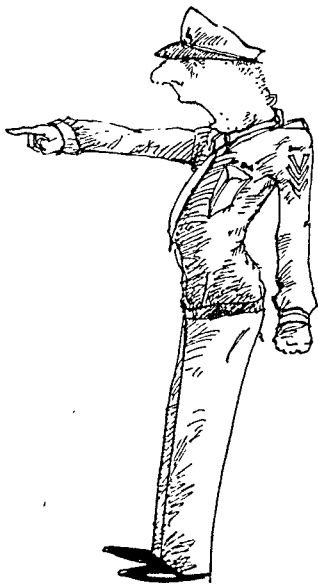
किस्सा कुर्सी का

एक समय मे नेपाल के पहाड़ी राज्य पर एक उदार और दयालु राजा शासन करता था। वह राज्य की महत्वपूर्ण समस्याओं पर राज्य के खास-खास लोगों के साथ विचार-विमर्श करता था। इस आदत के कारण वह बहुत लोकप्रिय और सफल माना जाता था।

एक दिन सवेरे सभा में उसका ध्यान इस बात की ओर गया कि खुद उसके सिवा और किसी के पास वैठने का अच्छा आसन नहीं है। राजा दयालु था, इसलिए उसको चिंता हो गई। उसने तय किया कि वह सभा में भाग लेनेवाले हर एक आदमी के बैठने के लिए आरामदेह आसन बनवाएगा।

उसने राज्य के बढ़ईयों को हुक्म दिया कि वे अच्छे नमूने बना कर पेश करें। उसने काफी बड़े पुरस्कार की भी घोषणा की।

राज्य के सभी बढ़ई लग गए इस काम में। कई नमूने बनाए गए—स्टूल, बेंच, कोच, वग़ैरह। लेकिन राजा को कोई भी नमूना पसंद नहीं आया।

जब सारे बढ़ई हार गए तो एक मोची ने इनाम जीतने का निश्चय किया। वह अपने कारखाने में बैठा कोई बढ़िया नमूना सोच रहा था। और अचानक उसको सूझ गया। उसने अनुभव किया कि वह जिस ढंग से बैठा है वह बहुत आरामदेह है। इतना आरामदेह कि उसको पता ही नहीं चला कि कितनी देर से वह उसी तरह बैठा-बैठा सोच रहा है। उसने सोचा, ऐसा आसन क्यों न बनाया जाए जिस पर आदमी इसी ढंग से बैठ सके।

वह नमूना बना चुका तो उसे अज़माने के लिए उस पर बैठा। उसने उसमे एक पीठ और दो बाजू जोड़ दिए। अब वह सचमुच आरामदेह था। उसका चेहरा खुशी और गर्व से दमक उठा। उसको पूरा विश्वास था कि ऐसा नमूना और किसी ने न बनाया होगा।

एक मोची ने तमाम बढ़ईयों को उन्हीं के हुनर में हराया। यह खबर सचमुच सनसनी फैलाने वाली होगी।

उसने वह नमूना अपने पड़ोसियों को दिखाया। उन्होंने पसंद किया। अब वह राजा को अपना बनाया नमूना दिखाने के लिए बेचैन था।

राजा ने अब तक आशा ही छोड़ दी थी कि उसके राज्य का कोई बढ़ई वैसा आसन बना सकेगा जैसा वह चाहता था। उसको मोची का नमूना पसंद आया। राजा ने मोची को काफी इनाम देकर विदा किया। फिर उसने उसको शाही सभाओं के लिए काफी संख्या में आसन बनाने का हुक्म दिया। नये आसन बन कर आए और सभा-कक्ष मे लगा दिए गए। अब राजा को उसके लिए नाम की चिंता हुई। क्या कहा जाए उसको ? कोई नाम तो होना ही चाहिए। राजा ने एक सभा की। जब सब लोग नये आसनों पर बैठ गये तो राजा ने उसके लिए अच्छे नाम का सुझाव मांगा। ढेरों प्रस्ताव आने लगे। हर एक कहता, मेरा सुझाव ज्यादा अच्छा है। हर एक आदमी यही चाहता था कि राजा उसका सुझाव स्वीकार

करें और वह उसका कृपापात्र बन जाए। राजा उससे प्रसन्न हो जाए। बहस होने लगी। लोगों के मिज़ाज गरम होने लगे। एक-दूसरे को भला-बुरा कहने लगे। फिर गाली-गलौच की नौबत आ गई। सब लोग यह भूल गए कि राजा वहीं बैठा है। फिर तो स्थिति ऐसी हो गई कि लोग हाथापाई पर उतर आए और जिन नये आसनों के लिए उनसे नाम सोचने को कहा गया था, उन्हें उठा-उठाकर एक-दूसरे पर फेंकने लगे। एक को छोड़कर बाकी सब सीटें टूट-फूट गईं। एक के सिवा और कोई भी साबुत नहीं बची। अब सब उस एक सीट की ओर लपके। हर एक आदमी यह दावा करने लगा कि उस पर बैठने का अधिकार सिर्फ उसको है। राजा चुपचाप बैठा सारा नाटक देख रहा था।

अंत में उसने उन सबको सभा-कक्ष के बाहर निकल जाने का हुक्म दिया।

राजा चिंतित था। नये आसन बनवाने के लिए वह अपने को दोष दे रहा था। जब वह नहीं थे तो कोई समस्या नहीं थी। सारे काम शांति से हो रहे थे। उसने अपने मंत्री से सलाह की। मंत्री ने कहा, "महाराज, उन सज्जनों को कल फिर बुलाया जाए और इस बार उनको बैठने के लिए कोई आसन न दिया जाए।"

दूसरे दिन राजा ने फिर उन सज्जनों को बुलाया। वहां एक भी आसन नहीं था। सब नीचे कालीनों पर बैठ गए। राजा ने जो कुछ पहले दिन हुआ था उसके बारे मे याद दिलाया। उसने फिर से नाम के लिए सुझाव मांगे।

लोगों ने सिर झुका कर, विनय से कहा, "जो भी नाम महाराज देगे वह हमें मंजूर होगा।"

राजा ने मुस्करा कर कहा, "धन्यवाद। नाम का महत्व नहीं हैं। महत्व है इस बात का कि आप लोग वायदा करें कि आसनों को फिर से तोड़ नहीं डालेंगे। करते हैं वायदा?"

उन सज्जनों को अपने व्यवहार पर शर्म आ रही थी। उन्होंने धीरे से कहा, "हां, महाराज।"

सभा भंग हुई। नये आसन बनाने का हुक्म दिया गया।

लेकिन कुर्सी के लिए झगड़े की शुरुआत तो हो ही चुकी थी।

—नेपाल

घोड़े का अंडा

बहुत समय पहले एक अमीर व्यापारी था। उसका व्यापार दिनों-दिन बढ़ता जा रहा था और उसको अक्सर दूर-दूर का सफ़र करना पड़ता था। उसको एक बढ़िया, मज़बूत घोड़े की ज़रुरत थी।

वह घोड़ों के कई बाजारों मे गया। लेकिन उसको कोई भी पसंद नहीं आया। लोगों ने सलाह दी, "अगर बढ़िया घोड़ा चाहते हो तो भुटुआ खरीदो। साधारण घोड़ा जितनी दूरी एक हफ़्ते मे पूरा करेगा, भुटुआ एक दिन में कर डालेगा।"

व्यापारी ने भुटुआ घोड़ा खरीदने का निश्चय कर लिया। वह घोड़े की सबसे बडी मंडी में गया। वह इधर-उधर घूम रहा था कि एक ठग ने, जो कद्दू बेच रहा था, उसको देख लिया। वह ताड़ गया कि आदमी नया है और अनाड़ी है। उसको आसानी से ठगा जा सकता है। वह घूमते-घामते उसके सामने से निकला तो उसने आवाज दी, "हुज़ूर, क्या ढूंढ रहे हैं? क्या चाहिए आपको। मै बड़ी देर से हुज़ूर को देख रहा हूं चक्कर लगाते। मैं कोई मदद कर सकता हूं?"

ठग की नम्रता ने व्यापारी के दिल को छू लिया। उसने कहा, "हां दोस्त, मुझको भुटुआ घोड़े की तलाश है। बता सकते हो कहां मिलेगा?"

"आप ठीक ही जगह पर आए हैं, हुज़ूर। भुटुआ घोडा पहले तो आपको मिलेगा-नहीं। मिल भी गया तो बहुत ज्यादा कीमत होगी। आप एक काम क्यों नहीं करते? मेरे पास भुटुआ घोड़े के अंडे है। एक अंडा ले जाइए। इसमें से जल्दी ही बच्चा निकल आएगा — खूबसूरत और तगड़ा।"

"कितना दाम है एक अंडे का?" व्यापारी ने पूछा।

"सिर्फ एक हज़ार टका*, हुज़ूर।"

व्यापारी ने एक खूब बड़ा, पीला कद्दू खरीद लिया। वह सिक्के गिन रहा तो ठग ने उसको चेतावनी दी, "हुज़ूर, सावधान रहिएगा। अंडे को कंधे पर ही उठाए रखिएगा।

---

* बांगला देश का सिक्का

नीचे रखेंगे तो बछेड़ा निकल कर भाग जाएगा। अच्छा, भगवान आप का भला करे।"

व्यापारी ने कद्दू उठाकर कंधे पर रखा और अपने गांव को चला।

सूरज डूब गया था और अंधेरा होने लगा था। व्यापारी चलता-चलता थक गया था। उससे अब और नहीं चला जा रहा था।

उसने कद्दू को पीपल के एक बड़े पेड़ के नीचे रख दिया, और उसके तने पर पीठ टिका कर सुस्ताने लगा। उसने अपने चेहरे और शरीर से पसीना पोंछा, और आराम करने के लिए आंखे मूंद लीं। उसी समय एक लोमड़ी दौड़ी आई। उसने कद्दू को देखा तो शायद उसको कौतूहल हुआ और उसने जोर से उस पर पंजा मारा। कद्दू फट गया। डर कर लोमड़ी भाग गई।

लोमड़ी के भागने से सूखी पत्तियां जो नीचे फैली थी, चरमरा उठीं। इस गड़बड़ी और आवाज से व्यापारी की आंख खुल गई। उसको एक जानवर को भागते देखा तो समझ बैठा कि अंडा फूट गया और घोड़े का बछेड़ा भाग निकला। वह उसके पीछे भागा। कहने लगा, "अगर यह पैदा होते ही इतनी तेजी से भाग सकता है तो बड़ा होने पर कितनी तेज भागेगा, मैं यह सोच भी नहीं सकता।"

आज तक किसी ने लोमड़ी का इस तरह पीछा नहीं किया था। वह डर कर भूसे के ढेर में छिप गई। व्यापारी भूसी के ढेर पर डंडा मारने लगा।

अब संयोग से उसी ढेर में एक शेर भी था। डंडा शेर को लगा। वह बाहर निकल कर भागा। व्यापारी और भी ज्यादा हैरान हुआ। उसने सोचा, "बछेड़ा कुछ मिनटों में ही इतना बड़ा कैसे हो गया?" वह बहुत खुश था कि उसने अंडा खरीदने की बुद्धिमानी की। यह घोड़ा निश्चय ही उसकी सब से मूल्यवान संपत्ति होगा। बस, उसका पीछा करके पकड़ना भर था।

दौड़ते-दौड़ते शेर भी थक गया था। उसकी रफ़्तार कम हो गई। व्यापारी उसके पास पहुंच गया था। वह उस पर चढ़कर बैठ गया। उसने शेर की पीठ थपथपा कर कहा, "बेटे, अब और शैतानी मत करना। अब अच्छे बेटे बनो और मुझे बहुत जल्दी घर पहुंचा दो।"

अपनी पीठ पर व्यापारी को बिठाए, शेर दौड़ा। रात बीत गई। पौ फटी। पूर्व की तरफ आकाश लाल हो गया था। सोने की थाली जैसा सूरज निकल आया।

जब व्यापारी ने सुबह की रोशनी में देखा कि वह किस पर सवार है तो उसकी जान

निकल गई। वह शेर पर सवार था।

शेर दौड़ता रहा। व्यापारी को अब किसी तरह अपनी जान बचाने की चिंता थी। वह एक पेड़ की नीची डाल को पकड़ कर लटक गया। शेर बेखबर दौड़ रहा था। कुछ देर बाद व्यापारी पेड़ से नीचे गिर पड़ा और उसके पैर में चोट आ गई। वह लगंड़ाता जा रहा था कि रास्ते में कुछ आदमी मिल गए। उनकी मदद से वह घर पहुंचा।

अब तो व्यापारी को "भुटुआ" नाम से चिढ़ हो गई। यह शब्द सुनते ही वह आपे से बाहर हो जाता।

अब वह सिर्फ यही चाहता था कि जिंदगी भर उसको "भुटुआ" शब्द याद न आए।

—बांगलादेश

चीनी गौरैया
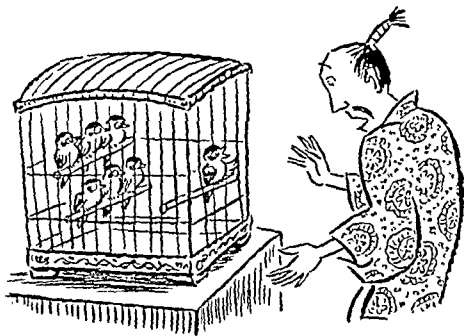
एक बार एक व्यापारी को छः चीनी गौरैया मिल गईं।
"राजा के लिए यह बहुत बढ़िया सौगात होगी।" उसने सोचा। वह जानता था कि राजा बहुत अंधविश्वासी है और हमेशा शकुन-अपशकुन की चिंता में रहता है। हो सकता है छः चिड़िया देना वह अशुभ समझे। उसने एक जापानी गौरैया भी उनमें मिला दी ताकि उनकी संख्या सात हो जाए और सात की संख्या शुभ है।

राजा इतनी असाधारण सौगात से बहुत प्रसन्न हुआ। उसने चिड़ियों की बहुत प्रशंसा की और हर एक को ध्यान से देखने लगा।

"बड़ी अजीब बात है!" राजा ने कहा, "इनमें एक जापानी लगती है।"

व्यापारी को समझ में नहीं आया कि क्या कहे। वह डर गया और सिर झुका लिया लेकिन जापानी गोरैया अपनी चोंच खोलकर बोल पड़ी, "महाराज, मैं दुभाषिया हूं।"

—जापान

पहेलियां

(उत्तर पृष्ठ 100 पर)

1. वह कौन है जो सारा दिन दोनों हाथों से अपना-मुंह पोंछता रहता है?

—कोरिया गणतंत्र

2. मैं उसको देखता हूं, लेकिन वह मुझको नहीं देखता।

—बर्मा

3. चोर किन चार अक्षरों से डरता है?

—पपुआ न्यू गिनी

4. गोरा आदमी, काला हैट।

—श्रीलंका

5. एक औरत मुकुट पहनती है
और उसके सारे बदन पर आंखें हैं।

—फिलिपीन्स

6. आकाश मे ऊंचा उड़ते हैं
कायदे से बंधे
बसंत मे उत्तर की ओर चले जाते है
जाड़ों में दक्षिण में रहते है।

—चीन

7. चट्टान फट गई और चट्टान निकली
वह चट्टान फट गई, चांदी निकला,
चांदी के कुएं में पानी निकला।

—श्रीलंका

8. बताओ, मै कौन हूं?
सफेद पेटिकोट पहनती हूं, मेरी नाक लाल है
जितना खड़ी रहती हूं, उतनी ही छोटी होती जाती हूं
कौन हूं मैं?

—पपुआ न्यू गिनी

9. जो अंदर गया है, वह नहीं जानता
जो कभी अंदर नहीं गया, वह जानता है।

—रूस

10. उसके तीन नाके हैं, और दस टांगों पर चलता है
चार जीभें हैं जहां नाकें मिलती हैं।

—[illegible]
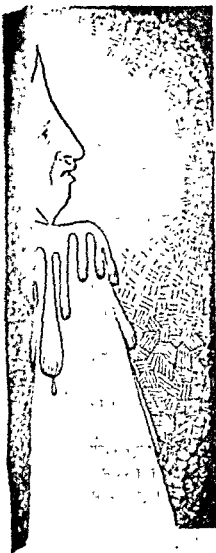
11. बूंदें तो अनगिनत हैं, पर कुल मिलाकर एक।
वह बंदर की तरह कूद सकता है, लेकिन
दरवाजे पर नहीं चढ़ सकता,
वह जीवन देता है और उसकी रक्षा करता है।
हम उससे प्यार करते हैं, घृणा भी
यह आकाश से आता है लेकिन, उसका जन्म
वहां नहीं होता।
यह बड़े आराम से नीचे उतरता है।
आश्चर्य, कुछ लोग उससे डरते हैं।
अगर हमने बचाव नहीं किया तो
ठंड से कांपने लगेंगे।

—मलेशिया

12. छुओ तो है, इधर-उधर देखो तो गायब।

—इंडोनेशिया

13. कली के रूप में वह दिल है
पकने पर कंघी।

—फिलीपीन्स

14. एक जानवर ऐसा जिसे दुम पर पैसा
सर पर है ताज भी बादशाह के जैसा।

—भारत

उम्र लंबी करने वाले आड़ू

एक बार चीन के राजा ने अम्मन के राजा को बहुत बड़े-बड़े आड़ू भेजे जिनको उम्र बढ़ाने वाले आड़ू कहा जाता था।

जब उपहार लाया गया तो दरबार लगा हुआ था। दरबारी उस असाधारण फल को देखने के लिए एक दूसरे पर टूट पड़े। ट्रेग क्विन भी वहां मौजूद था क्योंकि वह भी एक दरबारी था। उसने आगे बढ़कर एक आड़ू उठा लिया, उसको मुंह के पास ले गया और उसका मजा लेते हुए दांत से एक टुकड़ा काट लिया।

राजा गुस्से से कांपने लगा। "गिरफ़्तार करो इस अभागे को।" राजा ने आज्ञा दी। "सिर काट दिया जाए इसका।"

दरबार के सिपाहियों ने ट्रेग क्विन को गिरफ़्तार कर लिया। उसकी आंखों से बाल्टी भर-भर आंसू गिरने लगे। राजा चिल्लाया, "तुम्हारी हिम्मत कि तुम अपने राजा के लिए भेजी गई चीज को चखो? इस अपराध की सज़ा मौत है। कायर! बदमाश! मरने से घबराता है!"

"नहीं, अन्नदाता", ट्रेग क्विन ने कहा। वह और भी ज्यादा रो रहा था। "मैं तो आपके लिए रो रहा हूं। क्योंकि आपकी मृत्यु शीघ्र ही हो जाएगी।"

"पागल! बेवकूफ! क्या बकता है? यह तुझसे किसने कहा कि मैं जल्दी मर जाऊंगा?" राजा ने और भी गुस्से से पूछा।

"महाराज, यह सुनकर कि ये आड़ू उम्र बढ़ाने वाले आड़ू कहलाते है, मैं एक खाना चाहता था ताकि जितने साल हो सके, जिंदा रहूं। मैंने तो अभी चौथाई फल भी नहीं खाया था कि बिना किसी सूचना के मृत्यु ने आकर मेरी गर्दन दबोच ली। इसीलिए मैं

(पृष्ठ 98-99 के उत्तर)

1. घड़ी 2 शीशा, 3 (ओ, आई सी यू), 4 माचिस की तीली, 5. अनन्नास, 6 जंगली हंस 7. गोरिल्ला, 8 मोमबत्ती, 9 ताबूत, 10 दो बैलों से हल चलाता आदमी, 11. मगरमच्छ, 12 कान 13 केला 14 [illegible]।

सोचकर डर रहा था कि अगर महाराज ने सारे आड़ू खा लिए तो भगवान जाने उनका क्या होगा!"

"छोड़ दो बदतमीज़ बदमाश को।" राजा उसकी हाजिर जवाबी पर मुस्करा कर बोला।

—[illegible]

शेर और किशमिश

एक गांव था—छोटा-सा, सोता हुआ-सा। उसके चारों ओर पहाड़ियां थी।

गांव के पीछे पहाड़ी पर एक शेर रहता था। जब भी वह सबसे ऊंचे चढ़ कर गरजता गांव के लोग डर के मारे कांपने लगते।

जाड़े की एक रात को जब सारी दुनिया बर्फ से ढंकी जान पड़ती थी, शेर नीचे उतरा। उसने कई दिनो से कुछ खाया नहीं था, और बेहद भूखा था।

वह शिकार की ताक मे घूम रहा था कि एक घर की खिड़की के नीचे पहुंच गया। अंदर बत्ती टिमटिमा रही थी।

अचानक एक छोटा बच्चा रोने लगा आं... आं... आं। वह लगातार रोता जा रहा था।

शेर इधर-उधर देखता मकान के अंदर घुसने ही वाला था कि एक औरत की आवाज सुनाई दी। वह कह रही थी, "चुप रहो। देखो लोमड़ी आ रही है। बाप रे, कितना बड़ा मुंह है इसका। कितना डर लगता है उसको देखकर!" लेकिन बच्चे ने रोना बंद नहीं किया। मां ने फिर कहा, "लो, वह भालू आ गया। भालू खिड़की के बाहर है। बंद करो रोना।"

लेकिन बच्चे का रोना बंद नहीं हुआ। डराने का कोई असर नही पड़ा।

खिड़की के नीचे बैठा शेर सोच रहा था, "अजीब बच्चा है यह! काश मै उसको देख सकता। न यह लोमड़ी से डरता है, न भालू से।"

उसे फिर से बहुत जोर से भूख लग गई। शेर खड़ा हो गया। बच्चा अभी भी रोए जा रहा था।

"देखो-देखो...", मां की आवाज़ आई, "शेर आ गया शेर! वह रहा खिड़की के नीचे।"

लेकिन बच्चे का रोना फिर भी बंद नहीं हुआ। यह सुन कर शेर को इतना ताज्जुब हुआ और इतना डर गया कि वह वहीं गिर कर बेहोश-सा हो गया।

"वह कैसे जान गई कि मैं यहां हूं?" शेर ने सोचा।

ज़रा देर बाद उसने सांस ली और फिर खिड़की के अंदर झाका।

बच्चा अभी भी रो रहा था। लगता तो नहीं था कि उसको शेर का नाम सुन कर ज़रा-भी डर लगा।

शेर ने आज तक कोई ऐसा जीव नहीं देखा था जो उससे न डरता हो। वह तो यही समझता आया था कि उसका नाम सुन कर ही दुनिया के सारे जीव डर से कांपने लगते हैं। लेकिन इस विचित्र बच्चे ने कोई परवाह नहीं की। उसे किसी चीज का भी डर नहीं है, शेर का भी नहीं।

अब शेर को चिंता होने लगी। उसी मिनट मां की आवाज़ फिर सुनाई दी, "लो... अब चुप रहो। यह देखो, किशमिश!" बच्चे ने फौरन रोना बंद कर दिया। बिल्कुल

सन्नाटा छा गया। यहां तक कि सांस की आवाज़ भी नहीं सुनाई दे रही थी।

शेर ने सोचा, "यह किशमिश कौन है ? खूंख्वार होगा।" शेर को चिंता भी हुई और डर भी लगा।

उसी समय कोई भारी चीज़ उसकी पीठ पर धम्म से गिरी। शेर जान ले कर भागा। उसने सोचा कि उसकी पीठ पर कूदनेवाला किशमिश के सिवा और कोई नहीं हो सकता।

असल में उसकी पीठ पर कूदा था एक चोर जो उस घर से गाय-भैंस चुराने आया था। अंधेरे में शेर को गाय समझ कर वह छत पर से उसकी पीठ पर कूदा था।

डरा तो चोर भी। उसकी तो जान ही निकल गई जब उसने जाना कि जिस जानवर की पीठ पर वह सवार है वह गाय नहीं, शेर है।

शेर बहुत तेज़ दौड़ा जिससे किशमिश नीचे गिर पड़े। लेकिन चोर शेर की पीठ को कस कर पकड़े रहा क्योंकि वह जानता था कि ज्योंही वह नीचे गिरेगा, शेर उसके टुकड़े-टुकड़े कर डालेगा।

शेर अपनी जान को डर रहा था और चोर अपनी जान को। पौ फट गई। भाग्य से चोर ने एक पेड़ की लटकती हुई डाल देख ली। बस, वह उसे पकड़ कर पेड़ पर चढ़ गया और डालो के बीच छिप गया। शेर की पीठ से छुटकारा पाकर उसने चैन की सांस ली।

शेर ने भी चैन की सांस ली। "भगवान को धन्यवाद मेरी जान बचाने के लिए। किशमिश तो सचमुच भयानक जीव है।"

वह वापस पहाड़ी पर अपने घर मे चला गया।

—कोरिया गणतंत्र

नस की लम्बाई

मलिन साबर के दांत में बहुत ही ज्यादा दर्द हो रहा था। वह बाजार में मिलने वाली सब तरह की दवाइयां आज़मा चुका था, लेकिन उनसे फायदा नहीं हुआ। एक-दो रोज के बाद दर्द लौट आता। उसने गाव के वैद्य की दवा भी ली लेकिन फायदा नहीं हुआ। वह बड़बड़ाता, "आजकल रोज़ी-रोटी कमाना ही कठिन नहीं हो गया है, दवाइयों का असर भी अब वैसा नहीं होता।

"दांत के डाक्टर के पास क्यों नहीं जाते ? एक मिनट में ठीक हो जाओगे," एक पुराने शिक्षक ने कहा।

"पता नहीं, श्रीमान। मैं दांत के डॉक्टर के पास जाने को तैयार नहीं हूं। वह दात उखाड़ देगा या सुइयां चुभायेगा, या काटा-कूटी करेगा। कहीं गलत काट दिया तो और भी तकलीफ होगी। क्या पता, मुझे अपाहिज ही बना दे।" मलिन साबर ने कहा।

लेकिन एक दिन दर्द भड़क उठा।

जब तकलीफ सही नही गई तो मलिन साबर ने सोचा, "दांत के डॉक्टर के पास जाना ही होगा, चाहे मैं मर ही जाऊं।" जिस गाल में दर्द था उसे हाथ से दबाए वह डॉक्टर के पास गया।

"नमस्ते, डॉक्टर साहब ! कृपा कर के मेरे दांत का कुछ कीजिए," उसने डॉक्टर से कहा।

डॉक्टर ने कहा, "चिंता मत कीजिए। लेकिन आपको कुछ देर प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।"

मलिन साबर कराहता हुआ बेंच पर बैठ गया। दूसरे कमरे से एक मरीज़ की चीखें सुनाई दे रही थीं। सुन कर मलिन साबर के तो हाथ-पांव ठंडे हो गए। वह डर से कांपने लगा, और सोच ही रहा था कि वहां से खिसक जाए जब उस कमरे का दरवाज़ा खुला और डाक्टर ने उसको अंदर आने को कहा।

मलिन साबर का दिल बुरी तरह धड़क रहा था और शरीर कांप रहा था। वह पछता रहा था कि यहां आया ही क्यों।

"यहां बैठिए।" डॉक्टर ने एक कुर्सी दिखाकर कहा और अपने औज़ारों को तैयार करने लगे।

रोशनी मे डॉक्टर के औज़ारों को चमकते देख, मलिन साबर और भी कांपने लगा। डॉक्टर एक औजार हाथ में लिए उसके पास आ कर बोला, "अच्छा, अपना मुंह पूरा खोलिए।"

"नहीं, नहीं, दांत मत उखाड़िए, डॉक्टर। मेरे ऊपर दया कीजिए," कांपती आवाज़ में मलिन साबर ने कहा।

कुछ नाराज होकर डॉक्टर ने कहा, "फिर और क्या चाहते हो मुझसे?"

"कोई दवा दे दीजिए।"

"सुनों, मुंह खोलो... जल्दी," डॉक्टर ने हुक्म दिया।

मलिन साबर ने जबड़े और भी कस कर भींच लिए।

लेकिन डॉक्टर और प्रतीक्षा करने के लिए तैयार नहीं था। उसने मलिन साबर का जबडा पकड़ कर उसका मुंह खोल दिया।

मलिन साबर अभी भी अपना मुंह पूरा खोलने को तैयार नहीं था। तब डॉक्टर ने अपनी नर्स को कुछ हिदायत दी।

नर्स ने पीछे से एक सुई मलिन साबर की पीठ में चुभो दी।

"आह!" डर से मलिन साबर चिल्लाया। उसका मुंह पूरा खुल गया। डॉक्टर ने फ़ौरन अपने औजार उसके मुंह में डाले और जिस दांत में दर्द था, उसे उखाड़ दिया।

आवश्यक उपचार करने के बाद डॉक्टर ने हंस कर कहा, "अब घर जा सकते हो।"

"तुम कहां गए थे, मलिन साबर?" किसी ने उससे पूछा।

"डाक्टर के पास, दांत निकलवाने।"

"दर्द हुआ?"

"दर्द क्यों नहीं होगा? मैं तो मर ही गया था समझो। नस इतनी लंबी थी कि यहां तक पहुंचती थी।" अपनी पीठ मलते हुए उसने कहा।

—इंडोनेशिया

ईरावदी को पार करना

बोदापाया बर्मा के अंतिम राजाओं में से एक था। वह बहुत शक्तिशाली शासक था और उसकी सेना भी बहुत शक्तिशाली थी। उसने कई लड़ाइयां लड़ीं और जीतीं। उसके शासनकाल में बर्मा सबसे बड़ा और शक्तिशाली देश बन गया। यह सारा कुछ इसलिए हो सका क्योंकि वह इतना महान नेता था। लेकिन वह नेक और बुद्धिमान भी था। उसने बड़े-बड़े बौद्ध मंदिर बनवाए और वह बौद्ध भिक्षुओं का बड़ा सम्मान करता था। '' वह स्कूल के अपने पुराने साथियों की भी बहुत देखभाल करता था। उनमें से एक मित्र का नाम था यू पॉ यू। जब दोनों छोटे थे तो दोनों ने एक ही भिक्षु से शिक्षा पाई थी। वह साथ-साथ बड़े हुए थे और इतने सालों के बाद भी उनकी मित्रता वैसी ही बनी हुई थी।

एक दिन राजा बोदापाया अपने साथियों को लेकर ईरावदी नदी के किनारे पिकनिक के लिए गया। ईरावदी बर्मा की सबसे बड़ी नदी है। उसे बर्मा के लोग "मां ईरावदी" कहते हैं जैसे भारत के लोग गंगा माता को "गंगा माता" कहते है। जिस जगह राजा और उसके साथी पिकनिक कर रहे थे वहां नदी का पाट बहुत चौड़ा था।

दिन बीत रहा था। राजा का मन अब ऊब गया था। वह नदी के उस पार वाले किनारे को ध्यान से देख रहा था। शायद वह अपने मित्र यू पॉ को छेड़ना चाह रहा था जा अब मंत्री और दरबार का विदूषक भी था। राजा बहादुर और बुद्धिमान था तो मंत्री यू पॉ हाज़िरजवाब।

राजा ने पूछा, "यू पॉ, तुम्हारा क्या ख्याल है ? तुम ईरावदी को पार कर सकते हो ?"

यू पॉ ने तुरंत जवाब दिया, "बेशक, महाराज !"

"चलो भी यू पॉ ! मैं जानता हूं कि तुम हमेशा मुझको खुश करने की कोशिश करते हो। और मैं तुम्हारे मज़ाक पर हंसता भी हूं। लेकिन यह हंसी की बात नहीं है। भूल जाओ।" राजा ने कहा।

"लेकिन, महाराज," मैं सचमुच नदी पार कर सकता हूं।"

उसकी बात सुन कर राजा मुस्करा पडा।

यू पॉ वड़े घमड मे उसी बात को बार-बार दोहराता रहा।

"अच्छा, यू पॉ, तुम कहते हो न कि नदी को पार कर सकते हो? तो अभी करो।"

राजा का हुक्म पाते ही यू पॉ ने अपनी लुंगी टागों के ऊपर तक समेट ली। उसके किनारे को पीछे कमरबद में खोंस लिया। अब वह अपना करतब दिखाने को तैयार था।

राजा बराबर मुस्कराता रहा और उसको देखता रहा।

तब मंत्री यू पॉ बालू पर आगे-पीछे दौड़ने लगा। कभी इधर देखता, कभी उधर। कुछ देर बाद राजा ने पूछा कि वह कर क्या रहा है।

मंत्री ने जवाब दिया, "महाराज, मैं नाव ढूंढ़ रहा हूं।"

राजा ने कहा, "वाह, यू पॉ! नाव से तो कोई भी साधारण आदमी नदी को पार कर सकता है।"

यू पॉ ने घुटने के बल बैठ कर, माथा बालू में छुआया और राजा की आंखों से आंख मिलाकर बोला, "मैं तो साधारण आदमी ही हूं, महाराज!"

—बर्मी

चांद को बचानेवाला आदमी

एक दयालु आदमी ने कुएं में झांका तो चांद की परछाई देखी।

"हे मेरे खुदा! चांद तो कुएं में गिर पड़ा," उसने बड़े दुख से कहा, और भाग कर एक रस्सी ले आया जिसके सिरे पर एक बड़ा-सा हुक बंधा हुआ था। जल्दी से उसने रस्सी कुएं में उतारी। दूसरे सिरे को वह कस कर पकड़े रहा। रस्सी कुएं की तह तक पहुंच गई और उसमे बंधा हुआ हुक एक पत्थर से टकराया। पत्थर उसमें फंस गया। यह सोच कर कि हुक में चांद फंस गया है, उस भले आदमी ने पूरा जोर लगाकर रस्सी को उपर खींचना शुरु किया। उसने इतना ज़ोर लगाया कि रस्सी बीच में ही टूट गई और वह पीठ के बल धड़ाम से इतने जोर से गिरा कि बेहोश हो गया। होश आने पर सब से पहले उसने देखा कि चांद ऊपर आसमान में चमक रहा है। भले आदमी ने दर्द से कराहते हुए कहा, "मेरी पीठ टूट गई, लेकिन कोई बात नहीं। शुक्र है खुदा का कि चांद तो बच गया!"

—ईरान

जब खाना खत्म हो गया तो अमीर आदमी ने उसको उसके वायदे की याद दिलाई। मेहमान ने कहा, "आइए मेरे साथ। वह पौधा इस मोहल्ले में ही है।" वे दोनों लुक-छिप कर साथ-साथ निकले।

जब गाव कुछ ही दूर रह गया तो उस आदमी ने धान के खेत की ओर इशारा किया। "यह रहा वह चमत्कारी पौधा," उसने कहा।

"क्या? धान? तुम मजाक कर रहे हो क्या?"

"नहीं, बिल्कुल नहीं। अगर आपके घर मैंने अभी चावल न खाया होता तो मैं अब तक मर गया होता।"

और वह धूर्त भाग खड़ा हुआ।

—वियतनाम

सात बुद्धिमान जुलाहे

बहुत समय पहले किसी गांव में सात बुद्धिमान जुलाहे रहते थे। वे सातों जुलाहों की बिरादरी में सब से अधिक बुद्धिमान माने जाते थे। मुसीबत पड़ने पर लोग उनके पास सलाह-मशविरे के लिए आते थे। इस तरह वह केवल अपने गांव में ही नहीं, आस-पड़ोस के गांवों में भी मशहूर हो गए।

उनका मुखिया उनमें सबसे अधिक बुद्धिमान था। उसका पिता भी जुलाहों का मुखिया था। उसने अपने बेटे को कम उम्र में ही शिक्षा के लिए शहर भेज दिया था जिससे वह योग्य मुखिया बन सके।

एक दिन नौजवान जुलाहा शहर जाते हुए बाजार में पहुंचा जहां उसने किसी छोटी, गोल भूरी चीज़ के ढेर के ढेर देखे। लोग उसे बहुत खरीद भी रहे थे। उसको समझ में नहीं आया कि यह चीज क्या है। उसने एक आदमी से पूछा, "भाई, यह क्या चीज़ है जिसे हर आदमी खरीद रहा है?" वह आदमी समझ गया कि यह कोई गंवार देहाती है। उसने कहा, "यह आलू है।"

नया ज्ञान प्राप्त करके नौजवान जुलाहा बहुत खुश हुआ। चलते-चलते वह शहर मे पहुंचा तो अजीब बड़ी-बड़ी चीजे देखीं जो अलग-अलग आकार, रंग और नमूने की थीं। उनमें बहुत-से लोग आ जा रहे थे। जुलाहे ने एक राहगीर से पूछा, "ये क्या है?" राहगीर ने सोचा, "किस गंवार से पाला पड़ा!" उसने कहा, "ये इमारत है बेवकूफ! लोग इसमें रहते हैं।" और वह आगे बढ़ गया।

जुलाहे पर बहुत रोब पड़ा। ये घर लकड़ी, बांस और जूट की टहनियों से नहीं बने थे, जैसे उसके गांव के घर थे। वह खुश था कि उसको इतना ज्ञान प्राप्त हो रहा है। लेकिन उसको डर था कि कहीं उसका यह नया ज्ञान उसकी नाक या कान के रास्ते न उड़ जाए। सो उसने अपने कानों और नाक के अंदर रुई डाल ली।

जुलाहा जब घर वापस पहुंचा तो उसका खूब स्वागत हुआ। उसका बाप मर गया तो

वह जुलाहों का मुखिया बना। शहर में उस शिक्षित जुलाहे के अलावा और कोई इस योग्य नहीं समझा गया।

एक दिन उस गांव से हाथी गुजरा। गांववालों ने इतना अजीब जानवर पहले कभी नहीं देखा था। मुखिया को बुलाया गया। उसने कुछ देर तक हाथी को ध्यान से देखा। वह उन विचित्र चीजों को याद करने लगा जो उसने शहर में देखी थी। उसको चीजें भी याद थीं, और नाम भी। लेकिन उसको यह याद नहीं रहा कि किस चीज का कौन-सा नाम है। वह उलझन में पड़ गया। इधर लोग इस राक्षस जैसे विचित्र जानवर का नाम जानने को अधीर हो रहे थे। मुखिया ने बड़े जानकार की तरह कहा, "यह या तो आलू है या इमारत।" लोगों पर उसका रोब पड़ गया।

मुखिया लोगों की समस्याओं को इसी प्रकार सुलझाता रहा। लेकिन जल्दी ही उसको यह मालूम हो गया कि रोज़ी कमाने के लिए भी कुछ करना पड़ेगा और दूसरों की तरह काम-धंधा करने के लिए घर छोड़ना पड़ेगा। वह खेती नहीं करना चाहता था क्योंकि वह समझता था कि यह मुखिया की शान के खिलाफ होगा। उसने तिजारत करने की सोची। उसने तिजारत में हिस्सेदार बनने के लिए छः बुद्धिमान जुलाहों को चुना। उनमें से एक कुछ बुद्धू माना जाता था। सातों भागीदार पक्के दोस्त बन गए। वे हमेशा साथ रहते। उन सब को नाच-गाने का बहुत शौक था। कहीं भी नाच-गाना होता तो वे वहां पहुंच जाते। चाहे जितनी दूर हो।

एक बार पचास मील दूर एक गांव में "यात्रागान" (नाच और गाने का समारोह) होनेवाला था। वे वहां पहुंच गए और उनको बहुत आनंद आया।

तड़के सुबह वे वापस घर चले तो जाड़े की चांदनी रात थी।

हंसते-बोलते वे चले आ रहे थे कि रास्ते में एक लंबा-चौड़ा खेत पड़ा। किसी समय वहां एक नदी होती थी। अब वह सूखा खेत था, जिस पर ओस चमक रही थी। एक जुलाहे ने आश्चर्य से कहा, "हे भगवान, यहां नदी कहां से आ गई? क्या हम रास्ता भूल गए?"

बहुत बहस के बाद वे इस फैसले पर पहुंचे कि नदी को पार करने के अलावा और कोई उपाय नहीं है। उसके बाद वे अपने गांव के ठीक रास्ते का पता लगा सकते हैं। घुटने तक अपने कपड़े समेट कर वे साथ-साथ ओस से ढके खेत में कूद पड़े। जो जुलाहा बुद्धू समझा जाता था, उसने कहा, "मुखिया जी, पानी तो धरती की तरह सख्त

है।" औरों ने भी यही कहा तो मुखिया ने डाँट दिया, "मुर्ख, क्या तुम देख नहीं सकते कि पानी जम गया है? वह सख्त तो होगा ही। अब समय बर्बाद मत करो। जल्दी-जल्दी तैरो और उस पार पहुंचो।"

वे नाव से बाज़ार पहुंचे। मुखिया नाव के पीछे वाले हिस्से में बैठा था और पतवार संभाले था। दूसरे लोग खाना पका रहे थे। एक मसाला पीस रहा था। अचानक मूसल उसके हाथ से छूट कर पानी में गिर पड़ा। एक दूसरे जुलाहे ने चटपट चाकू से नाव पर निशान बना दिया। नाव बाजार मे पहुंची तो वह पानी में उतरा और मूसल ढूढने के लिए नाव पर बनाए निशान की सीध में चलने लगा। उसके और साथी उसके पीछे हो लिए। जब मूसल नहीं मिला तो मुखिया गुस्से से बोला, "मैं जानता हूं, तुमने निशान ठीक जगह पर नहीं लगाया होगा। वर्ना मूसल के न मिलने की कोई वजह नहीं है।"

बहुत-से व्यापारी अपनी-अपनी नावों में बाजार पहुंच गए थे और बड़ी गहमा-गहमी थी। कोई धान खरीद रहा था, कोई बेच रहा था। एक व्यापारी जुलाहों की नाव के पास आया। वह उनका धान खरीदना चाहता था।

उसने कहा, "रुपये के बीस सेर खरीदूंगा। इसी भाव पर औरों से भी लिया है। ठीक है न?" लेकिन मुखिया को गुस्सा आ गया। उसने कहा, "मैने अभी-अभी तुमको दूसरे आदमी से रुपये का आधा मन खरीदते देखा था। क्या तुम हमको इतना बेवकूफ समझते हो कि हम कम दाम पर बेचने को तैयार हो जाएंगे? मैं तो वही दाम लूंगा जो तुमने उसको दिए थे। लेना हो तो लो, वर्ना छोड़ दो।"

दूसरे जुलाहों ने भी अपने मुखिया का साथ दिया और व्यापारी से झगड़ने लगे। सिर्फ मूर्ख जुलाहा कुछ नहीं बोला।

व्यापारी चकित रह गया। उसको कुछ समझ नहीं आ रहा था कि जुलाहा इतने भडक क्यों उठे। उसने पूछा, "सुनो, तुम लोगों को क्या चाहिए? शांत हो जाओ और अपना दाम बताओ।" लेकिन मुखिया बोलता गया, "क्या तुम समझते हो कि हमारा धान घटिया है? अगर तुमको हमारा धान खरीदना है तो आधे मन का एक रुपया देना पडेगा। समझे?"

अब व्यापारी को समझ में आया कि उसका पाला मूर्खों मे पड़ा है। उसने हंस कर कहा, "अच्छा भाई, तुम जो चाहते हो वही दूंगा।" उसने धान खरीदा और बोरियां उठवाने के लिए अपने मज़दूरों को बुलाने गया तो मुखिया ने घमंड से अपने साथियों से

कहा, "देखा, हमसे चालाकी करने की कोशिश कर रहा था। वह समझता था मैं उसकी चालाकी नहीं पकड़ सकूंगा। देखा, मैंने उसको कैसा घेरा? घबरा गया। बगलें झांकने लगा!"

उसके साथी उसकी तारीफ करने लगे। सिर्फ मूर्ख जुलाहा कुछ नहीं बोला। वह सोचता रहा कि अगर मैंने कुछ कहा तो डांट पड़ेगी। पर हिम्मत जुटाकर उसने पूछ ही लिया, "मुखिया जी, मैं तो मूर्ख हूं... कुछ नहीं जानता... बीस सेर और आधा मन मे क्या फर्क है?"

"बहुत फर्क है। तुमको समझ में नहीं आएगा।" मुखिया ने झिड़क दिया। वह चुप हो गया।

कुछ दिनों बाद जुलाहे अपनी नाव में फिर मंडी गए। चलने के पहले उन्होंने हमेशा की तरह नाव पर पानी छिड़क कर भगवान से सकुशल यात्रा पूरी करने की प्रार्थना की और नाव खोल दी। किसी ने इस पर ध्यान नहीं दिया कि नाव का लंगर तो उठाया नहीं जो नदी की तह में पड़ा था और एक लम्बी रस्सी के एक सिरे से बंधा था। वह ठहरी नाव को खेते रहे। थोड़ी सी जगह के अंदर नाव आगे-पीछे जाती रही, लेकिन उन मूर्खों को पता नहीं चला और वे आनंद से "हैय्या-रे, हैय्या रे हैय्या" चिल्लाते रहे।

सारी रात नाव खेने के बाद वे थक गए। पौ फटने लगी थी। वे चिलम पीने बैठे लेकिन उन्होंने देखा कि उनकी छोटी-सी बोरसी मे आग बुझ चुकी थी। मुखिया ने नाव किनारे लगाई और पास के किसी घर से आग मांगने चला।

सब-कुछ जाना-पहचाना लग रहा था। "कितनी अजीब बात है" उसने सोचा, "यह घर तो बिल्कुल मेरे घर जैसा है, बांस का झुरमुट, पेड़, गौशाला, घर का सामने वाला दरवाजा, सब-कुछ। ज़रूर इस घर के मालिक ने मेरे मकान को देखकर उसकी नकल की है।" यह सोच कर वह बहुत खुश हुआ। उसने आगे बढ़कर पुकारा, "मां, हम अजनबी हैं। चिलम के लिए थोड़ी आग दोगी?"

जो स्त्री दरवाजा खोलकर बाहर निकली वह उसकी पत्नी ही थी। लेकिन जुलाहा बोलता गया, "मां, हम अजनबी हैं। चिलम के लिए थोड़ी आग दे दो, मां।"

पत्नी ने माथे पर हाथ मार कर कहा, "सत्यानाश! पागल हो गए हो क्या जो अपनी पत्नी को मां कह कर पुकार रहे हो?"

जुलाह को झटका लगा और उसके होश-हवास ठिकाने आ गए। "हे भगवान,"

उसने सोचा, "यह तो सचमुच मेरी पत्नी ही है।" वह चकरा गया। उसको समझ में नहीं आया कि रात भर नाव खेने के बाद वह उस जगह कैसे पहुंच गया जहां से वह चला था। वह इसी उलझन में पड़ा अपनी नाव के पास पहुंचा। साथियों के पूछने पर कि क्या हुआ, उसने कहा, "लगता है कि कोई दुष्ट प्रेत हमारे साथ चाल चल रहा है। उसने हमारी नाव की दिशा ही बदल दी है।"

मूर्ख जुलाहे ने एक बार फिर अपनी चुप्पी तोड़ी। हिचकिचाते हुए उसने कहा, "मुखिया जी, मैं समझता हूं कि हम लोग बिना लंगर उठाए ही सारी रात नाव खेते रहे हैं।"

मुखिया को बहुत गुस्सा आया। उसने उसे डांटते हुए कहा, "तुम हमेशा मूर्ख बने रहोगे। यह प्रेत-लीला है। भगवान का धन्यवाद करो कि प्रेत ने हमारी नाव नहीं उलटा दी।" डांट खाकर बेचारा मूर्ख जुलाहा फिर चुप हो गया। उसको विश्वास नहीं हुआ, लेकिन उसकी किसे परवाह थी? वह तो मूर्ख माना जाता था।

मुखिया की बुद्धिमानी की बहुत प्रशंसा हुई। और सातों जुलाहे गांव के सब से बुद्धिमान आदमी कहलाते रहे।

---बांगलादेश

जैसे को तैसा

एक जमींदार के लिए उसके कुछ किसान एक भुना हुआ मुर्गा और एक बोतल फल का रस ले आए। जमींदार ने अपने नौकर को बुलाकर चीजें उनके घर ले जाने को कहा। नौकर एक चालाक, शरीर लड़का था। यह जानते हुए जमींदार ने उससे कहा, "देखो, उस कपड़े में जिंदा चिड़िया है और बोतल में ज़हर है। खबरदार, जो रास्ते मे उस कपड़े को हटाया, क्योंकि अगर उसने ऐसा किया तो चिड़िया उड़ जाएगी। और बोतल सूंघ भी ली तो तुम मर ज़ाओगे। समझे?"

नौकर भी अपने मालिक को खूब पहचानता था। उसने एक आरामदेह कोना ढूंढा और बैठकर भुना मुर्गा खा गया। उसने बोतल में जो रस था वह भी सारा पी डाला। एक बूंद भी नहीं छोड़ा।

उधर जमींदार भोजन के समय घर पहुंचा और पत्नी से भोजन परोसने को कहा। उसकी पत्नी ने कहा, "जरा देर ठहरो। खाना अभी तैयार नहीं है।" जमींदार ने कहा, "मैंने जो मुर्गा और रस की बोतल नौकर के हाथ भेजी थी, वही दे दो। वही काफी है।" उसके गुस्से की सीमा न रही जब उसकी पत्नी ने बताया कि नौकर तो सुबह का गया अभी तक लौटा ही नहीं।

बिना कुछ बोले गुस्से से भरा जमींदार अपने काम की जगह वापस गया तो देखा नौकर तान कर सो रहा है। उसने उसे लात मार कर जगाया और किसान द्वारा लाई गई भेंट के बारे में पूछा।

लड़के ने कहा, "मालिक, मैं घर जा रहा था तो इतने ज़ोर की हवा चली कि मुर्गे के ऊपर ढ़का कपड़ा उड़ गया और जैसा आपने कहा था, वह भी उड़ गया। मुझको बहुत डर लगा कि आप सज़ा देगे और मैने उससे बचने के लिए बोतल में जो ज़हर था वह पी लिया। और अब यहां लेटा-लेटा मौत के आने का इंतजार कर रहा था।"

—ईरान

जुआन तमाद और पिस्सूमार दवा

एक बुरी आदत से दूसरी बुरी आदत पैदा होती है। यही हुआ जुआन तमाद के आलस्य के साथ। उसका सिर्फ शरीर ही आलसी नहीं था, दिमाग भी सुस्त था। उसको सच बोलना कठिन लगता था, इसलिए झूठ का सहारा लेता था। झूठ बोलना उसको आसान लगता था क्योंकि यह उसका स्वभाव बन गया था।

एक दिन उसकी मां ने उसको एक बर्तन खरीदने के लिए पास की बस्ती मे भेजा। वस्ती मे बहुत पिस्सु थे। मालूम नहीं कहां से आते थे। नन्हें-नन्हें पिस्सू किसी की टांगों पर चढ़ जाते, बालों में घुस जाते और इतनी खुजली होती कि वह खुजाते-खुजाते पागल हो जाता। भयंकर थी वह तकलीफ।

जुआन ने एक अच्छा-सा बर्तन खरीदा और घर की ओर चला। रास्ते में एक पिस्सू उसके कपड़ों में घुस गया और उसको काट लिया। वह चीख पड़ा। फिर तो इतनी खुजली हुई कि वह कभी उछलता, कभी भागता, कभी नाचने-सा लगता। इस गड़बड़ी में वर्तन नीचे गिर गया और चूर-चूर हो गया।

टूटे बर्तन के टुकड़ों के सामने बैठ कर जुआन मां के क्रोध की कल्पना करने लगा। उसको जल्दी ही बचाव का कोई उपाय सोचना था।

उसने बर्तन के सारे टुकड़े बटोरे और उनको दो पत्थरों के बीच मे रख कर बारीक पीस डाला। फिर केले के पत्ते के छोटे-छोटे टुकड़ों में थोड़ा-थोड़ा पाउडर रख कर पुड़िया बनाई और वापस शहर गया। वह सड़क पर घूमता हुआ पुकारने लगा, "पिस्सूमार दवा खरीदो, पिस्सूमार दवा!"

बस्तीवालों ने सोचा कि भगवान ने उनकी सुन ली है और इस दवा वाले को भेज दिया है। देखते ही देखते लोगों ने जुआन को घेर लिया। सारी पुड़िया बिक गई।

वर्तन की बजाय जुआन थैले भर रुपये लेकर लौटा। उसकी मां खुश हो गई। लेकिन उसको अभी भी चावल पकाने के लिए बर्तन की जरूरत थी। दूसरे दिन उसने जुआन को फिर बस्ती में भेजा।

जुआन हैरान रह गया जब बस्ती मे घुसते ही औरतें और मर्द उस पर टूट पड़े। वे सभी बड़े गुस्से में थे। कोई गाली दे रहा था, कोई घूंसा दिखा रहा था।

वे चिल्लाए, "तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े कर डालेंगे। बदमाश! तुमने हमको पिस्सू मारक दवा नहीं, बल्कि मिट्टी बेची थी। बेईमान, अगर हमको तुम यह नहीं बता पाए कि दवा का असर क्यों नहीं पड़ा तो तुम आज कुत्ते की मौत मरोगे। अगर तुम्हारी बात पर विश्वास नहीं हुआ हमें, तो भगवान ही तुम्हें बचाए।"

जुआन ने मीठी आवाज में कहा, "पहले तो यह बताइए कि आपने उस दवा का इस्तेमाल किस तरह किया?"

"पिस्सू पर छिड़का, और क्या करते?" पड़ोसियों ने कहा।

"आह, यही डर तो था मुझको। किसी के पास थोड़ा-सा पाउडर बचा है?" जुआन ने पूछा।

किसी के भी पास पाउडर नहीं बचा था।

"यह तो बुरा हुआ, क्योंकि मैं आपको दिखा सकता था कि पिस्सुओं को कैसे मारना चाहिए। पहले पिस्सू को पकड़िए, फिर उसकी आंखें खोलिए। बड़ा आसान है," जुआन ने कहा।

"हा... हा... हा... हा...," एक आदमी ज़ोर-ज़ोर से हंसने लगा। "पिस्सू को तो देखना भी मुश्किल है, और यह हज़रत उसको पकड़ कर उसकी आंखें खोलने को कहते हैं हा... हा... हा...।"

जुआन आगे बोलने की कोशिश करता रहा, लेकिन इतना ज्यादा शोर मचा कि वह बोल नहीं सका।

एक बुढ़िया ने कहा, "जुआन, एक बार सच क्यों नहीं बोलते?"

अपनी छोटी-सी जिंदगी में पहली बार जुआन को अपने बचाव का रास्ता नहीं दिखाई दिया।

कुछ आदमी तो उसको पीटने के लिए आगे बढ़े लेकिन उस बुढ़िया ने उनको रोक दिया। "इस बेवकूफ को इस बार जाने दो। लेकिन, सुनो लड़के, फिर से कोई चाल चली, तो ईश्वर बचाए तुमको!"

"चलो, इसकी मां को सारी बात बताएं," किसी ने कहा और भीड़ तितर-बितर हो गई। जुआन वहीं खड़ा-खड़ा अपनी मां के क्रोध की कल्पना करता रहा।

—फिलिपीन्स

देवी से दिल्लगी

गोपाल के पेट में बड़ा सख्त दर्द हो रहा था। लगता था पेट के अंदर कोई युद्ध छिड़ा हो। यह उसके साथ अक्सर ही होता था। वह खाने का शौकीन था, खासकर मिठाइयों का। वह अक्सर बहुत ज्यादा खा जाता और फिर यही नतीजा होता। जब तक दर्द रहता, गोपाल को बहुत पछतावा होता और वह कम खाने की कसमें खाता। लेकिन ज्यों ही वह ठीक हो जाता, वह सब-कुछ भुला देता।

इस बार जैसा दर्द तो पहले कभी नहीं हुआ था। "जरूर मछली खाने के कारण दर्द हुआ होगा," गोपाल ने सोचा। "वह ताज़ी नहीं लगती थी।"

गोपाल की पत्नी ने कहा, "तुमसे कहा किसने था खाने को? और वह भी आठ बड़े-बड़े टुकड़े। ताज़ा हो या बासी, इतना खा कर तो कोई भी बीमार हो जाता।"

"बेवकूफी की बात मत करो", गोपाल ने कहा। "कितनी ही बार मैंने इससे भी ज्यादा खाया है। मेरा ख्याल है मछली से नहीं, रसगुल्ले खाने से दर्द हुआ है।"

"हां, वह भी तो तीन दर्जन निगल गए थे।"

"ओह...आह...वहां खड़ी-खड़ी बहस मत करो," गोपाल ने कराह कर कहा। "डाभ (हरा नारियल) का पानी ला दो। बदहज़मी के लिए अच्छा होता है।"

लेकिन डाभ के पानी से भी दर्द कम नहीं हुआ। गोपाल ने विनती की, "मां काली, दया करो। मुझे इस बार चंगा कर दो तो मै एक भैंस की बलि चढ़ाऊंगा।"

गोपाल की पत्नी ने कहा, "देवी से ऐसी मन्नत नहीं माननी चाहिए, अगर उसे पूरा करने का इरादा न हो।"

गोपाल ने कुछ नाराज़ होकर कहा, "बेशक में अपना वायदा पूरा करूंगा। मुझको ठीक तो हो जाने दो फिर मैं सब से भारी-भरकम भैस ढूंढकर काली के मंदिर में ले जाऊंगा।"

पत्नी ने यकायक पूछा, "तुम्हारा दर्द कुछ कम हो गया? तुम्हारा चेहरा अब इतना पीला नहीं है जितना आधा घंटा पहले था।"

"तुम ठीक कहती हो। दर्द अब उतना ज्यादा नहीं है।" गोपाल ने उत्तर दिया।
"मां काली ने तुम्हारी विनती सुन ली। अब भैंस का वायदा मत भूल जाना।" पत्नी ने कहा।

तब तक गोपाल का दर्द और भी कम हो गया था। खिड़की से बाहर देख कर उसने कहा, "मां काली, तुम तो जानती हो। दिन पर दिन मंहगाई बढ़ती जा रही है।" फिर कुछ

रुक कर बोला, "मंहगाई के इन दिनों में भैंस तो बहुत मंहगी पड़ेगी। बकरी से काम नहीं चलेगा? अच्छी, मोटी-ताजी बकरी। मैं ठीक होते ही तुम्हारे लिए ले आऊंगा। वायदा करता हूं।"

दोपहर हो गई। गोपाल का दर्द लगभग जा चुका था। लेकिन उसे कमजोरी लग रही थी, और थोड़ी-सी भूख भी। उसने पत्नी को पुकारा, "तुम मुझे भूखा मारोगी क्या?"

पत्नी ने कहा, "तुम खाने की बात कैसे कर सकते हो? अभी जरा देर पहले तो दर्द से तड़प रहे थे।"

"एक कटोरा चिड़वा दे दो," गोपाल ने गिड़गिड़ा कर कहा। गोपाल की पत्नी रसोई घर की तरफ़ गई।

गोपाल ने कहा, "मां काली, क्या यह तुम्हारे लिए उचित है कि मैं तो भूखा रहूं और चिड़वे पर गुजारा करूं और तुम बकरा उड़ाओ? कहते है लालच नहीं करना चाहिए। तो फिर तुमको इसकी मिसाल नहीं पेश करनी चाहिए?"

उसकी पत्नी ने एक कटोरे भर चिड़वा लाकर रख दिया।

गोपाल भुनभुनाया। "बस इतना जरा-सा? थोड़ा और ले आओ।"

"तुम्हारी तबियत सचमुच ठीक है?" पत्नी ने पूछा।

"बिल्कुल। अब मैं सोचता हूं तो लगता है दर्द बहुत हल्का था," गोपाल ने कहा।

"सचमुच? लेकिन तुम जिस तरह मां काली की मन्नतें मना रहे थे.....!"

"अरे, मैं सचमुच थोड़ा ही मन्नतें मना रहा था। तुम विदूषक की पत्नी हो। तुमको मालूम नहीं कि मैं मज़ाक कर रहा था!" गोपाल ने कहा।

उसकी पत्नी ने चकित होकर कहा, "मज़ाक? अपने मजाकों में मां काली का नाम न लो तो अच्छा। क्या तुम देवी को अब कुछ नहीं चढ़ाओगे?"

"भैंस तो नहीं। यह पक्का। बकरी भी नहीं। वह भी बहुत महंगी है। मेरा तो ख्याल है कि मैं मां काली से कहूंगा कि वह खुद ही एक गौरैया पकड़ कर खा ले। थोड़ा दौड़ना-भागना देवी के लिए भी अच्छा होगा।"

गोपाल की पत्नी ने गुस्से से कहा, "तुम सचमुच बेशर्म हो।" और वह कमरे से बाहर चली गई।

गोपाल सो गया, लेकिन जल्दी ही उसके पेट में फिर बड़े ज़ोर का दर्द उठा। पसीना — पसीना होकर वह उठ बैठा, और शिकायत के स्वर में बोला, "तुम मज़ाक भी नहीं

समझती देवी ? क्या तुमने यह समझ लिया कि मैंने बकरी और गौरैया के बारे में गंभीर होकर कहा था? बस मुझे चंगा कर दो और भैंस तुम्हारी!"

—भारत

गुरु सेर, चेला सवा सेर

एक स्कूल का मास्टर अपने आलस के लिए इतना मशहूर था कि कोई भी अपना बच्चा उसके पास नहीं भेजना चाहता था। लेकिन एक दिन एक लड़का पढ़ने आया।

"अच्छी बात है।" मास्टर ने चिढ़कर कहा। उसको यह अंच्छा नहीं लग रहा था कि काम करना पड़ेगा। "तुम मुझसे ही पढ़ना चाहते हो तो जाओ, अपने लिए एक मेज ले आओ।"

"किसलिए?" लड़के ने पूछा।

"उसके ऊपर पान के पत्ते रखना है न, और अपने गुरुदेव की प्रार्थना करनी है। यह कायदा है।"

"हूं।" अपना सर खुजाते हुए, शिष्य ने कहा। "तो मैं घुटनों और पंजों के बल खड़ा हो जाता हूं। मेरी पीठ पर पान के पत्ते रखे जा सकते हैं। इस तरह हम दोनों मेहनत से बच जाएंगे।"

यह सुन कर मास्टर लड़के के चरणों पर गिर पड़ा।

"शाबाश, बेटे! तुमको मुझसे कुछ भी सीखने की ज़रुरत नहीं है। मुझको जो विद्या सबसे अच्छी आती है, वह है काम करने से बचना। और इसमें तो तुम मेरे भी गुरु हो!"

—वियतनाम

यह सच नहीं हो सकता!

एक आदमी को कहानियां सुनने का इतना शौक़ था कि वह अपने घर के सामने से गुजरने वालों को भी कहानियां सुनाने के लिए रोक लेता। लेकिन कहानी सुनने के बाद वह यह ज़रूर कहता, "यह सच नहीं हो सकता।" इसलिए उसको कहानी सुनाना लोग पसंद नहीं करते थे।

एक दिन उसने किचोम से, जो अपनी चतुराई के लिए मशहूर था, कहानी सुनाने को कहा।

"मुझको कहानी सुनाने से कोई आपत्ति नहीं है। लेकिन एक वायदा करना होगा। यह सच नहीं है, मत कहना।"

"मैं वायदा करता हूं।" उस आदमी ने कहा।

"अगर तुमने कहा तो मैं तुम्हारे अनाज के भंडार से एक बोरी गेहूं ले जाऊंगा। मंजूर है?" किचोम ने फिर कहा।

"हां, हां, मंजूर है। तुम शुरू करो अपनी कहानी", उस आदमी ने कहा।

किचोम ने कहानी शुरू की।

"एक बार एक राजा पालकी में जा रहा था। वह पहाड़ी के रास्ते पर पहुंचा तो पता नहीं कहां से आसमान पर एक चील आ गई। वह पालकी के चक्कर लगाने लगी, और साथ ही बोलती जाती, "पीप-पीप...प्र...र-र-र...!" यह देखने के लिए कि क्या है, राजा ने अपना सिर पालकी के बाहर निकाला, और ऊपर देखा।

चील की बीट उसके कपड़ों पर गिरी। लेकिन राजा नाराज़ नहीं हुआ। उसने अपने नौकरों को दूसरे साफ़ कपड़े लाने का हुक्म दिया। कपड़े लाए गए। राजा ने कपड़े बदले और अपनी यात्रा जारी रखी।

लेकिन चील पालकी के चक्कर लगाती उड़ती रही और बोलती रही, "पीप...पीप...प्र-र-र-र...!"

राजा ने फिर अपना सिर बाहर निकाला देखने के लिए। इस बार बीट उसकी तलवार

पर गिरी। फिर भी वह नाराज़ नहीं हुआ। "नई तलवार ले आओ," उसने हुक्म दिया। नई तलवार आ गई, राजा ने कमर में लटकाई और आगे बढ़ा।

जल्दी ही चील फिर उसी प्रकार शोर मचाती आ गई और पालकी के चारों ओर उड़ती रही।

राजा ने फिर अपना सिर पालकी के बाहर निकाला। और इस बार तो बीट राजा के सिर पर गिरी! फिर भी राजा नाराज़ नहीं हुआ। "नया सिर ले आओ," उसने हुक्म दिया।

नया सिर लाया गया। राजा ने तलवार से अपना सिर काट दिया और उसकी जगह, नया सिर लगा लिया, फिर वह आगे बढ़ा।"

जो आदमी कहानी सुन रहा था वह जोर से बोला, "यह सच नहीं हो सकता।"

"अब तो मैं एक बोरी चावल ले जाऊंगा। धन्यवाद!" कोचम ने कहा और चावल की बोरी उठाकर चल दिया।

—जापान

पहेलियां

(उत्तर पृष्ठ 136 पर

1. उसके टांग है, लेकिन जांघ नहीं,
   सर है, पर चेहरा नहीं।

   —फ़िलिपीन्स

2. वह आता है, जाता है,
   वह सिर्फ बहता रहता है।

   —फ़िलिपीन्स

3. आठ पैरों पर नगाड़ा खड़ा है,
   हाथों में दो कैंचियां।
   इधर-उधर इतराता चलता है
   और बराबर बुलबुले उड़ाता है।

   —चीन

4. उसे इस्तेमाल करते हैं और फेंक देते है,
   नहीं इस्तेमाल करते तो नाव के सिरे पर रखते हैं।

   —थाइलैंड

5. वह कौन-सी चीज़ है जो जितना घूमती है,
   उतनी ही बड़ी होती जाती है?

   —कोरिया गणतंत्र

6. लाल लड़की काली लड़की को गुदगुदाती है
   और काली लड़की सफ़ेद लड़की को
   सफ़ेद लड़की हंसती है, "ब्रर्ब-ब्रर्ब-ब्रर्ब",
   (लाल लड़की = आग, काली लड़की = बर्तन,
   सफेद लड़की = चावल)

   —मलेशिया

7. ऊपरवाले दांतों ने नीचे वाले दांतों से
   क्या कहा?

   —पपुआ न्यू गिनी

8. बीसों का सिर काट लिया,
न मारा, ना खून किया।

—भारत

9. गोरी स्त्री, जो हर समय आंसू गिराती रहती है।

—श्रीलंका

10. जब बच्चा होता है तो खाने के काम आता है,
बूढ़ा होता है तो सोने के काम आता है।

—बर्मा

11. उनका जन्म ऊंची पहाड़ी पर होता है,
उनकी चमड़ी खुरदुरी और हाथों पर कांटे होते हैं
पूरे साल हरी रहती है,
और सिर तेज़ हवा में सीधे तने रहते हैं

—चीन

12. चटाई जो लपेटी नहीं जा सकती।

—श्रीलंका

13. बहुत-सी आंखोवाला फल।

—इंडोनेशिया

14. खींचा, घुमाया, रगड़ा
फूल खिला, लेकिन जल्दी मुरझा गया

—श्रीलं

15. सकरी सड़क की छोर पर तालाब।

—जापान
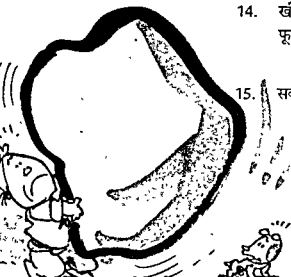
नकली भिक्षु

एक बहुत गरीब आदमी था जिसका नाम था टोंग। एक दिन उसको एक और आदमी मिला। उसका भी नाम टोंग था। बड़े टोंग और छोटे टोंग ने दोस्त बनने और रोज़ी कमाने में एक दूसरे की मदद करने का फ़ैसला किया। छोटे टोंग ने बड़े टोंग से कहा कि तुम भिक्षु बन जाओ। उसने पहले तो आनाकानी की, लेकिन जब छोटे टोंग ने समझाया कि यह तो रोज़ी कमाने का तरीका होगा तो वह राज़ी हो गया। उसने अपना सिर मुंडा लिया, गेरुआ चोगा पहन लिया, और नकली भिक्षु बन कर एक सूने मंदिर में रहने लगा।

इस बीच छोटा टोंग गांवों में जाकर गाय-भैंसे चुरा लाया और उन्हें जंगल में छिपा दिया। फिर भिक्षु को जा कर बता दिया कि उसने क्या किया है। उसके बाद उसने गांववालों को बताया कि एक भिक्षु है जो भूत, भविष्य, वर्तमान सब-कुछ बता सकता

(उत्तर पृष्ठ 134-135 के)

1 कुकुरमुत्ता, 2. पतंग को उड़ाती हवा, 3 केकड़ा, 4 लंगर, 5 अफ़वाह, 6 चावल का पकना, 7. भोजन के समय मिलना, 8. नाखून, 9 मोमबत्ती, 10. बांस, 11 चीड़ का पेड़, 12 आम सड़क, 13 अनन्नास, 14 माचिस की तीली 15 कढ़ाई।
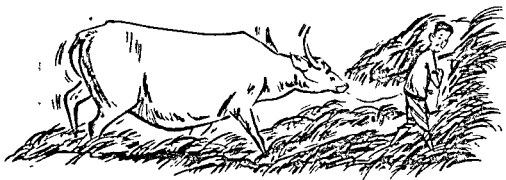
है। बेचारे गांव वाले अपने खोए मवेशियों का पता लगाने के लिए उस नकली भिक्षु के पास पहुंचे। भिक्षु बने बड़े टोंग ने स्लेट पर कुछ लाइनें खींची और उनको बता दिया कि खोए हुए मवेशी कहां मिलेंगे। वे बहुत खुश हुए और भिक्षु को ढेर सारे उपहार दिए।

एक दिन उस नगर के प्रमुख की हीरे की अंगूठी खो गई। उसने अपने नौकर को भिक्षु के पास उसका अता-पता पूछने को भेजा। अब तो टोंग की सिट्टी-पिट्टी गुम। सोचा, बेकार इस झंझट में पड़ा। नगर प्रमुख का मामला है। कहीं लेने के देने न पड जाएं। उसके मुंह से निकल पड़ा, "तुम्हारी खैर नहीं है टोंग। अब तुम्हे कोई नहीं बचा सकता।" संयोग की बात, नगर प्रमुख के उस सेवक का नाम भी टोंग था जो भिक्षु के पास हीरे की अंगूठी का अता-पता पूछने आया था। भिक्षु की बात सुन कर सेवक टोंग का चेहरा डर के मारे पीला पड़ गया। उसने भिक्षु के पैर पकड़ लिए और रोने लगा। उसने कबूल किया कि नगर प्रमुख की अंगूठी उसी ने चुराई है। उसने बता दिया कि वह कहां रखी है, और गिड़गिड़ाया, "मेरी जान बचाइए।"

नकली भिक्षु मन ही मन बहुत खुश हुआ कि तक़दीर ने फिर उसका साथ दिया। उसने जाकर नगर प्रमुख को बताया कि अंगूठी कहां पाई जा सकती है, लेकिन उसने चोर का नाम बताने से इंकार कर दिया। उसने कहा भिक्षुओं को दयालु होना चाहिए। नगर प्रमुख ने कुछ नहीं कहा।

अंगूठी मिल गई तो नगर प्रमुख ने भिक्षु टोंग को भरपेट खाना खिलाया और बहुत से कीमती उपहार दिए। भिक्षु इतना खुश था कि बहुत जल्दी खाना खा गया। नतीजा यह हुआ कि उसके गले में मुर्गी की एक हड्डी अटक गई। नगर प्रमुख वहीं एक खंभे से टेक लगा कर खड़ा था, इसलिए उसे मुंह से निकालने में भिक्षु को शर्म आ रही थी। वह अपना सिर ऊपर नीचे हिलाने लगा। नगर प्रमुख ने सोचा कि वह उसको बुला रहा है।

वह भिक्षु की तरफ बढ़ा ही था कि खंभे पर बिजली गिरी। बिजली की कड़क से भिक्षु इतना डर गया कि उसने हड्डी निगल ली और बेहोश हो गया। होश आने पर उसने नगर प्रमुख को बताया कि उसको पता चल गया था कि खंभे पर बिजली गिरनेवाली है। इसी कारण वह इशारा कर रहा था कि वहां से हट जाइए।

नगर प्रमुख इतना खुश हुआ कि उसने भिक्षु को राजकीय मंदिर में आकर रहने को कहा।

एक दिन महल के तालाब में एक नाग घुस गया। उस तालाब से पानी लेने की किसी की हिम्मत नहीं होती थी। नगर प्रमुख ने टोंग की मदद मांगी। लेकिन वह खुद डरता था। उसने पानी में झांक कर देखना चाहा कि नाग कितना बड़ा है। दुर्भाग्य से वह फिसल कर पानी में गिर पड़ा। डर और घबराहट से जो हाथ लगा, उसे ही उसने सहारे के लिए पकड़ लिया। जब उसके होश संभले तो क्या देखता है कि उसने नाग की गर्दन पकड़ रखी है।

टोंग की बहादुरी की खबर दूर-दूर तक फैल गई। कुछ ही दिन बाद राज्य पर दुश्मनों

ने हमला कर दिया। राज प्रमुख ने टोंग से कहा कि वह सेना के आगे-आगे चले। उसको तो घोड़े पर चढ़ना भी नहीं आता था। छोटे टोंग ने उसके पैरों को घोड़े के पेट के नीचे बांध दिया ताकि वह नीचे न गिर पड़े। लेकिन वह सरक कर नीचे लटक गया। उसके पैर, जो बंधे थे, ऊपर की ओर उठे हुए थे। दुश्मनों ने इस तरीके से घोड़े की सवारी करते किसी को नहीं देखा था। उन्होंने सोचा कि यह कोई जादूगर है जो उनको खत्म करने के लिए कोई जादू कर रहा है। सेना तितर-बितर हो गई और सिपाही अलग-अलग दिशाओं में भाग खड़े हुए। टोंग की विजय हुई। उसको घोड़े पर सीधा

कर के बिठाया गया तो उसने कहा कि इस तरह सिर नीचा कर के उल्टा लटक कर वह दुश्मनों के काले जादू से बच रहा था, और उन पर अपना काला जादू चला रहा था। इस विजय से टोंग का नाम दूर-दूर तक फैल गया।

—थाइलैंड

जमी हुई बातचीत

एक बार उत्तर का एक यात्री शेखी से बता रहा था कि उसकी तरफ ज्यादा ठंड पड़ती है।

"जाड़े में तो हम खाना भी नहीं खा सकते क्योंकि बर्फ़ के कारण चम्मच मेज़ पर चिपक जाते हैं। वे जम जाते है।" उसने कहा।

"बाप रे!"

"और दूसरों की तो बात भी नहीं सुनाई देती। क्योंकि बोले गए शब्द हमारे कानों तक पहुंचने के पहले जम कर दीवारों पर चिपक जाते हैं।"

"तब तो तुम्हारे यहां बसंत में बहुत ही शोरगुल होता होगा क्योंकि जमे हुए शब्द पिघल जाते होंगे।" उसका साथी बोला।

—जापान

नया-चोगा

चीन के क्रिंग वंश के राज्य में देहात के एक मजिस्ट्रेट ने दर्जी से एक नया सरकारी चोगा सी देने को कहा।

दर्जी ने पूछा, "पहले यह बताइए कि आप किस प्रकार के अफ़सर है। आप अभी-अभी अफ़सर बने हैं, या कोई नया पद संभाल रहे हैं या बहुत समय से अफ़सर रहे हैं।"

अफ़सर ने हैरानी से पूछा, "नये चोगे का इन सब बातों से क्या मतलब?"

दर्जी ने जवाब दिया, "ओह, इसी पर तो सब-कुछ निर्भर करता है। अगर आप अभी-अभी अफ़सर बने हैं तो कचहरी में सारे वक्त खड़े रहना पड़ेगा। इस हालत में चोगे की सामने की और पीछे की लंबाई बराबर होनी चाहिए। नये-नये अफ़सर बने हैं तो लंबाई सामने से ज्यादा और पीछे से कम होनी चाहिए क्योंकि नये अफ़सर ज्यादा घमंडी होते हैं। वे सिर ऊंचा उठाए रहते हैं और छाती फुलाए रहते हैं। जो पुराने अफ़सर हैं उनका चोगा अलग किस्म का होता है। उनको इतनी बार अपने उच्चाधिकारियों से डांट पड़ चुकी होती है कि उनके सामने बराबर झुकते-झुकते उनके कंधे झुक जाते हैं और गर्दन लटक जाती है। इसीलिए उनको ऐसे चोगे की जरूरत होती है जो सामने कम और पीछे ज्यादा लंबा हो। मुझे नहीं मालूम कि आप किस श्रेणी के अफ़सर है। बिना यह जाने आपके लिए चोगा कैसे बना सकता हूं?"

—चीन

बदकिस्मत क्लॉडपोल

क्लॉडपोल को दो जगहों से न्योता आया था—एक नदी के उस किनारे, एक इस किनारे। उस किनारे मांस पकाया जानेवाला था। दूसरे किनारे वाली दावत में मछली।

"मैं दावत में जा रहा हूं" क्लॉडपोल ने बड़ी शेखी से अपनी पत्नी से कहा।

पत्नी ने पूछा, "जाने से पहले कुछ खाओगे नहीं?"

"नहीं। तुम खा लो। वह ठंडा भात तुम्हें ही मुबारक हो।" और वह बड़ी ऐंठ के साथ नाव की तरफ चला। "पहले नदी के बहाव की तरफ चलता हूं। खाना वहां ज्यादा स्वादिष्ट होता है। उसके बाद इस तरफ दावत में जाऊंगा। वहां खाना कम स्वादिष्ट होगा।" उसने अपनी तोंद पर हाथ मलते हुए, मन ही मन कहा। खाने के बारे में सोच कर उसके मुंह में पानी भर आया।

जब वह नाव खोलने लगा तो देखा उस तरफ का बहाव खत्म हो गया है। पानी छिछला हो गया था। वह बहाव की उल्टी तरफ जा रहा था, इसलिए नाव खेने मे उसको बड़ी मुश्किल पड़ी। वह दावत मे पहुंचा तो उसकी सांस फूल रही थी।

वह पहुंचा तो दूसरे मेहमान वापस जा रहे थे। दावत खत्म हो चुकी थी। घर का मालिक जल्दी-जल्दी क्लॉडपोल की ओर आया, और बहुत क्षमा मांगते हुए बोला, "ओह, क्लॉडपोल, मुझको क्षमा करो। हमने जितने लोगों को बुलाया था उससे ज्यादा आ गए। सारा खाना खत्म हो गया।" वह बार-बार क्षमा मांगता रहा और अफ़सोस करता रहा।

दुखी मन से क्लॉडपोल ने कहा, "कोई बात नहीं। फिर किसी दिन सही। अब मैं घर जाता हूं।"

अब क्लॉडपोल नदी के बहाव की दूसरी दिशा में चला। "मेरी किस्मत खराब है। खैर, दूसरी दावत में चलता हूं। मछली भी स्वादिष्ट होती है।" फिर वह अपनी सारी ताकत लगा कर जल्दी-जल्दी नाव खेने लगा।

उस समय नदी के बहाव की दिशा बदल गई थी। उसको फिर से बहाव की उल्टी

दिशा में खेना पड़ रहा था। भूख के मारे उसके पेट में चूहे कूद रहे थे। इस हालत में बहाव की उल्टी तरफ नाव खेना बहुत कठिन था। उसमें जैसे कोई ताकत ही नहीं रह गई थी।

जैसे-तैसे वह दावत वाले घर में पहुंचा। नाव से उतर कर वह उस घर की तरफ भागा। "लगता है इस बार किस्मत मेरे साथ है। लगता है मेहमान अभी हैं। "खुश-खुश उसने सोचा।

पर घर की सीढ़ियों तक पहुंचते ही उसने सुना कि मेहमान बिदा ले रहे हैं। जरा-सी देर मे ही वे उतरने लगे। क्लॉडपोल बेचारा बहुत निराश हुआ।

मेहमानों के साथ घर का मालिक भी बाहर आया तो क्लॉडपोल को सीढ़ियों के पास खोया-सा खड़ा पाया। वह उसकी तरफ गया और बोला, "मुझको बहुत अफ़सोस है, क्लॉडपोल। दावत खत्म हो गई। बहुत से लोग आ गए थे। सारा खाना खत्म हो गया।"

दुखी क्लॉडपोल ने पूछा, "थोड़ा-सा भी नहीं बचा?" उसको उतनी ज्यादा भूख

लगी थी कि उसने शर्म छोड़ कर पूछ ही लिया। भूख उससे सही नहीं जा रही थी।

"बर्तन जैसे चाट लिए गए हैं। अफ़सोस के साथ सिर हिलाते हुए घर के मालिक ने कहा।

कमजोर आवाज में क्लॉडपोल बोला, "कोई बात नहीं। मेरा भाग्य ही खराब है।"

क्लॉडपोल घर पहुंचा। वह थककर चूर हो गया था। कमजोरी के कारण गिरा जा रहा था।

उसने अपनी पत्नी से पूछा, "ठंडा भात बचा है?" थकान और भूख से बेहोश की सी हालत हो रही थी उसकी।

उसकी पत्नी ने ताना दिया, "मेरा ख्याल था तुम बढ़िया-बढ़िया चीजें खाकर आए हो।"

"हां, सुनने में बहुत बढ़िया था। लेकिन मैंने तो सिर्फ़ हवा खाई। जो भी हो, प्रिये, तुम्हारे जैसा खाना कोई नहीं बना सकता।"

उसकी पत्नी ठंडा भात और सुखाई नमकीन मछली रसोईघर से लाई तो मुस्करा रही थी।

—मलेशिया

वे तीनों क्यों रोए थे?

एक बार एक बुढ़िया को उसके बेटे का पत्र मिला जो कहीं बहुत दूर रहता था। उसको पढ़ना नहीं आता था। वह अपने घर के सामने प्रतीक्षा करती रही कि कोई मिल जाए तो पत्र पढ़ कर उसको सुना दे।

आखिर एक सैनिक आया। उसने पत्र देखा तो उसकी आंखों में आंसू भर आए और वह फूट-फूट कर रोने लगा।

बुढ़िया ने घबरा कर पूछा, "मेरे बेटे को कुछ हो गया क्या?"

लेकिन सैनिक ने जवाब नहीं दिया। बस, रोता ही रहा।

बेचारी बुढ़िया ने सोचा कि उसके बेटे पर कोई भयंकर मुसीबत आ गई है। वह भी रोने लगी।

कुछ देर बाद एक बिसाती आया। उसने उन दोनों को रोते देखा तो वह भी उनके साथ रोने लगा।

फिर एक और आदमी आया। उसने पूछा कि मामला क्या है?

पहले बिसाती बोला, "साल भर पहले मैं मिट्टी के कुछ बर्तन बेचने निकला था। मेरी किस्मत खराब थी। सारे बर्तन टूट गए। मैं तब रोना चाहता था लेकिन मुझे समय नहीं मिला क्योंकि मैं अपने नुकसान को पूरा करने में लगा था। इन दोनों को रोते देखा तो मुझे याद आया कि मैं तब से रोया ही नहीं। मैंने सोचा चलो अभी रो लेता हूं। इसीलिए मैं रो रहा था।"

बुढ़िया ने कहा, "मुझे मेरे बेटे का पत्र मिला था। मुझे पढ़ना नहीं आता। मैंने इस सैनिक से पढ़ने को कहा और वह पत्र देखते ही रोने लगा। पत्र में जरूर कोई बुरी खबर लिखी है। यह सोचकर मैं रोने लगी।"

आखिरकार सैनिक बोला। उसने कहा, "सच तो यह है कि बचपन में मैंने कुछ पढ़ाई नहीं की इसलिए इस पत्र को मैं पढ़ नहीं सकता। मुझे इतनी शर्म आई कि मैं रोने लगा।"

—जापान

अच्छे पड़ोसी

पुराने जमाने की बात है। एक किसान खेत जोत रहा था कि जमीन में गड़े पेड़ के एक ठूंठ से टकरा कर उसका हल टूट गया।

"अब मैं क्या करूं?" किसान ने सोचा, "मैं अपने पड़ोसी से हल मांग कर ले आता हूं।"

वह साथ वाले खेत की तरफ जाते-जाते सोच रहा था, "पड़ोसी बड़ा सख्त आदमी है। मैं उसे बताऊंगा कि मेरा हल कैसे टूटा तो वह फौरन कहेगा, देख कर काम क्यों नहीं करते? तुम्हें ज्यादा सावधान रहना चाहिए।" तब मै जवाब दूंगा, "यह तो किसी के साथ भी हो सकता है। तब वह कहेगा, "हल महंगे हैं, और मरम्मत में भी काफी पैसे लगते है।"

मैं कहूंगा, "यह सच है, लेकिन इस इलाके में ऐसा कोई नहीं है जो मुझसे ज्यादा अच्छी तरह अपने हल और औज़ारों की देखभाल करता हो।" वह कहेगा, "यह तो मैं नहीं जानता। लेकिन मुझे कैसे विश्वास होगा कि अगर मैने तुम्हें हल दे दिया तो मेरे हल के साथ भी ऐसा ही नहीं होगा?"

"तब मैं कहूंगा..."

उसी समय किसान ने अपने पड़ोसी को सायबान मे काम करते देखा।

पड़ोसी ने उसकी ओर देख कर पूछा, "कहो भाई, क्या बात है? कुछ चाहिए क्या?"

"हां, यह कहने आया था कि तुम्हारा हल तुम्हे ही मुबारक हो।" यह कह कर किसान लौट गया।

—आस्ट्रेलिया
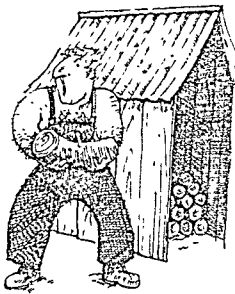
निमंत्रण

एक बार एक गरीब बूढ़े को एक अमीर आदमी ने दावत दी। गरीब आदमी अपने फटे-पुराने कपड़े पहन कर गया था। किसी ने उसकी ओर देखा तक नहीं। उसको सिर्फ बचा-खुचा खाने को दिया गया।

एक सप्ताह बाद बूढ़े को उसी घर से फिर खाने का बुलावा आया। उसने किसी से बढ़िया कपड़े उधार मांगे और उन्हें पहनकर दावत में गया।

वह पहुंचा तो सब मेहमानों ने उसकी बड़ी आवभगत की मानों वह कोई बहुत बड़ा आदमी हो। भोजन के समय उसको सबसे ज्यादा सम्मान की जगह बैठाया गया।

बूढ़े ने थोड़ा चावल लेकर अपने कोट की एक बांह में डाल दिया। दूसरी बांह मे भुनी मुर्गी का बड़ा टुकड़ा डाला। फिर मेहमानों की तरफ देखे बिना उसने कोट की फूली हुई बाहों से कहा, "खाओ। मुझको जो इज़्ज़त आज यहां मिल रही है वह तुम्हारे कारण।"

—ईरान

감초
당귀..
구기자...

लालच बुरी बला है

एक वैद्य था। वह मशहूर था क्योंकि उसकी दवाएं अचूक होती थीं। लेकिन वह अपने लालच के कारण बदनाम भी था।

एक बार उसने एक बच्चे को, जिसे कोई कठिन बीमारी थी, बिल्कुल ठीक कर दिया। उसकी मां ने अपनी कृयज्ञता जताने के लिए रेशम का एक बटुआ वैद्य को भेंट में दिया। उसने कहा, "वैद्य जी, यह बटुआ मैंने खुद बनाया है। कृपया इसे स्वीकार करें।"

सिर हिलाते हुए रुखाई से वैद्य बोला, "मै कोई चीज़ नहीं लेता। सिर्फ़ रुपया लेता हूं। नगद रुपया।"

इस अपमान से स्त्री के दिल को बड़ी चोट लगी। उसने पूछा, "कितना देना है आपको?"

वैद्य ने कहा, "पांच न्यांग।"*

बिना कुछ और कहे स्त्री ने रेशम के बटुए से पांच न्यांग निकाल कर वैद्य को दे दिए। बटुआ और उसमें रखे दस और न्यांग लेकर वह चली गई।

वैद्य को जहां पंद्रह न्यांग मिलते, अब केवल पांच ही मिले।

—कोरिया गणतंत्र

---

* न्यांग : कोरिया का पुराना सिक्का।

अच्छा शिष्य

एक पति-पत्नी थे। उनका अभी-अभी विवाह हुआ था। पति होशियार था लेकिन उसकी पत्नी मूर्ख भी थी और फूहड़ भी। वह जिस चीज को हाथ लगाती वह टूट जाती। एक दिन वह मिट्टी के दो मर्तबान (जार) ले आयी और पति को दिखाया। उसने सोचा था वह खुश होगा।

पति ने सोचा, "यह अच्छा मौका है इसको सबक़ सिखाने का। अफ़सोस, ये नये हैं। लेकिन, कोई बात नहीं। हर चीज़ को तोड़ देने की इसकी आदत चली जाएगी।" उसने तुरंत मर्तबानों को दो लात मारी और वे दोनों चकनाचूर हो गए।

उसकी पत्नी ने हैरानी से चिल्लाकर कहा, "यह क्या किया तुमने? पागल हो गए हो क्या?"

"मैंने तोड़ दिया ताकि इन्हें तोड़ने की तकलीफ़ तुम्हें न उठानी पड़े," पति ने कहा।

कुछ समय बाद एक दिन पति ने पत्नी से बाज़ार जाकर एक मछली खरीद लाने को कहा। बाजार से लौट कर पत्नी ने दिखाया कि वह क्या खरीद कर लाई है। फिर वह जल्दी-जल्दी घर के पिछवाड़े वाले तालाब पर गई और मछली को उसमें फेंक दिया।

नाराज़ होकर पति चिल्लाया, "अरे अभागी औरत, यह तूने क्या किया?"

"तुमने ही तो यह सिखाया है। तुम बाद में मछली को छोड़ ही देते। तुमको कष्ट से बचाने के लिए मैंने खुद वह काम कर दिया।" भोलेपन से पत्नी बोली।

कुछ दिनों बाद उनको खबर मिली कि उनका एक बूढ़ा रिश्तेदार जिसे उन्होंने बहुत समय से नहीं ,देखा था, आने वाला है। वह बूढ़ा बड़ा आदमी था।

पति ने पूछा, "बेवकूफ औरत, तू जानती भी है कि बड़े-बूढ़ों से और बड़े आदमियों से किस तरह बोला जाता है?"

"नहीं, सिखा दो।" पत्नी ने कहा।

"इन लोगों से बहुत नम्रता और विनय के साथ बातचीत करनी चाहिए। जब सवाल पूछा जाए तभी बोलो। अगर वह तुम्हारे परिवार की खैरियत पूछें तो तुम उनके परिवार

की खैरियत पूछो। मतलब यह कि नम्रता का जवाब और अधिक नम्रता से दो। जब वह आएंगे तो मैं घर में न होने का बहाना करूंगा ताकि आधा घंटा देर तक अकेली तुम उनसे बातें कर सको। लेकिन होशियार। मैं पर्दे के पीछे छिपा तुम्हारी एक-एक बात सुनता रहूंगा।"

आखिरकार वह सम्मानित अतिथि आ पहुंचे। और उनकी नम्र बातचीत इस प्रकार हुई—

"तुमसे मिलकर मैं बहुत खुश हुई, दादाजी। आपको पिछली बार जैसा देखा था उससे तो आप कई फुट बढ़ गए हैं। मैंने आपको देखा था जब आप छोटे-से थे, मेरे घुटने तक।"

बूढ़े ने फिर पूछा, "तुम्हारे दादा-दादी कैसे हैं? वे मेरे अच्छे दोस्त थे।"

"वे अच्छी तरह हैं। आपके बुजुर्ग लोग कैसे हैं? वे मेरे बचपन के दोस्त थे।"

बूढ़े ने सोचा कि वह मूर्ख औरत उनको बेवकूफ़ बना रही है। उसने गुस्से से पूछा, "तुम्हारा पति कहां है? उसे फ़ौरन बुलाओ यहां।"

"वह तो यहीं हैं। पर्दे के पीछे छिपे सुन रहे हैं कि उन्होंने जैसा सिखाया था मैं वैसा ही बोल रही हूं या नहीं।" पत्नी ने भोलेपन से जवाब दिया।

—वियतनाम

समझदार लड़का

छोटा तारो स्कूल से घर आया तो उसने अपने पिता से पूछा, "बापू अगर मुझे गणित में सौ में से सौ नम्बर मिलें तो क्या करोगे?"

पिता ने कहा, "वाह, सौ में से सौ! मैं तो बेहोश हो जाऊंगा।"

"यही तो मैं नहीं चाहता था। मैं नहीं चाहता था कि आप बेहोश हो जाएं इसीलिए मैं सौ में से सिर्फ़ पचास नम्बर लाया।"

—जापान

मुल्ला दो पियाज़ा और झगड़ालू पड़ोसी

मुल्ला दो पियाजा अपनी हाज़िर-जवाबी के लिए मशहूर था। उसका पड़ोसी बहुत झगड़ालू था जिसके पास एक दुष्ट कुत्ता था जो बिना वजह सारे समय भौंकता रहता था। खासकर आधी रात के बाद वह रह-रह कर भौंकने लगता। मुल्ला को उससे बड़ी चिढ़ थी क्योंकि दिन भर के काम के बाद वह चैन की नींद सोना चाहता था।

एक बार वह बड़ी रात गए घर लौटा। वह इतना थक गया था कि तुरंत ही सोने चला गया। आधी रात को पड़ोसी का कुत्ता जोर-जोर से भौंकने लगा तो मुल्ला की नींद टूट गई। कुछ देर तक तो उसने अपना गुस्सा रोकने की कोशिश की। लेकिन जब कुत्ते का भौंकना सहा नहीं गया तो वह गुस्से मे उठा। अपनी छड़ी उठा कर सीधा कुत्ते के पास जाकर उसको बुरी तरह मारने लगा। पहली छड़ी पड़ने पर कुत्ता अपनी पूरी ताक़त से भौंका, फिर कूदता, भौंकता, अपने आप को मार से बचाने की कोशिश करने लगा।

हल्ला-गुल्ला सुनकर कुत्ते का मालिक बाहर आ गया। उसंने जो कुछ देखा उससे आग बबूला हो कर वह चिल्लाया, "बंद करो, मुल्ला। तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मेरे कुत्ते को मारने की? अगर फिर मारा तो, खुदा क़सम, तुमको नहीं छोड़ूंगा।"

"क्या कर लोगे?" मुल्ला ने पूछा।

"तुमने उसकी पीठ पर मारा तो तुम्हारी हड्डियां तोड़ दूंगा। उसकी टांगों पर मारा तो तुम्हारी टांगे तोड़ दूंगा। समझ गए?" उसके आंखे तरेर कर मुल्ला को देखा।

एक क्षण सोच कर मुल्ला ने बड़े भोलेपन से कहा, "हां, समझ गया। अगर यह बात है तो मैं सिर्फ इसकी दुम पर मारुंगा।"

—पाकिस्तान

कहावतें
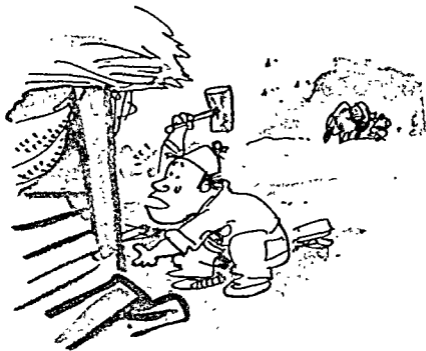
□ गाय के जाने के बाद गोशाला की मरम्मत।

—कोरिया गणतंत्र

□ बराबर घिसने से लोहा भी सुई बन जाता है।

—चीन

□ पहाड़ पर चढ़े बिना पता नहीं चलता कि आसमान कितना ऊंचा है। खाई में उतरे बिना पता नहीं चलता कि धरती कितनी ठोस है।

—चीन

□ ठूंठ में फल नहीं लगते, खाली शब्दों की कोई कीमत नहीं होती।

—चीन

□ संग-संग पहाड़ को भी हिलाया जा सकता है। लकड़ियों के गट्ठर से आग की ज्यादा ऊंची लपक निकलती है।

—चीन

□ चिड़िया दिन की बातचीत सुनती है, चूहे रात की।

—कोरिया गणतंत्र

□ अंधे से दही का वर्णन

एक अंधे ने दही के बारे में बहुत सुन रखा था, लेकिन कभी खाया नहीं था। उसने किसी से पूछा कि दही कैसा होता है?

"सफ़ेद होता है।" उसने कहा। अब बेचारा अंधा क्या जाने कि सफ़ेद कैसा होता है। उसने पूछा, "सफ़ेद कैसा होता है?"

"सारस जैसा।" जवाब मिला।

"और सारस कैसा होता है?" अंधे ने सवाल किया।

उस आदमी ने अपनी कोहनी पर से और हथेली से अपनी बांह को मोड़ा। उसने अंधे से अपनी बांह को टटोलने को कहा। फिर बोला, "ऐसा होता है सारस।"

उसकी मुड़ी-बांह को टटोलने के बाद अंधे ने लंबी सांस लेकर कहा, "दही खाना आसान नहीं होगा।"

(किसी अज्ञात वस्तु को एक दूसरी अज्ञात वस्तु द्वारा समझाने को उदाहरण इस कहावत में है।)

—श्रीलंका

□ सब से सख़्त चट्टान भी पानी में घिस जाती है।

—फ़िलीपीन्स

□ मीठा रस चूसने के बाद गन्ना फेक दिया जाता है।
(स्वार्थ से भरा व्यवहार। जब तक किसी की या किसी चीज़ की जरूरत है तभी तक उसकी कीमत है। काम होने पर ठुकरा दिया जाता है या फेंक दिया जाता है।)

—इंडोनेशिया

□ मेंढकी को जुकाम?

—भारत
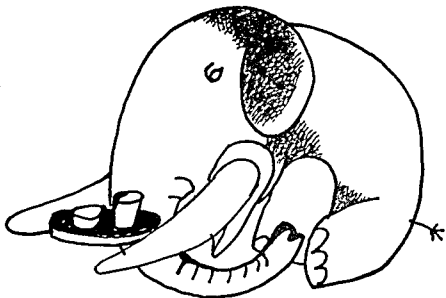
- हाथी के दांत खाने के और दिखाने के और।

—भारत

- छलछल करता पानी गहरा नहीं होता।

—इंडोनेशिया

☐ कलुआ गया मरापना।

कलुआ बुद्धू था, लेकिन था सच्चा और ईमानदार। गांव के मुखिया ने उससे दूसरे गांव के मुखिया के पास जाने को कहा। और यह भी कहा कि पौ फटते ही चल पड़ना। कलुआ चल तो पड़ा लेकिन मुखिया का लिखा संदेश नहीं लाया। इस कहावत का अर्थ है किसी आदेश के शब्दों का पालन करना, बिना अर्थ जाने। यानी बिना अक्ल की वफादारी!

—श्रीलंका

☐ पेठे के चोर को उसके कंधों से पहचानो।

पेठा बहुत बड़ा होता है। उसके ऊपर राख पोती जाती है। जो उसे कंधे पर उठाता है उसके राख लग जाती है।

—श्रीलंका

□ जब कछुए को सज़ा की तौर पर पानी में फेंका जाने लगा तो वह चिल्लाया, "नहीं, नहीं।"

एक कछुए ने कोई अपराध किया। राजा उसको कड़ी से कड़ी सजा देना चाहता था। उसने कछुए को उल्टा करने का हुक्म दिया।

"तब तो बड़ा मज़ा आएगा।" चतुर कछुए ने कहा। "मैं चाहता हूं कि मेरे पेट पर धूप लगे।"

राजा सोच में पड़ गया, "अगर यह कछुए को अच्छा लगता है तो यह सज़ा कैसे हुई?" उसने हुक्म दिया कि कछुए की पीठ पर कोड़े बरसाए जाएं।

"वाह, यह तो बहुत अच्छा होगा।" कछुए ने खुश होकर कहा। "मेरी पीठ और ज्यादा मज़बूत हो जाएगी।"

तब राजा ने अपना इरादा बदल दिया और उसे पानी में फिंकवाने का फैसला किया। कछुआ चिल्लाया, "नहीं, नहीं। कुछ भी करो, लेकिन मुझको पानी में मत फेंको।" तो कछुआ पानी में फेंक दिया गया। राजा खुश था कि आखिर उसने कछुए को सही सज़ा दी। और कछुआ खुश था कि वह अपने घर वापस पहुंच गया।

(थोड़ी-सी चतुराई से कछुए ने अपनी जान बचा ली। इस कहावत का अर्थ है किसी को उसका ऐसा काम बताना जो वह खुद ही करना चाहता था।)

—श्रीलंका

□ चीनी का मिठास हमारी जुबान पर ज्यादा देर नहीं टिकती, लेकिन मीठे शब्दो की मिठास ज़िंदगी भर रहती है।

सभी घाव भर जाते हैं, लेकिन दिल पर लगा घाव नहीं भरता।

—थाइलैंड

□ बंदर के गले में मोती की माला।

—भारत

□ ऐसा कोई हाथी दांत नहीं होता जो चटखा न हो।
(अर्थ—कोई भी चीज निर्दोष नहीं होती।)

—इंडोनेशिया

□ नाच न जाने आंगन टेढा।
(हिंदी मे भी यह कहावत है।)

—बर्मा

□ भैंस के आगे बीन बजाना।
(यह कहावत हिंदी में भी है।)

—बर्मा

□ उंगली में दर्द हो तो सारे बदन पर असर पड़ता है।

—फिलीपीन्स

इस पुस्तक के लेखक और चित्रकार

आभार :
विभिन्न देशो द्वारा भेजी गई कहानियो का पुर्नलेखन.. श्रीमती मोहिनी राव, चयन मे सहयोग सर्वश्री सालेह दाऊद, माला दयाल, सग जे किम, सुश्री क्योको मत्सुओका, सुश्री क्लिामोनी पेरूलुम्बुलाविल, और श्री जुल्फिकार ए तावीश। सम्पादन मे सहयोग मरियम एफ यामामूची।